विषयानुक्रमणिका

यह सर्वविदित है कि संस्कृत में सभी शब्दों के रूप भिन्न २ विभक्ति और वचनों में असमान होते हैं, इस के अतिरिक्त संस्कृत प्रचलित भाषाओं में न होने के कारण इस का ज्ञान व्याकरणज्ञान के विना दुस्साध्य होगया है। इसलिये जितना समय इस भाषा के व्याकरण ज्ञान के लिये दिया जाय उतना ही शीघ्र इस का अभ्यास सुसाध्य होजाता है। आज कल स्कूलों में देखा जाता है कि छात्र First Middle वा Second Middle से संस्कृतव्याकरण का अभ्यास आरम्भ करते हैं, परन्तु उन्हें मैट्रिकुलेशन में उत्तीर्ण होजाने पर भी कोई यथार्थ व्याकरण ज्ञान नहीं होता, इस का कारण यही है कि छात्रों को प्रत्येक श्रेणी में भिन्न २ व्याकरण पुस्तक पढ़ाये जाते हैं, और जो कुछ उन्होंने किसी एक प्रथम श्रेणी में पढ़ लिया होता है वही फिर द्वितीय श्रेणी में दूसरे पुस्तक की शैली अनुसार पढ़ना पड़ता है, अतः उन को केवल कतिपय शब्दों के उच्चारण ज्ञान के अतिरिक्त कुच्छ नहीं अभ्यस्त होता, इसी त्रुटी की पूर्ति के लिये इस व्याकरण को सर्वथा मैट्रिकुलेशन के लिये नियत Manual of Sanskirt Grammar के आधार पर ही रचा गया है, इस लिये कि मैट्रिकुलेशन श्रेणी में प्रविष्ट होने से पूर्व छात्रों को उसी शैली पर बहुत सा व्याकरण ज्ञान होजाये जैसा उन्होंने मैट्रिकुलेशन के लिये प्राप्त करना है और दो वर्षों के स्थान में वह इस प्रकार तीन वा अधिक वर्ष एक प्रकार के पुस्तक का अभ्यास कर सकें। जिन प्रान्तों में Manual of Sanskirt Grammar पाठ्य प्रणाली में न भी हो उन के लिये भी यह पुस्तक अत्यन्तोपयोगी है। इस में सभी अत्युपयोगी विषय प्राचीन पाणिनि-शैली और आधुनिक नवीन भण्डारकर आदि की शैली को मिला कर दिये हुये हैं, धातु-उच्चारण

प्रकरण में केवल उपयोगी धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ् और लट् के रूप दिये हैं, इन्हीं से अनुवाद आदि के लिये पूर्ण सहायता मिल जाती है ॥

इस के अभ्यास के विषय में इतना लिखना आवश्यक है कि सन्धिप्रकरण कारक और समास आदि में पुस्तक के अन्दर ही नियमों के साथ पाणिनि सूत्र दीये गये है, यदि यह सूत्र छात्रों को कण्ठस्थ करा दीये जायें तो उन को उच्च श्रेणियों में अति लाभ-प्रद होंगे, इन के अतिरिक्त शब्द सिद्धि आदि के नियम पाणिनि सूत्रों के साथ टिप्पणी में दीये हुये हैं, इस से हमारा अभिप्राय यह है कि यदि अध्यापक महोदय आवश्यक समझें तो इन का पठन पाठन में उपयोग करें, यदि समयाभाव से अथवा छात्रों की योग्यता के विचार से इन पर ध्यान देना न चाहें तो न सही, इस में कोई क्षति नहीं ॥

हम उन सज्जनों के अनुगृहीत हैं जिन्होंने इस पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिये अपनी अमूल्य सम्मति से कृतार्थ किया है। आशा है कि ऐसे महानुभाव पूर्ववत् कृपा करते रहेंगे ॥

पूर्वार्द्धम् ।

प्रथमः पाठः ।

वर्ण-माला ।

वर्णों के दो प्रकार हैं। स्वर (Vowels) और व्यञ्जन (Consonants)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ स्वर हैं।

इनमें से अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व (short) स्वर हैं। अन्य सब दीर्घ स्वर हैं॥

क ख ग घ ङ　च छ ज झ ञ　ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न　प फ ब भ म　य र ल व
श ष स ह　ये व्यञ्जन हैं॥

क से म तक पच्चीस वर्णों को पांच पांच के पांच वर्गों में विभक्त किया हुआ है। क से ङ तक को कवर्ग कहते हैं. च से ञ तक को चवर्ग, ट से ण तक को टवर्ग, त से न तक को तवर्ग और प से म तक को पवर्ग कहते हैं॥

इन पांचों वर्गों (क से म तक पच्चीस वर्णों) को स्पर्श कहते हैं॥

य र ल व अन्तःस्थ (Semi-vowels) कहलाते हैं।

श ष स ह ऊष्म (Sibilants) कहलाते हैं॥

वर्णों के उच्चारण-स्थान ।

अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग ये कण्ठ्य (Gutturals) हैं, क्योंकि ये कण्ठ में बोले जाते हैं॥

इ, ई, चवर्ग, य और श ये तालव्य (Palatals) हैं, क्योंकि ये तालु में बोले जाते हैं॥

ऋ, ॠ, टवर्ग, र और ष ये मूर्धन्य (Cerebrals) हैं, क्योंकि ये सिर में बोले जाते हैं॥

ऌ, तवर्ग, ल और स ये दन्त्य (*Dentals*) हैं, क्योंकि ये दांतों में बोले जाते हैं॥

उ, ऊ, पवर्ग, ये ओष्ठ्य (Labials) हैं, क्योंकि ये ओष्ठों में बोले जाते हैं॥

ङ, ञ, ण, न, म ये अपने २ स्थान में नासिका की सहायता से ही बोले जाते हैं, इस लिये अनुनासिक (Nasals) भी कहलाते हैं॥

अनुस्वार भी नासिका में बोले जाने के कारण अनुनासिक कहलाता है॥

ए (=अ+इ) और ऐ को कण्ठतालव्य कहते हैं, क्योंकि ये कंण्ठ और तालु में बोले जाते हैं॥

ओ (=अ+उ) और औ को कण्ठोष्ठ्य कहते हैं क्योंकि ये कण्ठ और ओष्ठ में बोले जाते हैं॥

व को दन्तोष्ठ्य कहते हैं, क्योंकि यह दन्त और ओष्ठ में बोला जाता है॥

वर्णोच्चारण-प्रकोष्ठ ।

उच्चारण स्थान	स्पर्श				अनुनासिक	अन्तःस्थ	ऊष्म	ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ	...	ह	अ	आ
तालु	च	छ	ज	झ	ञ	य	श	इ	ई
मूर्धन्	ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष	ऋ	ॠ
दन्त	त	थ	द	ध	न	ल } व	स	लृ	...
ओष्ठ	प	फ	ब	भ	म	}	...	उ	ऊ
कण्ठ-तालु	...	...	...	...	...	...	...	...	ए ऐ
कण्ठोष्ठ	...	...	...	...	...	...	...	...	ओ औ

इन सब ही वर्णों को पाणिनि ने अष्टाध्यायी में चौदह सूत्रों में नीचे दिये हुए क्रम से विभक्त किया है—

(१) अ इ उ (ण्), (२) ऋ लृ (क्), (३) ए ओ (ङ्), (४) ऐ औ (च्), (५) ह य व र (ट्), (६) ल (ण्), (७) ञ म ङ ण न (म्), (८) झ भ (ञ्), (९) घ ढ ध (ष्), (१०) ज ब ग ड द (श्), (११) ख फ छ ठ थ च ट त (व्), (१२) क प (य्), (१३) श ष स (र्), (१४) ह (ल्) ॥

जहां कहीं किसी सूत्र में ह्रस्व स्वर दिया है उसी से उसी प्रकार के दीर्घ स्वर का भी बोध हो जाता है ॥ यथा— अ इ उ (ण्) सूत्र में अ आ, इ ई, उ ऊ का बोध होता है ॥

प्रत्येक सूत्र के (　) में रखे हुए अन्तिम वर्ण के विना किसी एक अन्य वर्ण से किसी अन्य सूत्र के (　) में रखे

से अन्तिम वर्ण पर्यन्त प्रत्याहार कहलाता है । उस प्रत्याहार का नाम उन दो वर्णों से रक्खा जाता है । यथा— अ इ उ (ण) के 'अ' से ऐ औ (च) के 'च' पर्यन्त 'अच्' प्रत्याहार कहलाता है ॥

प्रत्येक सूत्र के अन्त में जो वर्ण ( ) में दिया है उसका ग्रहण उन वर्णों में नहीं होता जिन का बोध उस प्रत्याहार से होता है ॥

परिभाषा (TECNICAL TERMS)

१—अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ॥ अन्त्य वर्ण से पूर्व वर्ण 'उपधा' कहलाता है ॥ यथा—दण्डिन् में इ की उपधा संज्ञा है ॥

२—अदेङ् गुणः ॥ ह्रस्व अ, ए, ओ, (अर्, अल्,) गुण कहलाते हैं ॥

३—वृद्धिरादैच ॥ दीर्घ आ, ऐ औ (आर्, आल्) वृद्धि कहलाते हैं ॥

४—सुडनपुंसकस्य, शि सर्वनामस्थानम् ॥ पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग की विभक्तियों के पहिले पांच वचन और नपुंसक लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन 'सर्वनामस्थान' कहलाते हैं ।

५—यचि भम् ॥ सर्वनामस्थान से भिन्न जितनी स्वरादि विभक्तियें और यकारादि प्रत्यय हैं 'भ' कहलाते हैं ॥

६—(क) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥ सर्वनामस्थान और भ से भिन्न सब विभक्तियें 'पद' कहलाती हैं ॥

(ख) सुप्तिङन्तं पदम् ॥ विभक्ति जिस शब्द के अन्त में हो उसे 'पद' कहते हैं ॥

—:०:—

द्वितीयः पाठः ।

सन्धि-प्रकरणम् ।

परः सन्निकर्षः संहिता ॥ ऐसे दो वर्णों के मेल को सन्धि वा संहिता कहते हैं जिनके बीच में कोई अन्य वर्ण न हो ॥ सन्धि तीन प्रकार की होती है :—

अच् सन्धि—अच् के परे अच् हो,

हल् सन्धि— { हल् के परे हल् हो, वा हल् के परे अच् हो,

विसर्ग सन्धि—विसर्ग के परे हल् हो, वा अच् हो,

अच् (स्वर) सन्धिः ।

१—अकः सवर्णे दीर्घः ॥ अक् * के परे यदि समान स्वर हो तो दोनों के स्थान में उसी तरह का दीर्घ स्वर हो जाता है ॥ यथा—देव+अर्णवः=देवार्णवः, गिरि+ईशः=गिरीशः, मही+इन्द्रः=महीन्द्रः, लक्ष्मी+ईशः=लक्ष्मीशः, पितृ+ऋणम्=पितृणम् ॥

२—आद्गुणः ॥ अ वा आ से परे यदि अक् में से कोई वर्ण हो तो दोनों के स्थान में गुण हो जाता है ॥ यथा—उप+इन्द्रः=उपेन्द्रः, गण+ईशः=गणेशः, गङ्गा+उदकम्=गङ्गोदकम्, महा+ऋषि=महर्षिः, तव+लृकारः=तवल्कारः ॥

३—वृद्धिरेचि ॥ अ वा आ से परे यदि एच् में से कोई वर्ण हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि होती है ॥ यथा—तथा+एतत्=तथैतत्, जल+ओघः=जलौघः ॥

---

* अ इ उ (ण्), ऋ लृ (क्) ।

४—इको यणचि ॥ इक्* से परे यदि कोई अच् हो तो इक् को क्रम से यण् हो जाता है ॥ यथा—यदि+अपि=यद्यपि, सरयू+अम्बु=सरय्वम्बु, पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा, लृ+आकृति=लाकृति ॥

५—एचोऽयवायावः ॥ एच् † से परे यदि अच् हो तो एच् को क्रम से अय्, अव्, आय्, आव् हो जाते हैं ॥ यथा—ने+अनम्=नयनम्, भो+अति=भवति, पौ+अकः=पावकः ॥

६—एङः पदान्तादति ॥ पदान्त एङ् से परे यदि ह्रस्व अ हो तो अ का लोप होकर उसके स्थान में ऽ चिन्ह कर दिया जाता है ॥ यथा—हरे+अत्र=हरेऽत्र, प्रभो+अनुगृहाण=प्रभोऽनुगृहाण ॥

७—लोपः शाकल्यस्य ॥ पदान्त अय्, अव्, आय्, आव् के य् वा व् का विकल्प से लोप हो जाता है, यदि परे अश् हो ॥ यथा—हरे+एहि=हरयेहि—हरएहि, विष्णो+एहि=विष्णवेहि—विष्णएहि, श्रियै+उत्सुकः=श्रियायुत्सुकः—श्रियाउत्सुकः, गुरौ+अपि=गुरावपि—गुराअपि ॥

८—ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ द्विवचन के अन्त में यदि ई, ऊ वा ए हो तो उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। (प्रगृह्य की किसी के साथ सन्धि नहीं होती) ॥ यथा—कवी+इमौ=कवी इमौ, गुरू+आगतौ=गुरूआगतौ, लते+अमू=लते अमू ॥

९—अदसोमात् ॥ अदस् शब्द के म् के साथ यदि ई वा ऊ हो तो उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है ॥ अमी+अश्वाः=अमीअश्वाः, अमू+आसाते=अमूआसाते ॥

हल (व्यञ्जन) सन्धिः।

१०—स्तोःश्चुना श्चुः ॥ स् वा तवर्ग के पहिले या पीछे

---

* इ उ (ण्), ऋ ऌ (क्)। † ए ओ (ङ्), ऐ औ (च्)।

यदि श् वा चवर्ग हो हो स् को श् वा तवर्ग को क्रम से चवर्ग हो जाता है ॥ यथा—महत्+चक्रम् = महच्चक्रम्, तद्+जयः = तज्जयः, महान्+जयः = महाञ्जयः, यज्+नः = यज्ञः, हरिस्+शेते = हरिश्शेते ॥

११—ष्टुना ष्टुः ॥ स् वा तवर्ग के पहिले वा पीछे यदि ष् वा टवर्ग हो तो, स् को ष् वा तवर्ग को क्रम से टवर्ग हो जाता है ॥ यथा—तत्+टीका = तट्टीका, तद्+डिण्डिमः = तड्डिण्डिमः, इष्+तः=इष्टः, षष्+थः=षष्ठः ॥

१२—तोर्लि ॥ तवर्ग के परे यदि ल् हो तो तवर्ग को ल् हो जाता है ॥ यथा—तत्+लाभः = तल्लाभः । न् को अनुनासिक ल् होता है, अर्थात् ल् से पहिले स्वर पर ँ (अर्धानुस्वार) लगा दिया जाता है ॥ यथा—भवान्+लिखति=भवाँल्लिखति ॥

१३—झलां जश्झशि ॥ झल् के परे यदि झश् हो तो झल् को जश् होता है, अर्थात् जिस वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो उसको उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ॥ यथा—लभ्+धा = लब्धा ॥

१४—खरि च ॥ झल् के परे यदि खर् हो तो झल् को चर् हो जाता है, अर्थात् वर्ग के तीसरे अक्षर को उसी वर्ग का पहिला अक्षर हो जाता है ॥ यथा—दशद्+सु = दशत्सु ॥

१५—झलां जशोऽन्ते ॥ पदान्त में झल् के परे यदि अश् हो तो, झल् को जश् हो जाता है, अर्थात् जिस वर्ग का पहिला वर्ण हो उसी वर्ग का तीसरा वर्ण उसे हो जाता है ॥ यथा—दिक्+अन्तः = दिगन्तः, परिव्राट्+गच्छति = परिव्राड् गच्छति, दूरात्+आगतः = दूरादागतः ॥

१६—झयो होऽन्यतरस्याम् ॥ झय् के परे यदि ह् हो तो ह् के स्थान में उससे पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण

विकल्प से हो जाता है ॥ यथा—दिक्+हस्ती=दिक्+घस्ती=दिग्घस्ती (१२)—दिग्हस्ती, तत्+हितम्=तत्+धितम्=तद्धितम्—तद्हितम्, अप्+हरणम्=अप्+भरणम्=अब्भरणम्—अब्हरणम् ॥

१७—मोऽनुस्वारः ॥ पदान्त म् के परे यदि हल् हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है ॥ यथा—हरिम्+वन्दे=हरिंवन्दे, कष्टम्+सहते=कष्टं सहते ॥

१८—वा पदान्तस्य ॥ पदान्त अनुस्वार के परे यदि यय् हो तो यय् के वर्ग का पांचवां वर्ण विकल्प से हो जाता है ॥ यथा—किम्+करोषि=किं+करोषि (१७) =किङ्करोषि—किंकरोषि, नदीम्+तरति=नदींतरति (१७)=नदीन्तरति—नदींतरति, शत्रुम्+जहि=शत्रुंजहि=शत्रुञ्जहि—शत्रुंजहि ॥

१९—अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥ अपदान्त अनुस्वार के परे यदि यय् हो तो अनुस्वार को यय् के वर्ग का पांचवां वर्ण हो जाता है ॥ यथा—गम्+ता=गंता (१९)=गन्ता, आशन्+कते=आशंकते (१९)=आशङ्कते ॥

२०—यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ पदान्त यर् के परे यदि अनुनासिक हो तो यर् को उसी वर्ग का अनुनासिक विकल्प से हो जाता है ॥ यथा—दिक्+नागः=दिङ्नागः—दिग्नागः (१५), मधुलिट्+मत्तः=मधुलिण्मत्तः—मधुलिड्मत्तः (१५) जगत्+नाथः=जगन्नाथः—जगद्नाथः ॥

परन्तु यदि मय या मात्र प्रत्यय परे हो तो यर् को अनुनासिक सदा होता है ॥ यथा—चित्+मात्रम्—चिन्मात्रम्, चित्+मयम्=चिन्मयम् ॥

२१—उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥ उद् उपसर्ग के परे स्था या स्तम्भ धातुओं के स् का लोप हो जाता है ॥ यथा—

उद्+स्थानम्=उद्+थानम्=उत्थानम् (१४), उद्+स्तम्भनम्=उद्+तम्भनम्=उत्तम्भनम्॥

२२—शश्छोऽटि॥ झय् के परे यदि श् हो तो श् को छ् हो जाता है, यदि उसके परे अम् हो॥ यथा—तत्+श्रुत्वा=तच्+श्रुत्वा (१०)=तच्छ्रुत्वा, निन्दन्+शठः=निन्दञ्+शठः (१०)=निन्दञ्छठः॥

२३—छे च॥ ह्रस्व स्वर के परे यदि छ् हो तो छ् के पहिले च् लगाया जाता है॥ यथा—वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया॥

२४—पदान्ताद्वा॥ पदान्त दीर्घ स्वर के परे यदि छ हो तो च् विकल्प से लगाया जाता है॥ यथा—लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया—लक्ष्मीछाया॥

२५—ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्॥ ह्रस्व स्वर के परे यदि ङम् (ङ्, ण्, न्) हो तो उसको द्वित्व हो जाता है यदि परे अच् हो॥ यथा—प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण+ईशः=सुगण्णीशः, धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः॥

२६—नश्छव्यप्रशान्॥ पदान्त न् के परे यदि छव् हो तो न् को अनुस्वार और स् हो जाता है, परन्तु प्रशान् में कुछ नहीं होता॥ यथा—कस्मिन्+चित्=कस्मिंस्+चित्=कस्मिंश्चित् (१०), चलन्+टिट्टिभः=चलंस्+टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः (११), हसन्+तरुः=हसंस्तरुः॥

२७—ससजुषो रुः॥ पदान्त स् और सजुष् शब्द के ष् को रु (र्) हो जाता है॥

२८—खरवसानयोर्विसर्जनीयः॥ र् अवसान में हो वा उसके परे खर् हो तो र् को विसर्ग हो जाता है॥ यथा—राम+स्=राम+र् (२७)=रामः, पुनर्=पुनः, प्रातर्+फलति=प्रातः फलति॥

विसर्ग-सन्धिः।

२९—विसर्जनीयस्य सः॥ विसर्ग के परे यदि खर् हो तो विसर्ग को स् हो जाता है॥ यथा—पूर्णः+चन्द्रः=पूर्णस्+चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः (१०), भीतः+ष्टलति=भीतस्+ष्टलति=भीतष्टलति (११), उन्नतः+तरुः=उन्नतस्तरुः॥

३०—वा शरि॥ विसर्ग के परे यदि शर् हो तो विसर्ग को विकल्प से स् हो जाता है॥ यथा—रामः+शेते=रामस्+शेते=रामश्शेते (१०)-रामः शेते, घटाः+षट्=घटास्+षट्=घटाष्षट (११)-घटाःषट्, प्रथमः+सर्गः=प्रथमस्सर्गः-प्रथम सर्ग॥

३१—अतो रोरप्लुतादप्लुते; हशि च॥ विसर्ग के पहिले यदि ह्रस्व अ हो और परे ह्रस्व अ वा हश् हो तो विसर्ग को उ हो जाता है॥ यथा—देवः+अब्रवीत्=देव+उ+अब्रवीत्=देवोऽब्रवीत्,(२),शिवः+वन्द्यः=शिव+उ+वन्द्यः=शिवोवन्द्यः॥

३२—विसर्ग के पूर्व यदि अ वा आ के विना कोई स्वर हो और परे अश् हो तो विसर्ग को र् हो जाता है॥ यथा—हरिः+अयम्=हरिरयम्, तैः+उक्तम्=तैरुक्तम्, भानुः+गच्छति=भानुर्गच्छति॥

३३—रोरि॥ र् के परे यदि र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है

३४—ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः॥ लुप्त ढ् वा र् के पूर्व ह्रस्व अण् को दीर्घ हो जाता है॥ यथा—पुनर्+रक्ष=पुन+रक्ष (३३)=पुनारक्ष, हरिः+रक्षति=हरिर्+रक्षति (३२)=हरि रक्षति (३३)=हरीरक्षति॥

३५—भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि॥ अ, आ, भो, भगो अघो के परे यदि विसर्ग हो तो विसर्ग का (विसर्ग को य् हो कर उसका) लोप हो जाता है यदि परे अश् हो, लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती॥ यथा—रामः+आगतः=राम आगतः, देवः+उवाच=देव उवाच, भोः+देवदत्त=भो देवदत्त

देवाः+यान्ति=देवायान्ति, (पदान्त विसर्ग से पूर्व और परे यदि ह्रस्व अ हो तो विसर्ग को उ हो जाता है; देखो (३१) ॥

३६—एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥ सः वा एषः को विसर्ग का लोप हो जाता है यदि परे हल् हो ॥ यथा—सः+देवः=सदेवः, एषः+रामः=एषरामः ।

णत्व-विधिः ।

३७—रषाभ्यां नो णः समानपदे: ऋवर्णाच्चस्य णत्वं वाच्यम् ॥ ऋ, र् वा ष् के परे न् को ण् हो जाता है, यदि ऋ, र् वा ष् और न् एक ही पद में हों ॥ यथा—मातृ+नाम्=मातृणाम्, नृ+नाम्=नृणाम् ॥

३८—पदान्तस्य ॥ पदान्त न् को ण् नहीं होता ॥ यथा—नरान्, पितृन् ॥

३९—अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥ अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम्, (अनुस्वार) यदि ऋ, र्, ष् और न् के मध्य में भी हों तो न् को ण् हो जाता है ॥ यथा—नराणाम्, कृपणः, बृंहणम् ।

षत्व-विधिः ।

४०—आदेशप्रत्यययोः ॥ इण् वा कवर्ग के परे यदि आदेश वा प्रत्यय का स् हो तो उसे ष् हो जाता है ॥ यथा नरेषु, चतुर्षु, दिक्षु ॥

४१—नुंविसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ॥ अनुस्वार, विसर्ग वा शर् इण् आदि और स् के मध्य में भी हों तो स् को ष् हो जाता है ॥ यथा—हवींषि, ज्योतिःषु, धनुःषु ॥

प्रश्न ।

(१) नीचे लिखों में सन्धिच्छेद करो :—

तथैव, मनोरथः, यदेव, चेन्मतोऽहम्, शरच्छशी, किन्तम्, अवाङ्मुखस्योपरि, स्वैरजला, स्मृतिरन्वगच्छत्, पुनश्चेदम्, उद्धतः, मातारक्ष, तल्लुनाति, प्राग्मुखः, दृढोबन्धः, अस्मयम्, अज्मात्रम्, परिव्राडागतः, महच्छत्रम्, विपज्जालम्, तद्धि-

तम्, एतद्ठकुरः, राजण्ढौकसे, स्मरन्नुवाच, धावंश्छागः, मीमांसते, आलिङ्गते, उत्थितः, वागौदार्य्यम्, प्रागेव, दिग्घस्ती, भवदुक्तम्, बृहद्रथ, अब्जम्, अवाङ्मुखः, तन्नीरम्, नरोऽयम्, अतीतोमासः, नरइव, क एषः, औरसौ, दुर्नीतिः, वामोहस्तः,हतागजाः, प्रातरेव, नीरोगः, सदेवः, भो जनमेजय, एषगावति, वधूत्सवः, महाशयः, मतैश्यम्, महर्षिः, नीलोत्पलम्, नद्यम्बु, पित्रिच्छा, शयनम्, विनायकः, गवोः, श्रियायुत्सकः, कवीपतौ, अमू अश्वौ।

(२) नीचे लिखों में सन्धि करो :—

वेदः+अधीतः+मया, महान्+लाभः, मुनीन्+त्रायस्व, चिन्तयन्+एव, क्षिपन्+थुत्कारम्, प्रभो+अनुमन्यस्व, गम्+नव्यम्, पष्+थः, विद्ये+इमे, भवत्+मतम्, ताराः+उदिताः, भवतः+अयम्, पितः+आगम्यताम्, शम्भुः+राजते, गौ+इयम्, मार्गम्+चलति, मन+रञ्जनम्, भो+उमापते, अप्+वास, महत्+धनम्, तरु+छाया, गुरुम्+नमति, नि+रस, ककुभ्+हस्तो, धिक्+लोभिनम्, बृहत्+ललाटम्, धावन्+शश, याच्+ना, साधू+आगतौ, रवौ+अस्तम्+इते, परिव्राट्+राजते, विद्वन्+शोभसे, अनु+अय, भौ+उक, शश+अङ्क, एष+असौ, एष+वदति, कुत+आगत, द्विपत्+शिला+उच्छलत्, क+चित्+यजमान, कल्प+अन्तेषु+अपि, यदि+अस्ति+अत्र, रत्नै+महा+अर्हे+तुतुषु+नदेवा+नच+अपि+असुरा, नि+चित+अर्थात्+विरमन्ति॥

(३) नीचे लिखे पदों को शुद्ध करो —

मूर्छणा, छन्दांषि, देवाण्, रसेण, हर्येतौ, राम अब्रवीत्, महाद्रन्ध, एषोनृप, सोजगाद, धावितो छाग, पुनेऽपि, नरेव, नृपोवाच, नृपासन्, रमापु, चतुर्सु, दुर्णय॥

तृतीयः पाठः ।

संस्कृत भाषा में जितने शब्द हैं उन्हें तीन हिस्सों में बांटा हुआ है, (१) नाम (Declinable Substantives), (२) धातु (Verbal roots), (३) अव्यय (Indeclinables) ॥

नाम-प्रकरणम् ।

नाम—उच्चारण (Declensions of Substantives) ॥

नामों के तीन लिङ्ग होते हैं—पुंलिङ्ग (Masculine). स्त्रीलिङ्ग (Feminine) और नपुंसकलिङ्ग (Neuter) ॥

प्रत्येक लिङ्ग में नामके आगे सात विभक्तियां आती हैं, प्रत्येक विभक्ति के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन, वहुवचन ॥

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन	
प्रथमा	सु (स्)	औ	जस् (अस्)	Nominative.
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)	Accusative.
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस्	Instrumental.
चतुर्थी	ङे (ए)	,,	भ्यस्	Dative.
पञ्चमी	ङसि (अस्)	,,	,,	Ablative.
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस्	आम्	Genitive.
सप्तमी	ङि (इ)	,,	सुप् (सु)	Locative.

जिस नाम के अन्त में अच् (स्वर) आता है उसे अजन्त (स्वरान्त) और जिसके अन्त में हल् (व्यञ्जन) आता है उसे हलन्त (व्यञ्जनान्त) कहते हैं ॥

अजन्त (स्वरान्त) नाम

पुंलिङ्ग (Masculine)

अकारान्त

अकारान्त नामों के लिये विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं:—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	म्	औ	अन्
तृतीया	इन	भ्याम्	ऐस्
चतुर्थी	य	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	आत्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्य	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

सम्बोधन में वे ही विभक्तियां होती हैं जो प्रथमा में, इस लिये सम्बोधन पृथक् विभक्ति नहीं॥

राम (a proper name)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय १	रामाभ्याम् १	रामेभ्यः २
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम् १	रामेभ्यः २

१—सुपि च॥ अकारान्त अङ्ग के अन्तिम अ को दीर्घ हो जाता है, यदि यञ्+आदि विभक्ति परे हो॥

२—बहुवचने झल्येत्॥ अकारान्त अङ्ग के अन्तिम अ को ए हो जाता है, यदि झल्+आदि बहुवचन विभक्ति परे हो॥

षष्ठी	रामस्य	रामयोः ३	रामाणाम् ४
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु २
सम्बोधन	राम ५	रामौ	रामाः

नीचे दिये हुए नामों का उच्चारण (Declension) भी पुंलिङ्ग में राम शब्द की तरह करना चाहिये ॥

नृप	राजा,	a king.	अश्व	घोड़ा,	a horse.
पुत्र	पुत्र,	a son.	वृक्ष	वृक्ष,	a tree.
पवन	वायु,	wind.	हस्त	हाथ,	the hand.
जन	मनुष्य,	a man.	पुरुष	आदमी,	a man.
कोश	खजाना,	a treasure.	ईश्वर	परमात्मा,	God.
ग्राम	गांव,	a village.	कूर्म	कछुवा,	a tortoise.
किंकर	नौकर,	a servant.	समुद्र	समुद्र,	the sea.
स्तेन	चोर,	a thief.	आदेश	आज्ञा,	command.
देह	शरीर,	the body.	बिडाल	बिल्ला,	a cat.
अगद	औषध,	medicine.	गज	हाथी,	an elephant.
शिष्य	शिष्य,	a pupil.	दास	नौकर,	a servant.
स्वर्ग	स्वर्ग,	heaven.	जनक	पिता,	father.

३—ओसि च ॥ अकारान्त अङ्ग के अन्तिम अ को ए हो जाता है, यदि परे ओस् हो ॥ यथा—राम+ओस्=रामे+ओस्=राम्+अय्+ओस् (२)=रामयोः (२७, २८) ॥

४—नामि च ॥ अच्+अन्त अङ्ग के अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि नाम् परे हो ॥ यथा—राम+नाम्=रामानाम=रामाणाम् (२६) ॥

५—एङ् ह्रस्वात् सम्बुद्धेः ॥ ह्रस्व+अन्त और एङ्+अन्त अङ्ग के परे सम्बोधन की एकवचन विभक्ति का लोप हो जाता है ॥

प्राज्ञ } बुध	बुद्धिमान् पुरुष,	a wise man	भार	बोझ	a burden
			पाद	पाव,	the foot
			योध	योद्धा,	a warrior
मेघ	बादल,	a cloud	शर	बाण,	an arrow
नर	मनुष्य,	a man	नाश	नाश,	disappearance
मूर्ख	मूर्ख,	a fool	व्याघ्र	शेर,	a tiger
सत्त्व	पशु,	an animal	बाल	बालक	a child

इकारान्त।

इकारान्त नामों के लिये विभक्तियों के यह रूप बन जाते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	०	अस्
द्वितीया	म्	०	न्
तृतीया	ना	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	औ	ओस्	सु

कवि (a poet)

प्रथमा	कवि	कवी ६	कवय ७
द्वितीया	कविम्	कवी ६	कवीन् ६

६—प्रथमा द्विवचन और द्वितीया के द्विवचन और बहुवचन में इकारान्त वा उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों की इ वा उ को दीर्घ हो जाता है॥

७—जसि च॥ इ + अन्त पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है यदि पर प्रथमा बहुवचन की विभक्ति (अस्) हो॥

तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये ८	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः ८, ९.	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः ८, ९.	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ १०	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	कवे ११	कवी	कवयः

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण 'कवि' की तरह होगा।

अरि	शत्रु,	an enemy.
अग्नि	आग,	fire.
ऋषि	ऋषि,	a sage.
व्याधि	रोग,	disease.
नृपति	राजा,	a king.
अतिथि	अतिथि,	a guest.
विधि	भाग्य,	fate.
रवि	सूर्य,	the sun.
कलि	कलह,	strife.
हरि	व्यक्ति-नाम, विष्णु, इन्द्र	
असि	तलवार,	a sword.
कपि	बन्दर	a monkey.
गिरि	पर्वत,	a mountan.
पाणि	हाथ,	the hand.
बलि	बलि,	an offering.
मणि	रत्न,	a jewel.
सारथि	रथवान,	a charioteer
यति	योगी,	an ascetic.
अधिपति	स्वामी,	a master.
राशि	ढेर,	a heap.

उकारान्त

उकारान्तों की वे ही विभक्तियां हैं जो इकारान्तों की ॥

भानु (the sun)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	भानु	भानू	भानव
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभि
चतुर्थी	भानव	भानुभ्याम्	भानुभ्य
पञ्चमी	भानो	भानुभ्याम्	भानुभ्य
षष्ठी	भाना	भान्वो	भानूनाम्
सप्तमी	भाना	भान्वो	भानुषु
सम्बोधन	भानो	भानू	भानव

नियमों के लिये देखो (कवि) ॥

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण 'भानु' की तरह होगा ।

इषु	बाण,	an arrow
तरु	वृक्ष,	a tree
बिन्दु	बून्द,	a drop
इन्दु	चन्द्र,	the moon
बन्धु	सम्बन्धी,	a relative
पशु	पशु	a beast
वायु	पवन,	the wind
शम्भु	शिव,	the god Shiva
प्रभु	मालिक,	a lord
बाहु	भुजा,	an arm
गुरु	आचार्य,	a preceptor
शिशु	बालक,	an infant.
शत्रु	वैरी,	an enemy
मनु	मनुस्मृति का कर्त्ता,	Manu, the Hindu—legislator
विष्णु	विष्णु,	the god Vishnu
मृत्यु	मृत्यु,	death
विभु (वि०)	व्यापक,	allpervading
बहु (वि०)	बहुत,	many
सूनु	पुत्र,	a son
मृदु (वि०)	कोमल,	soft.
गुरु (वि०)	भारी,	heavy
तनु (वि०)	छोटा, अल्प	small, little
लघु (वि०)	छोटा,	small
साधु	सज्जन,	a good man

ऋकारान्त

ऋकारान्त नामों के लिये विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं ॥

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथ०सम्बो०	०	औ	अस्
द्वितीया	अम्	औ	न्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

पितृ (a father)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	पिता १२	पितरौ १३	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन् १४
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः १५	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः १५	पित्रोः	पितॄणाम्

१२—ऋदुशनस्-पुरुदंसोऽनेहसाञ्च ॥ ह्रस्व ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम ऋ को प्रथमा के एकवचन में अन् हो जाता है ॥ दातान् (सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ)=दाता (नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य) ॥

१३—ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ॥ ह्रस्व ऋकारान्त शब्द के परे यदि सप्तमी एकवचन वा सर्वनामस्थान विभक्ति हो तो ऋ को गुण (अर्) हो जाता है ॥

१४—द्वितीया बहुवचन में ऋ को दीर्घ हो जाता है ॥

१५—ऋतउत् ॥ ह्रस्वऋकारान्त शब्दों के परे पञ्चमी वा षष्ठी का एकवचन (अस्) हो तो ऋ और अ के स्थान में उ हो जाता है ॥ यथा—पितृ+अस्=पितुस्=पितुः ॥

सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	पितः	पितरौ	पितरः

दातृ (a giver)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	दाता	दातारौ १६	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	शेष पितृकी तरह।

नीचे लिखे ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्दों का उच्चारण दातृकी तरह होगा॥

त्वष्टृ विश्वकर्मा, the architect of gods
भर्तृ स्वामी, husband master
कर्तृ (वि०) करनेवाला, a doer
गन्तृ (वि०) जानेवाला, a goer
द्रष्टृ (वि०) देखने वाला, a seer
द्वेष्टृ (वि०) शत्रु a hater
रक्षितृ (वि०) रक्षक, a defender
नप्तृ पौत्र दौहित्र a grandson
वक्तृ (वि०) बोलनेवाला, a speaker
श्रोतृ (वि०) सुननेवाला, a hearer
स्रष्टृ (वि०) उत्पन्न करने वाला, the creator
होतृ हवन करनेवाला, a sacrificial priest
जेतृ (वि०) जीतनेवाला a conqueror
सवितृ सूर्य, the sun
अध्येतृ पढ़ने वाला a reader

ओकारान्त

की विभक्तियों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

गो (a bull)

प्रथमा	गौः १७	गावौ १७	गावः

१६—अप्तृन्तृच्-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तॄणाम्॥ अप्, तृन् तृच् प्रत्ययान्त, स्वसृ, नप्तृ, नेष्टृ, त्वष्टृ, क्षत्तृ, होतृ, पोतृ और प्रशास्तृ शब्दोंके उपधा-स्वर का दीर्घ हो जाता है, यदि पर सर्वनामस्थान हो।

१७—गोतो णित्॥ ओकारान्त शब्द के अन्तिम ओ को सर्वनामस्थान परे होने पर वृद्धि हो जाती है॥

द्वितीया	गाम् १८	गावौ १७	गाः १८
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः	गावौ	गावः

EXERCISE I.

(क) दासो ग्रामाय भारं नयति ॥

हरिः पाणिनाग्निं स्पृशति ॥

मूर्खाः स्वीयानपराधान् छादयन्ति ॥

ईश्वरः पापान् अपि क्षमते ॥

गुरूणामादरश्छात्राणां परमो धर्मः ॥

बहवो नास्तिका ईश्वरं संसारस्य स्रष्टारं न मन्यन्ते ॥

अगदेन मनुष्याणां व्याधयो नश्यन्ति ॥

कवयो नृपाणां गुणान् वर्णयन्ति ॥

विपरीतेषु दिवसेषु स्वीया बन्धवोऽपि विमुखा भवन्ति ॥

भारता नन्तुलाभेनातीव तुष्यन्ति ॥

संसारस्य कर्तारं प्राञ्जलिर्नमामि ॥

रवेः प्रकाशः ग्रीष्मे आल्हादको न भवति ॥

सारथीरामस्याश्वं ग्रामाद् ग्रामं नयति ॥

१८—औतोऽम्शसोः ॥ ओकारान्त शब्द के अन्तिम ओ को आ हो जाता है, यदि परे अम् वा अस् (द्वितीया बहुवचन) हो ॥

(ख) रोग मनुष्यों को दुःख देते हैं ॥

छात्र परिश्रम से पाठ पढ़ते हैं ॥

कृष्ण दण्ड से चोर को पीटता है ॥

बहुत से पक्षि वृक्ष पर बैठे हैं ॥

बच्चे धूलि से खेलते हैं ॥

सब भाइयों में हरि का आचार श्रेष्ठ है ॥

मृग मांस नहीं खाते ॥

राम विनय से अध्यापक को प्रणाम करता है ॥

बुद्धिमान् लोगों को शुभ मार्ग पर ले जाते हैं ॥

पिता के भाई को पितृव्य कहते हैं ॥

संसार में पिता और पुत्र में भी धन के लिये कलह हो जाता है ॥

अर्जुन बाहु के पराक्रम से शत्रुओं को जीतता है ॥

चतुर्थः पाठः ।

स्वरान्त
स्त्रीलिङ्ग (Feminine)
आकारान्त

आकारान्त शब्दों के लिये विभक्तियों के ये रूप बन जायेंगे ॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	०	ई	अस्
द्वितीया	म्	ई	अस्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्
सप्तमी	आम्	ओस्	सु
सम्बोधन	०	ई	अस्

शाला (a hall, place)

प्रथमा	शाला	शाले	शालाः
द्वितीया	शालाम्	शाले	शालाः
तृतीया	शालया १९	शालाभ्याम्	शालाभिः

१९—आङि चापः; सम्बुद्धौ च ॥ स्त्रीलिङ्ग के आकारान्त शब्दों के अन्तिम आ को ए हो जाता है, परे यदि तृतीया एकवचन, षष्ठी और सप्तमी का द्विवचन और सम्बोधन का एकवचन हो ॥

चतुर्थी	शालायै २०	शालाभ्याम्	शालाभ्य
पञ्चमी	शालाया २०	शालाभ्याम्	शालाभ्य
षष्ठी	शालाया २०	शालयो १९	शालानाम्
सप्तमी	शालायाम् २०	शालयो १०	शालासु
सम्बोधन	शाले १९	शाल	शाला

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण भी शाला की तरह होगा।

आज्ञा	आज्ञा,	command	शोभा	सौन्दर्य,	beauty
कथा	कहानी,	a story	लता	बेल,	a creeper
कन्या	लड़की,	a daughter	लज्जा	लज्जा,	shame, modesty
कला	हुनर,	an art	भार्या	स्त्री,	a wife
गङ्गा	गङ्गा नदी,	the Ganges	प्रजा	सन्तान, प्रजा,	progeny subjects
चिन्ता	चिन्ता,	anxiety	छाया	छाया,	shade
देवता	देवता,	a deity	तृष्णा	तृष्णा,	thirst
पाठशाला	पाठशाला,	a school	निशा	रात्रि,	night
क्रीड़ा	खेल,	play	शिला	पत्थर,	a stone
जरा	बुढ़ापा,	old age	रथ्या	बाजार,	a street
क्षमा	क्षमा,	forgiveness	विद्या	विद्या,	knowledge
माला	माला,	a garland			

ईकारान्त।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	०	औ	अस्
द्वितीया	म्	औ	इस्

शेष आकारान्तों की तरह।

---

२० याडापः ॥ स्त्रीलिङ्ग के आकारान्त शब्दों के अन्त में या जोड़ा जाता है यदि आ, अस् (पञ्च, षष्ठी एकव०) और आम् परे हो ॥ यथा—शाला+ए=शाला+या+ए=शालायै ॥

नदी (a river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै २१	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः २१	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि २२	नद्यौ	नद्यः

स्त्री (a woman)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ २३	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्-स्त्रीम् २४	स्त्रियौ	स्त्रियः-स्त्रीः २४
तृतीया	स्त्रिया २३	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै २३	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः

पञ्चमी	स्त्रियाः २३	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः २३	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रियः

श्री* (the goddess of wealth)

प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः	श्रियौ	श्रियः

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण नदी की तरह होगा।

कुमारी अविवाहिता बालिका, a virgin
नटी नटी, an actress
जननी माता, a mother
सखी } सहेली, a female-
सहचरी } companion
वापी छोटा तालाब, कूप, a well
पृथ्वी भूमि, the earth
मही पृथ्वी, the earth.
दासी नौकरानी, a maid.
महिषी रानी, a crowned queen.
पुरी शहर, a town.
इन्द्राणी इन्द्र की स्त्री, the wife of the god Indra.
कौमुदी चान्दनी, moon light.

---

* श्री शब्द के प्रथमा एकवचन में श्री, द्वितीया एकवचन में श्रियम् और द्वितीया बहुवचन में श्रियः रूप बनते हैं शेष स्वरादि विभक्तियों में इसके दो दो रूप होते हैं, एक स्त्री की तरह और दूसरा सुधी की तरह।

नारी	स्त्री,	a woman.	* लक्ष्मी लक्ष्मी देवी, the goddess of fortune.
पत्नी	भार्या,	a wife.	

ऊकारान्त †

वधू (a young woman)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु	वध्वौ	वध्वः

इकारान्त

‡ मति (intellect)

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः

---

* प्रथमा एकवचन लक्ष्मीः ॥

† इस के प्रथमा एकवचन में स विभक्ति होती है, शेष उच्चारण नदी की तरह होगा, नदी में ई को य् होता है, यहां पर ऊ को व् होगा।

‡ द्वितीया बहुवचन, तृतीया एकवचन नदी की तरह होगा; चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एक वचनों में मति का एक रूप नदी की तरह और दूसरा कवि की तरह, और शेष उच्चारण कवि की तरह होगा।

तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै-मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः-मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्या मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्-मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते	मती	मतयः

उकारान्त

* धेनु (a cow)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै-धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः-धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः-धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम् धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो	धेनू	धेनवः

ऋकारान्त

मातृ, स्वसृ, दुहितृ आदि स्त्रीलिङ्ग के ऋकारान्त शब्दों के द्वितीया बहुवचन में मातॄः, स्वसॄः, दुहितॄः आदि रूप बनते हैं, शेष उच्चारण पितृ की तरह होगा, स्वसृ का उच्चारण दातृ की तरह होगा।

मातृ (a mother)

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः

* धेनु का उच्चारण मति की तरह होगा, मति में इ को य् हो जाता है, धेनु में उ को व् होता है॥

द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	मातः	मातरौ	मातरः

स्वसृ (a sister)

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	शेष मातृ की तरह

ओकारान्त, औकारान्त

स्त्रीलिङ्ग में ओकारान्त और औकारान्त शब्दों का उच्चारण सर्वथा पुंलिङ्ग की तरह होगा ।

गो (a cow)

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	इत्यादि

नौ (a boat)

प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	इत्यादि

नीचे लिखे इकारान्त और ऋकारान्त मति और मातृ की तरह जानने ।

भूमि	पृथ्वी,	the earth.	बुद्धि	बुद्धि,	talent.
अनुरक्ति	प्रेम,	love.	भक्ति	भक्ति,	devotion.
नीति	नय,	politics.	भूति	ऐश्वर्य्य	prosperity.
मुक्ति	मोक्ष,	absolution.	जाति	जाति,	caste.

मूर्त्ति मूर्त्ति an image.
कांति शोभा, splendour
प्रकृति प्रजा,स्वभाव, subjects, disposition.
कीर्ति यश, fame.
प्रतिकृति नकल, an image.
रति भोग, sensual pleasure.
कृति काम, action.
गति चाल, gait.
सृष्टि संसार, creation.
श्रुति सुनना, hearing.
रज्जु रस्सी, a rope.
उपकृति उपकार, benefit.
प्रीति प्रेम, love.
दुष्कृति दुष्कर्म, a wicked action.
रात्रि रात्रि, night.
वसति वास स्थान, the place of residence.
धृति धैर्य, courage.
वृत्ति पेशा, avocation.
स्मृति स्मरण, remembrance.
स्तुति प्रशंसा, praise.
सुकृति अच्छा काम, good action.
यातृ भर्ता के भाई की स्त्री, husdand's brother's wife.
दुहितृ पुत्री, a daughter.
ननान्दृ ननान (भर्ता की बहिन) husband's sister.

EXERCISE II.

(क) यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि देवम् ॥
वधूषु सकलास्वपि सीता सैव तस्य प्रिया यथा शान्ता ॥
प्रभूता भारता मुक्त्यै देवानां मूर्तीः पूजयन्ति ॥
दैवे प्रतिकूले बुद्धिरपि नश्यति ॥
बुद्धेरेवायं प्रभावो यद्सम्भवानां कृतीनामपि सम्भवः ॥
श्रुतौ शूद्राणां नाधिकार इति बहूनां ब्राह्मणानां सम्मतिः ॥
धेनुभ्य. संसारस्य प्रभूतो-पकृतिर्भवति ॥

माता भ्राता पिता याता स्वसारो दुहिता तथा।
रक्षन्ति सर्वे स्वप्राणान् प्राणास्तेन परं प्रियाः ॥

(ख) वृद्धावस्था में भी मनुष्यों की तृष्णा नहीं जाती ॥

प्रायः विद्या और लक्ष्मी एक पुरुष में नहीं रहतीं ॥

व्यापार दास वृत्ति से अच्छा है ॥

श्रुति और स्मृति में ईश्वर की प्राप्ति के उपाय हैं ॥

सुशीला की सास उससे बहुत स्नेह करती है ॥

गङ्गा और यमुना का सङ्गम प्रयाग के समीप होता है ॥

माता कैकेयी की आज्ञा से राम अयोध्या से पञ्चवटी पहुँचा ॥

अच्छे पुरुषों का यश भूमि पर फैलता है ॥

चन्द्र की कान्ति रात्रि में आनन्द देती है ॥
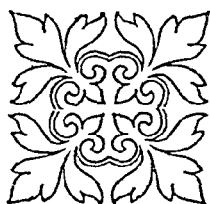
पञ्चमः पाठः।

नपुंसकलिङ्ग (NEUTER)

अकारान्त

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के परे विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	म्	ई	आनि
द्वितीया	म्	ई	आनि
सम्बोधन	०	ई	आनि

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

ज्ञान (knowledge)

प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
सम्बोधन	ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

शेष उच्चारण राम की तरह।

इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के परे विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा द्वि० सम्बो०	०	ई	इ
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

इकारान्त

वारि (water)

प्रथ० द्वितीं०	वारि	वारिणी २५	वारीणि *
सम्बोधन	वारि-वारे २६	वारिणी २५	वारीणि
तृतीया	वारिणा २५	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु

उकारान्त

मधु (honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	इत्यादि वारिकी तरह

ऋकारान्त

कर्तृ (a doer)

प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
तृतीया	कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	इत्यादि वारि की तरह

२५—इकोऽचि विभक्तौ ॥ इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त नपुंसक लिङ्ग के शब्दों के अन्त में न् लगाया जाता है यदि परे कोई स्वरादि विभक्ति हो ॥

* वारि+इ=वारिन्+इ=वारीणि (सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ) ॥

२६—नपुंसक लिङ्ग में इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम स्वर को विकल्प से गुण होजाता है, यदि परे सम्बोधन के एक वचन की विभक्ति हो ॥

अस्थि (a bone)

प्र॰द्वि॰सं॰	अस्थि	अस्थिनी	अस्थीनि
तृतीया	अस्थ्ना २७, २८	अस्थिभ्याम्	अस्थिभि
चतुर्थी	अस्थ्ने	अस्थिभ्याम्	अस्थिभ्य
पञ्चमी	अस्थ्न	अस्थिभ्याम्	अस्थिभ्य
षष्ठी	अस्थ्न	अस्थ्नो	अस्थ्नाम्
सप्तमी	अस्थ्नि-अस्थनि २९	अस्थ्नो	अस्थिषु

अक्षि (the eye)

प्र॰द्वि॰स॰	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	इत्यादि अस्थि की तरह

दधि (curd)

प्र॰द्वि॰स॰	दधि॰	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभि इत्यादि अस्थि की तरह ॥

सुरभि (त्रि॰)	सुगन्धित,	fragrant	गोत्र	वंश,	family
रत्न	मणि,	a jewel	इन्धन	बालन,	fuel
चक्र	चक्र,	a wheel	दातृ	देनेवाला,	a giver
			मधु	शहद,	honey

२७—अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्त ॥ अस्थि को अस्थन्, अक्षि को अक्षन्, और दधि का दधन् हाजाता है, यदि परे तृतीया एक वचन से लेकर कोई स्वरादि विभक्ति हो ॥

२८—अल्लोपोऽन ॥ अन् अन्त शब्दों के अन् के अ का लोप होजाता है, यदि परे भ विभक्तियें हों ॥

२९—विभाषाङिश्योः ॥ अन् के अ का लोप विकल्प से होता है, यदि परे सप्तमी-एकवचन या नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा या द्वितीया का द्विवचन हो॥

अश्रु	आंसु,	a tear.
वसु	धन,	wealth.
विष	ज़हर	poison.
वस्त्र	कपड़ा,	cloth.
नगर	शहर,	a town.
तत्त्व	सचाई,	truth.
सुवर्ण	सुवर्ण,	gold.
मांस	मांस,	flesh.
नख	नख,	a nail.
पुण्य	पुण्य,	merit.
यन्त्र	यन्त्र,	a machine.
कमल	कमल,	a lotus.
गृह	गृह,	a house.
जल	पानी,	water.
दुःख	दुःख,	misery.
धन	धन,	wealth.
नेत्र	आंख,	the eye.
फल	फल,	a fruit.
मित्र	मित्र,	a friend.
मुख	मुख,	the mouth.

सुख	सुख,	happiness.
हृदय	चित्त,	the heart.
पद	कदम,	a step.
धान्य	अनाज,	corn.
तृण	घास,	grass.
पाप	पाप,	sin.
कुसुम	फूल,	a flower.
पुष्प	,,	,,
आसन	स्थान,	a seat.
आकाश	आकाश,	the sky.
उद्यान	बाग़,	a garden.
कल्याण	सुख,	happiness.
क्षेत्र	खेत,	a field.
भोजन	भोजन,	food.
मौन	चुप,	silence.
राज्य	राज्य,	kingdom.
वैर	शत्रुता,	enmity.
वचन	वाक्य,	a saying.
नयन	आंख,	the eye

EXERCISE III.

(क) मूर्खो ध्रुवाणि परित्यजति अध्रुवाणि च निषेवते ॥

कासारेषु सुरभीणि कमलानि प्ररोहन्ति ॥

जाड्येन नराणां सञ्चितमपि धनं नश्यति उद्यमेन च वर्धते ॥

रथाः यन्त्राणि च चक्रैश्चलन्ति ॥

सूर्य्यस्योदयात् पुरा निर्मलेन

शीतेन च उदकेन मुखं नेत्रे च प्रक्षालयस्व ॥

छात्रस्य अश्रूणि नयनाभ्यां कपोलयोरपतन् ॥

दुष्टानां हृदयं परकीयस्य दुःखस्य श्रवणेन न कदापि द्रवति॥

तृणानि पशूनां भोजनम्, धान्यं मनुष्याणां, फलानि च कपीनाम् ॥

भारते जना मृतानामस्थीनि गङ्गाजले क्षिपन्ति ॥

मूर्खा अक्षिभ्यामेव पश्यन्ति बुधास्तु ज्ञानेनाऽपि ॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

(ख) ज्ञान का फल सुख होता है॥

उस धूर्त का वृत्त सुनने से हृदय कांपता है ॥

घर की सब वस्तु उसने बाहिर फेंक दीं ॥

पाप सदा निन्दनीय है, और पुण्य प्रशंसनीय ॥

धन के बल से सब कार्य्य सिद्ध होजाते हैं ॥

पुस्तक को जल और तैल से बचाओ (रक्ष्) ॥

चन्दन से मुख इतना सुन्दर नहीं होता जितना मधुर वचनों से ॥

जब मैंने देखा तो देवदत्त की आंखों से आंसू बह रहे थे ॥

—— ० ——

षष्ठः पाठः ।

सर्वनाम (Pronouns)

४२—अव्यय और धातु से भिन्न किसी शब्द की द्विरुक्ति न करने के लिये जो उस शब्द की जगह दूसरा शब्द प्रयुक्त होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं ॥

४३—सर्वनाम के लिङ्ग और वचन वे ही होते हैं, जो उस शब्द के हैं, जिसके स्थान में, वह प्रयुक्त हुवा हो ॥ यथा—रामः गृहमगच्छत् परं तस्य (रामस्य) पुस्तकानि अत्रैव वर्त्तन्ते ॥ इस वाक्य में राम की द्विरुक्ति को दूसरे वाक्य में न करने के लिये 'रामस्य' के स्थान में 'तस्य' का प्रयोग हुआ है ॥

मुख्य सर्वनाम यह हैं:—

सर्व (all)	कतर (which of two ?)	तृतीय (third)
उभ (both)	कतम (which of many ?)	तद् (that)
उभय (both)	पूर्व (eastern)	एतद् (this)
अन्य (other)	पर (another)	यद् (which)
अन्यतर (either)	अवर (lower)	किम् (which?)
इतर (other)	दक्षिण (right, southern)	इदम् (this)
ततर (that of two)	उत्तर (left, northern)	अदस् (that)
ततम (that of many)	अपर (another)	युष्मद् (you)
यतर (which of two)	स्व (ones' own)	अस्मद् (we)
यतम (which of many)	द्वितीय (second)	

पुंलिङ्ग में सर्व नामों की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं ।

प्रथमा	स्	औ	ई
द्वितीया	म्	औ	आन्
तृतीया	इन	भ्याम्	ऐस्
चतुर्थी	स्मै	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	स्मात्	भ्याम्	भ्यस्

षष्ठी	स्य	ओस्	इषाम्
सप्तमी	स्मिन्	ओस्	सु
सम्बोधन	०	औ	ई

सर्व (all)

प्रथमा	सर्व	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	सर्व	सर्वौ	सर्वे

स्त्रीलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग में सर्वनामों की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं॥

प्रथमा	०	ई	अस्
द्वितीया	म्	ई	अस्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	स्यै	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	स्यास्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्यास्	ओस्	साम्
सप्तमी	स्याम्	ओस्	सु
सम्बोधन	०	ई	अस्

सर्व

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया *	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः

* आङि चापः ॥

चतुर्थी	सर्वस्यै ३०	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः ३०	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः ३०	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम् ३०	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	सर्वे	सर्वे	सर्वाः

नपुंसकलिङ्ग

प्र०द्वि०. सर्वं सर्वे सर्वाणि, शेष पुंलिङ्गवत्।

(क) नपुंसकलिङ्ग प्रथमा एकवचन से विना तद्, एतद् और यद् के अन्तिम द् का लोप होकर क्रम से त, एत और य बन जाते हैं, फिर उनका उच्चारण सर्व की तरह तीनों लिङ्गों में होगा।

(ख) तद् आदि आठ सर्वनामों का सम्बोधन नहीं होता॥

तद् (that)

पुंलिङ्ग।

प्रथमा	सः ३१	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः

३०—सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च॥ सर्वनामों के परे यदि स्त्रीलिङ्ग की ए, अस् (पञ्च० षष्ठी—एक वचन) आम्, विभक्तियें हों तो विभक्ति के पूर्व स्या जोड़ा जाता है और सर्वनाम का अन्तिम आ ह्रस्व होजाता है॥ यथा— सर्वा+ए=सर्वा+स्या+ए=सर्वास्यै=सर्वस्यै॥ (इस पुस्तक में विभक्तियों के रूप स्या के साथ जोड़ कर दिये हुवे हैं)॥

३१—तदोः सः सावनन्त्ययोः॥ तद् अदस् और एतद् के परे द् को स् हो जाता है, यदि परे पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग की प्रथमा एकवचन विभक्ति हो॥

षष्ठी	तस्य	तयो	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो	तेषु

स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	सा	ते	ता
द्वितीया	ताम्	ते	ता
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्य
पञ्चमी	तस्या	ताभ्याम्	ताभ्य
षष्ठी	तस्या	तयो	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयो	तासु

नपुंसकलिङ्ग ।

प्रथमा द्वितीया तत् ते तानि शेष पुलिङ्ग की तरह

एतद् (this)

पुलिङ्ग ।

प्रथमा एष एतौ एते इत्यादि तद् की तरह

स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा एषा एते एता इत्यादि तद् की तरह

नपुंसकलिङ्ग ।

प्रथमा द्वितीया एतत् एते एतानि शेष पुलिङ्ग की तरह ।

यद् का उच्चारण तीनों लिङ्गों में सर्व की तरह होगा ।

नपुंसक में प्रथमा एक वचन 'यत्' होगा ॥

किम् (which ?)

किम् को क ३२ बनाकर इसका उच्चारण तीनों लिङ्गों में

---

* तदो स सावनन्त्ययो ॥

३२—किम क ॥ किम् का क हो जाता है, यदि पर कोई विभक्ति हो ॥

सर्व की तरह होगा। नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा का एकवचन 'किम्' होगा॥

इदम् (this).

इदम् के म् का लोप होकर इद हो जाता है, यदि परे प्रथमा एक वचन से अन्य कोई विभक्ति हो॥

पुंलिङ्ग

प्रथमा	अयम् ३३	इमौ ३४	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन ३५	आभ्याम् ३६	एभिः ३६
चतुर्थी	अस्मै ३६	आभ्याम् ३६	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः ३५	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः ३५	एषु

३३—इदोय् पुंसि॥ पुंलिङ्ग में इदम् के इद् को अय् होजाता है, यदि परे प्रथमा एक वचन की विभक्ति हो॥

३४—दश्च॥ इदम् के द् को म् हो जाता है, यदि परे प्रथमा द्विवचन से द्वितीया बहुवचन तक कोई विभक्ति हो॥ इदम्+औ=इद+औ= इम+औ=इमौ॥

३५—अनाप्यकः॥ इदम् के इद् को अन् हो जाता है, यदि परे तृतीया एकवचन से लेकर कोई स्वरादि विभक्ति (इन, ओस्) हो॥ यथा इदम्+इन=इद+इन=अन्+अ+इन=अनेन॥

३६—हलि लोपः॥ इदम् के इद् का लोप हो जाता है, यदि परे कोई तृतीया द्विवचन से लेकर हलादि विभक्ति हो॥ इदम्+भ्याम्=अ+ भ्याम्=आभ्याम्॥

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	इयम् ३७	इमे*	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया **	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा-द्वितीया इदम् इमे इमानि, शेष पुलिङ्ग की तरह ॥

युष्मद् और अस्मद् का उच्चारण तीनों लिङ्गों में समान होता है ॥

युष्मद् (you)

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्—त्वा	युवाम्—वाम्	युष्मान्-वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्-ते	युवाभ्याम्-वाम्	युष्मभ्यम्-वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव—ते	युवयोः—वाम्	युष्माकम्-वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (we)

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्

३७—य सौ ॥ स्त्रीलिङ्ग में इदम् के द् को य् हो जाता है, यदि परे प्रथमा एक वचन की विभक्ति हो ॥

* इदम्+ई=इद+ई=इम+ई=इमे ॥

** अनाप्यकः, आङि चापः, एचोऽयवायावः ॥

द्वितीया	माम्—मा	आवाम्-नौ	अस्मान्-नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्-मे	आवाभ्याम्-नौ	अस्मभ्यम्-नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम-मे	आवयोः-नौ	अस्माकम-नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

EXERCISE IV.

(क) वत्स, प्रमार्जयाश्रूणि, अयमागच्छति ते भ्राता यं त्वं मृतमेव मन्यसे ॥

न कुतूहलमस्त्यस्माकमस्याः वार्तायाश्श्रवणे ॥

यस्माच्च येन च यदा च यथा च यच्च ।
यावच्च यत्र च शुभाशुभमात्मकृत्यम् ॥
तस्माच्च तेन च तदा च तथा च तच्च ।
तावच्च तत्र च फलं लभते स तस्य ॥
यो यस्य भक्षयेन्मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् ।
एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्वियुज्यते ॥
यूयं वयं वयं यूयमित्यासीन्मतिरावयोः ।
किञ्जातमधुना येन यूयं यूयं वयं वयम् ॥

(ख) ये वही वृक्ष हैं और वही लतायें हैं परन्तु इनकी दशा वह नहीं॥

अपने बहुत से मित्र विपत्ति में विमुख हो जाते हैं॥

उस सीता देवी को प्रणाम करें जिसने उस घोर वन में वे सब क्लेश सहे ॥

इसका हाथ उसके हाथ पर रख कर राम ने कहा तुम दोनों की दृढ़ प्रीति हो गई है ॥

कई लोग समय को व्यर्थ बातों में, कई खेल में, और कई वृथा भ्रमने में खो देते हैं ॥

कौन हो ? कहां से आये हो ? क्या कार्य है ? और कहां जाते हो ?

कौन ऐसा पुरुष संसार में है जिसे धन की इच्छा न हो ॥

सप्तमःपाठः ।

हलन्त (व्यञ्जनान्त) नाम

हलन्तनामों को दो भागों में बांटा गया है—

(१) पहिले भाग में वे नाम रखे गये हैं जिन में विभक्ति के पर होने पर कोई विशेष परिवर्त्तन वा विकार नहीं होते, और—

(२) दूसरे में ऐसे नाम रखे गये हैं जिनमें विशेष परिवर्त्तन होते हैं ॥

हलन्तनामों के लिये पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में ये विभक्तियां हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	अम्	औ	अस्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु
सम्बोधन	स्	औ	अस्

नपुंसकलिङ्ग

प्र०द्वि०सं०	०	ई	इ

शेष पुल्लिङ्ग की तरह।

---

*हलन्तनामों में लिङ्ग भेद से कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं होते इस लिये तीनों लिङ्गों के नामों का उच्चारण एक ही स्थान में दिया गया है। पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में तो नामों में किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं ॥

प्रथम भाग

चकारान्त

पुंलिङ्ग

पयोमुच्

प्र० सं०	पयोमुक्-ग् ३८, ३९*	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृतीया	पयोमुचा	†पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पञ्चमी	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
षष्ठी	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
सप्तमी	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु‡

स्त्रीलिङ्ग

वाच्

प्रथमा-सं०	वाक्-ग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः

३८—हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तंहल् ॥ शब्द के अन्तिम हल्, स्त्रीप्रत्यय के आ वा ई से परे यदि स् (प्रथमा ए०), त् (प्रथम पु० ए०) स् (म० पु० ए०) हो तो इन विभक्तियों का लोप होजाता है ॥

३९—चोः कुः ॥ चवर्ग यदि पदान्त हो वा उसके परे हल् हो तो चवर्ग को क्रम से कवर्ग होजाता है ॥

* वावसाने ॥ अवसान में झल् को चर् विकल्प से होते हैं ॥ पयोमुच्+स्=पयोमुच्=पयोमुक्=पयोमुग् (झलां जशोऽन्ते)=पयोमुक्-पयोमुग् ॥

† चोः कुः, झलां जश्झशि ॥

‡ चोः कुः, आदेशप्रत्यययोः ॥ पयोमुच्+सु=पयोमुक्+सु=पये

चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्य
पञ्चमी	वाच	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाच	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचो	वाक्षु

विश्वसृज् (creator of the world)

पुलिङ्ग

प्रथमा सम्बो०	विश्वसृट्-ड् ४०	विश्वसृजौ	विश्वसृज
द्वितीया	विश्वसृजम्	विश्वसृजौ	विश्वसृज.
तृतीया	विश्वसृजा	विश्वसृड्भ्याम्*	विश्वसृड्भि·
चतुर्थी	विश्वसृजे	विश्वसृड्भ्याम्	विश्वसृड्भ्यः
पञ्चमी	विश्वसृज·	विश्वसृड्भ्याम्	विश्वसृड्भ्य
षष्ठी	विश्वसृज	विश्वसृजो	विश्वसृजाम्
सप्तमी	विश्वसृजि	विश्वसृजो	विश्वसृट्सु

तकारान्त

पुलिङ्ग

मरुत् (the wind)

प्रथमा-सम्बो०	मरुत् द्	मरुतौ	मरुत
द्वितीया	मरुतम्	मरुतौ	मरुतः
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भि·
चतुर्थी	मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्य

पञ्चमी	मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
षष्ठी	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्
सप्तमी	मरुति	मरुतोः	मरुत्सु

स्त्रीलिङ्ग

सरित् (a river)

प्र०—स०   सरित्—द्   सरितौ इत्यादि मरुत् की तरह ।

नपुंसकलिङ्ग

जगत् (the world)

प्र० द्वि० स०   जगत्—द्   जगती   जगन्ति*

शेष मरुत् की तरह ।

इन्+अन्त

पुंलिङ्ग

शशिन् (the moon)

प्रथमा	शशी ४१	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिनम्	शशिनौ	शशिनः
तृतीया	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
पञ्चमी	शशिनः	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
षष्ठी	शशिनः	शशिनोः	शशिनाम्
सप्तमी	शशिनि	शशिनोः	शशिषु
सम्बोधन	शशिन्	शशिनौ	शशिनः

४१—सौ च ॥ जिनके अन्त में इन् और हन् हो, पूषन् वा अर्यमन् शब्दों के उपधा-स्वर को दीर्घ होजाता है, यदि परे सु (प्र० एकव०) हो ॥ शशिन्+सु=शशीन् = (हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्०) शशीन्=शशी (नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य) ॥

नपुंसकलिङ्ग
भाविन्

प्र०द्वि०स० भावि भाविनी भावीनि ४२ शेष शशिन् की तरह ॥

शकारान्त
पुलिङ्ग
तादृश् (like that)

प्रथमा-स०	तादृक्-ग् ४३	तादृशौ	तादृशः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
चतुर्थी	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पञ्चमी	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
षष्ठी	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
सप्तमी	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु

दिश् (a direction)
स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा-स० दिक्-ग् दिशौ दिशः इत्यादि, शेष तादृश् की तरह ।

नपुंसक लिङ्ग ।

प्र०द्वि०स० तादृक्-ग् तादृशी तादृंशि * शेष पुलिङ्ग की तरह ।

४२—इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ॥ इन्-अन्त, हन्-अन्त, पूषन् और अर्यमन् शब्दों की उपधा को दीर्घ हो जाता है, यदि परे इ (प्रथ० द्विती० सम्बो०-बहुवचन) हो ॥

४३—क्विन् प्रत्ययस्य कुः ॥ जिस शब्द के अन्त में क्विन् प्रत्यय आया हो उसके अन्तिम वर्ण को कवर्ग हो जाता है, यदि परे कुछ न हो, झल् वा खर् हो ॥

* नपुंसकस्य झलचः ॥

सकारान्त

चन्द्रमस् (the moon)

पुंलिङ्ग ।

प्रथमा	चन्द्रमाः ४४	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्*	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	†चन्द्रमस्सु-मःसु
सम्बोधन	चन्द्रमः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

नपुंसकलिङ्ग

मनस् (the mind)

प्र० द्वि० सं०	मनः	मनसी	मनांसि ४५

शेष चन्द्रमस् की तरह ।

४४—अत्वसन्तस्य चाधातोः ॥ धातु भिन्न अत्+अन्त वा अस्+, अन्त शब्दों के उपधा स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे प्रथमा एकवचन की विभक्ति हो ॥ चन्द्रमस्+स्=चन्द्रमास्=चन्द्रमार् (ससजुषोः रुः)=चन्द्रमाः (खरवसानयोः विसर्जनीयः) ॥

* ससजुषोः रुः । हशि च ॥　　　　† वा शरि ॥

४५—सान्तमहतः संयोगस्य ॥ उन स्+अन्त शब्दों के जिनके स् से पूर्व कोई हल् हो, वा महत् शब्द के उपधा स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे सम्बोधन-एकवचन भिन्न सर्वनामस्थान विभक्ति हो ॥ मनस्+इ=मनन्स+इ (नपुंसकस्य झलचः)=मनांसि ॥

हकारान्त

मधुलिह् (a bee)

पुल्लिङ्ग

प्रथमा-स०	मधुलिट्-ड् ४६	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
तृतीया	मधुलिहा	*मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	*मधुलिड्भ्यः
पञ्चमी	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
षष्ठी	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु†

पयोमुच् (पु०) मेघ, a cloud
भिषज्(पु०)वैद्य, a physician
स्रज् (स्त्री०) माला a garland
सम्राज् (पु०) चक्रवर्ती राजा, an emperor
परिव्राज् (पु०) सन्यासी, an ascetic
हरित् (वि०) हरा सब्ज रंग of green colour
तमोनुद्(पु०) अन्धकार दूर करने वाला, one who drives away darkness
दृष(शा)द्(स्त्री०)पत्थर a rock
युयुध् (पु०)योद्धा a warrior
क्षुध् (स्त्री०) क्षुधा, hunger
आपद् (स्त्री०) विपद्, misfortune
जगत् (न०)संसार, the world
भूभृत् (पु०) राजा, पर्वत, a king, a mountain

४६—हो ढः । ह का ढ् होता है, यदि परे झल् हो या कुछ न हो ॥ मधुलिह्+स् = मधुलिह् = मधुलिढ् = मधुलिट् – ड् (झलां जशोऽन्ते; वावसाने) ॥

* झलां जशोऽन्ते ॥ † खरि च ॥

मृद् (स्त्री०) मट्टी, the earth.
विद्युत् (स्त्री०) बिजली, the lightning.
विपद् (स्त्री०) आपत्ति, misfortune.
वियत् (न०)आकाश,the sky.
सम्पद् (स्त्री०) ऐश्वर्य, prosperity.
सुहृद् (पु०) मित्र, a friend.
धनिन् (वि०) धनवान्, a rich man.
हस्तिन् (पु०) हस्ती, an elephant.
स्रग्विन् (वि०) मालाधारी, wearing a garland.
शशिन् (पु०)चन्द्र,the moon.
दण्डिन् (वि०) दण्डधारी, one having a stick
अपराधिन् (वि०) अपराधी, guilty.
कुशलिन् (वि०)सुखी, happy.
क्षयिन् (वि०) कम होता हुआ, decreasing.
पक्षिन् (पु०) पक्षी, a bird
प्राणिन् (पु०) जीव, creature.

प्रियवादिन् (वि०) प्रिय बोलने वाला, sweet-speaker.
यशस्विन् (वि०) यशवाला, famous.
अनुजीविन् (पु०) सेवक, a servant.
मेधाविन् (वि०) बुद्धिमान्, a talented person.
योगिन् (पु०) संन्यासी, an ascetic.
शिखरिन् (पु०) पर्वत, a mountain.
शूलिन् (पु०) शिव, the god Shiva.
स्वामिन् (पु०) मालिक, a master.
द्वार् (स्त्री०) द्वार, a gate.
दिश्(स्त्री०,दिशा,a direction.
दृश् (स्त्री०) आंख, the eye.
त्वादृश (वि०) तुम जैसा, like you.
एतादृश (वि०) इस जैसा, like this.
मादृश (वि०) मुझ जैसा, like me.

अन्यादृश् (वि०) दूसरे जैसा, like another
भवादृश् (वि०) आप जैसा, like you
विश् (पु०) वैश्य, a man of the third Aryan caste
तमस् (न०) अन्धकार, darkness
तेजस् (न०) दीप्ति, गरमी, light heat
द्रुह् (पु०) हानि करने वाला, one who injures
चक्षुस् (न०) नेत्र, the eye
छन्दस् (न०) छन्द, वेद, the Veda
तपस् (न०) तपस्या, religious austerity
रजस् (न०) धूलि, dust
वचस् (न०) वचन, speech
वयस् (न०) आयु, age
वासस् (न०) वस्त्र, a cloth
वेधस् (पु०) ब्रह्मा, the creator
शिरस् (न०) सिर, the head
सरस् (न०) तालाब, a tank
दिवौकस् (पु०) देवता, a god
दुर्वासस् (पु०) एक ऋषि, a sage.
नभस् (न०) आकाश, the sky
पयस् (न०) जल, water
यशस् (न०) यश, fame
रक्षस् (न०) राक्षस, a demon

EXERCISE V

(क) सतां प्रीतिर्दिक्षु प्रसरति ॥
विरक्ता मनुजा परिव्राजः भवेयुरिति शास्त्राणामाशा ॥
भिषजां सान्निपातके रुजि प्रभाविर्भवति ॥
चन्द्रिकाप्रभा नेत्रयोरानन्दं करोति ॥
वाणप्रस्थादूर्ध्वं सन्न्यासी भूत्वा जनो दण्डधारणात् दण्डीत्यभिधानं लभते ॥
सरित्सु भागीरथी सर्वश्रेष्ठां पर्यन्ति, भूभृत्सु चाद्रिमाल्यम् ॥
हयदि निरण्णो गुरु शिष्येभ्यो धर्ममुपादिशत् ॥
विद्युत् वायवेग पिपति पियो-

ततेे तावदेवाखिलं भूमण्डलं सकृदेव प्रकाशते ॥
परस्परं संघर्षात् स्रग्विणां तेषां स्रग्भ्यः पुष्पाण्यपतन् ॥
अपराधिषु प्राणिषु दयां कुर्वन्ति योगिनः ॥
ततस्ते विहगाः चक्षुषोर्विषय-मत्यक्राम्यन् ।
स्वसामर्थ्याद्धेतोर्दिवौकसा—मपि पूज्यः ॥
यथा कृष्णायां प्रतिपदि चन्द्र-विम्बं क्रमशः क्षयति तथैव शुक्लायामिदं वर्धते ॥
कुम्भकारः मृदः पिण्डात् यद् यदेवेच्छति कुरुते ॥
युद्धस्यान्ते सेनापतिः सर्वेभ्यः सुयुद्भ्य·बहूनि पारितोषकाणि वितरति ॥

संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणे न भीरुत्वम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं प्रसौति काचित् सुतं जगति ॥
मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं नतु गच्छति ॥
यद्भावि न तद्भावि भाविचेन्न तदन्यथा ॥
क्षमी दाता गुणग्राही स्वामी दुःखेन लभ्यते ॥
सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम् ।
विपत् सन्निहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दनः ॥
मनसा चिन्तितं कृत्यं वचसा न प्रकाशयेत् ॥
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ॥

(ख) इस प्रकार के सब पुरुष यदि दानी बन जायें तो आप जैसे कहां यशस्वी हो सकते हैं ॥
स्त्रियें तालाब पर जल से वस्त्र धो रही हैं ॥
मिट्टी के पात्र जैसे सुन्दर होते हैं वैसे पत्थर के नहीं ॥
योगी सदा शिव की भक्ति में आसक्त रहते हैं ॥
स्वामी अपराधी सेवकों को सदा दण्ड दें ॥
कृष्ण प्रतिपद् को प्रायः सब नक्षत्र आकाश में चमकते हैं ॥

गुरु ने शिष्यों को यह वचन कहा—'जो वृद्धों के वचन मन से पालन करते हैं वही सम्पूर्ण आयु में यश पाते हैं ॥

तप से मनुष्य का तेज बढ़ता है॥

राम ने राक्षसों के सिर काट दिये ॥

जो बादल गर्जते हैं वह बरसते नहीं ॥

नदी पर्वत से निकल कर स्थल में आती है ॥
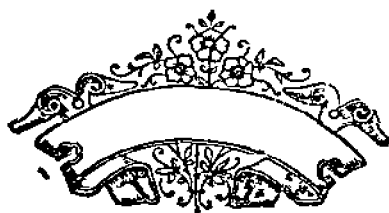
अष्टमः पाठः ।

हलन्त नाम

दूसरा भाग

दूसरे भाग के प्रत्येक शब्द के अङ्ग (base) के तीनरूप बन जाते हैं ॥

१ एक रूप ......सर्वनामस्थान विभक्तियों के पूर्व,

२ दूसरा ...... भ विभक्तियों के पूर्व,

३ तीसरा ...... पद विभक्तियों के पूर्व ॥

प्रत्येक शब्द के उच्चारण के पूर्व उसके तीन अङ्ग दिये गये हैं और उन अङ्गों के साथ उचित विभक्ति जोड़ने से प्रायः उस शब्द के रूप बन जाते हैं ॥

चकारान्त

पुंलिङ्ग ।

प्राच् (eastern)

सर्वनामस्थान	प्राञ्च्
भ	प्राच्
पद *	प्राग् (सप्त० बहुवचन—प्राक्) ।

प्रथमा-सम्बो० प्राङ् ४७, ४८ प्राञ्चौ प्राञ्चः

४७—उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ धातु भिन्न जिन शब्दों के अन्त में उक् (उ ऋ ऌ) का लोप हुआ हो (मत्, वत्, अत्) वा जिनके अन्त में अच् हो उनके अन्तिम स्वर के आगे न् जोड़ा जाता है, यदि परे सर्वनामस्थान विभक्तियें हों ॥

४८—संयोगान्तस्य लोपः ॥ शब्द के अन्त में यदि कोई संयुक्त वर्ण हों तो अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है ॥ प्राच्+स्=प्रान्+च्= प्राञ्च् (स्तोः श्चुना श्चुः)=प्राञ् = प्राङ् (क्विन् प्रत्ययस्य कुः) ॥

द्वितीया	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राचः
तृतीया	प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
चतुर्थी	प्राचे	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
पञ्चमी	प्राचः	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
षष्ठी	प्राचः	प्राचोः	प्राचाम्
सप्तमी	प्राचि	प्राचोः	प्राक्षु *

नपुंसकलिङ्ग

प्रथ०द्विती०सम्बो०	प्राक्–ग् ⊕	प्राची	प्राञ्चि

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

अत् (शतृ)+अन्त

गच्छत् (going)

पुंलिङ्ग

सर्वनामस्थान	गच्छन्त्
भ	गच्छत्
पद	गच्छद् (स० बहु० गच्छत्)

प्रथमा—सं०	गच्छन् **	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम् †	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य

* क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ आदेशप्रत्यययोः ॥

⊕ क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ झलां जशोऽन्ते, वावसाने ॥

** उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥

† झलां जश् झशि ॥

पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सं०	गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

मत् (मतुप्)+अन्त

पुंलिङ्ग

धीमत् (a talented man)

सर्वनाम स्थान ... धीमन्त्
भ ... धीमत्
पद ... धीमद् (सप्त० बहु०-धीमत्)।

प्रथमा	धीमान् ४९	धीमन्तौ	धीमन्तः
द्वितीया	धीमन्तम्	धीमन्तौ	धीमतः
तृतीया	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
चतुर्थी	धीमते	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
पञ्चमी	धीमतः	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
षष्ठी	धीमतः	धीमतोः	धीमताम्
सप्तमी	धीमति	धीमतोः	धीमत्सु
सम्बोधन	धीमन्	धीमन्तौ	धीमन्तः

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सं०	धीमत्	धीमती	धीमन्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

४९—अत्वसन्तस्य चाधातोः ॥ अतु+अन्त और अस्+अन्त अङ्गों की उपधा में ह्रस्व स्वर दीर्घ होजाता है, यदि परे प्रथमा एकवचन की विभक्ति हो ॥

वत् (वतुप्)+अन्त

पुंलिङ्ग

गुणवत् (meritorious)

प्रथमा	गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः
द्वितीया	गुणवन्तम्	गुणवन्तौ	गुणवतः
तृतीया	गुणवता	गुणवद्भ्याम्, इत्यादि धीमत् की तरह।	

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सम्बो०	गुणवत्-द्	गुणवती	गुणवन्ति

पुंलिङ्ग

महत् (great)

सर्वनामस्थाने		महान्त्
भ	...	महत्
पद		महद् (सप्त० बहु० महत्)

प्रथमा	महान् ५०	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधन	महन्	महान्तौ	महान्तः

५०—सान्तमहतः संयोगस्य ॥ महत् और संयोगान्त सकारान्त शब्दों के उपधा-स्वर को दीर्घ होजाता है, परे यदि सम्बोधन एकवचन भिन्न सर्वनामस्थान विभक्ति हो ॥ महत्+स्=महन्त्=महान्त्=महान्त् =महान् ॥

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सम्बो० महत्-द्	महती	महान्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

अन्+अन्त

पुंलिङ्ग

राजन् (a king)

सर्वनामस्थान		...	राजान्
भ		...	राज्ञ
पद्		...	राज
प्रथमा	राजा ५१	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः [illegible]
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम् [illegible]	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि-राजनि [illegible]	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	राजन्	राजानौ	राजानः

पुलिङ्ग

आत्मन् (the self, soul)

सर्वनामस्थान		आत्मान्	
भ	...	आत्मन्	
पद		आत्म	
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मान
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मन ५२
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य
पञ्चमी	आत्मन	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य
षष्ठी	आत्मन	आत्मनो	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनो	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मान

नपुंसकलिङ्ग

नामन् (name)

प्रथ० द्वितीया० सम्बो०	नाम	नाम्नी नामनी*	नामानि

शेष राजन् की तरह

नपुंसकलिङ्ग

कर्मन् (action)

प्रथ० द्विती० सम्बो०	कर्म	कर्मणी	कर्माणि

शेष आत्मन् की तरह।

५२—न संयोगाद्वमन्तात् ॥ अन् के पूर्व यदि वकारान्त या मकारान्त संयुक्त वर्ण हो तो अन् के अ का लोप नहीं होता ॥

* विभाषा ङिश्योः

तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभि
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्य
पञ्चमी	शुन	श्वभ्याम्	श्वभ्य
षष्ठी	शुन	शुनो	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनो	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्	श्वानौ	श्वान

इन्+अन्त

पुल्लिङ्ग

पथिन् (a 1o1d)

सर्वनामस्थान		पन्थान् (प्र०एकव०–पन्था)	
भ		पथ्	
पद्		पथि	
प्रथमा-सम्बो०	पन्था ५४	पन्थानौ ५५	पन्थान
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथ ५६
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्य

५४—पथिमथि ऋभुक्षामात्॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन् के इन् को आ और भ न्थ् हो जाता है यदि परे प्रथमा एक वचन की विभक्ति हो ॥

५५—इतोऽत्सर्वनामस्थाने, थो न्थ ॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन् के इ को अ और थ् को न्थ होजाता है यदि परे सर्वनामस्थान विभक्तियें हों ॥ पथिन+अम्=पन्थन+अम्=पन्थान (सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ) ॥

५६—भस्यटेर्लोप ॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन के इन् का लोप होजाता है, यदि परे भ विभक्तियें हों ॥

पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु

इसी प्रकार मथिन् का उच्चारण होता है ॥

स्त्रीलिङ्ग

अप् (water)

(केवल बहुवचन में होता है ।)

	बहुवचन
प्रथमा—सम्बो०	आपः *
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः ५७
चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु

ईयस्+अन्त, एयस्+अन्त

पुंलिङ्ग

श्रेयस् (better)

सर्वनामस्थान	...	श्रेयांस्
भ	...	श्रेयस्
पद	...	श्रेयो(सप्तमी बहु व०–श्रेयस्सु)

प्रथमा	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
द्वितीया	श्रेयांसम्	श्रेयांसौ	श्रेयसः

---

* अप् तृन् तृच् स्वसृ नप्तृनेष्टृत्वष्टृ क्षत्तृ होतृपोतृप्रशास्तृणाम् ॥

५७—अपोभिः । अप् के प् को द् होजाता है, यदि परे भकारादि विभक्तियें हो ॥

तृतीया	श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्*	श्रेयोभि
चतुर्थी	श्रेयसे	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्य
पञ्चमी	श्रेयस	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्य
षष्ठी	श्रेयस	श्रेयसो	श्रेयसाम्
सप्तमी	श्रेयसि	श्रेयसो	श्रेयस्सु
सम्बोधन	श्रेयन्	श्रेयासौ	श्रेयास

नपुसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सं० श्रेय	श्रयसी	श्रेयासि†

शेष पुलिङ्ग की तरह।

वस्+अन्त

पुलिङ्ग

विद्वस् (a learned man)

सर्वनामस्थान	विद्वान्स्
भ	विदुष
पद	विद्वद् (स० बहु-विद्वत्सु)

प्रथमा	विद्वान्	विद्वासौ	विद्वांस
द्वितीया	विद्वासम्	विद्वासौ	विदुष ५८
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्५९	विद्वद्भि

---

* ससजुषोरु, हशिच ॥

† नपुसकस्य झलच, सान्तमहत सयोगस्य ॥

५८—वसो सम्प्रसारणम् ॥ वस्+अन्त शब्दों के व को उ हो जाता है, यदि परे भ विभक्तियें हों ॥ विद्वस्+अस्=विदुस्+अस्= विदुष (आदेशप्रत्ययो) ॥

५९—वसुस्रसुध्वस्नडुहांद ॥ अनुडुह् के ह् को या जिनके अन्त में वस्, स्रस् वा ध्वस् हो उनके स् को द् हो जाता है, यदि परे पद विभक्तिय हों ॥

चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु*
सम्बोधन	विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः

मूर्त्तिमत् (वि०) मूर्त्तिमान, having a form.
यशस्वत् (वि०) यशस्वी, famous.
श्रीमत् (वि०) ऐश्वर्यवान्, prosperous.
मूर्धन् (पु०) शिर, the head.
सद्मन् (न०) गृह, a house.
सीमन् (स्त्री०) सीमा (हद), a boundary.
प्रेमन् (पु० न०) स्नेह, affection.
हेमन् (न०) सुवर्ण, gold.
अश्मन् (पु०) पत्थर, a stone.

लघिमन् (पु०) छोटापन, littleness.
ब्रह्मन् (पु०) जगत् उत्पन्न करने वाला, the creator
महिमन् (पु०) बड़ाई, greatness.
यवीयस् (वि०) छोटा, younger.
कनीयस् (वि०) छोटा, younger.
बलीयस् (वि) बलवान, stronger.
ज्यायस् (वि०) बड़ा, elder.
गरीयस् ,, भारी, heavier.
प्रेयस् (वि०) प्रियतर, dearer.
महीयस् ,, बड़ा, greater.
श्रेयस् ,, उत्तम, superior.

Exercise VI.

हेम्नः विशुद्धिं श्यामिकां चाऽग्नावेव संलक्ष्यन्ते ॥

धीमन्तो गुणवन्तश्च जगति सर्वदा यशस्वन्तो वर्त्तन्ते ॥

वरं प्राणत्यागः न पुनरीदृशि कर्मणि प्रवृत्तिः ॥

न खलु धीमतां कश्चिद्-विषयो नाम ॥

---

*वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः. सरिच ॥

इति श्रुत्वा मे प्रमोदः सीमा-
नमतिक्रामति ॥

मेघवर्णेन राज्ञा यावन्ति
वस्तूनि कर्पूरद्वीपादानीतानि
तावन्त्यस्माकं देयानि ॥

अभिवादये श्रीमन्त, आयु-
ष्मान् भव देवदत्त ॥

पश्यन्तोऽप्यस्मिन् दुस्स-
हान् क्लेशान् सहन्ते ॥

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥
महान् महत्स्वेव करोति विक्रमम् ॥
कलिङ्गलता सार्धं कीटपत्रोद्गमो यथा ॥
बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदम् ॥
धनवान् बलवाँल्लोके सर्वः सर्वत्र सर्वदा ॥
विद्यते हि न्यासभ्या भवः गुणवतामपि ॥
प्रायः स्व लघिमानं क्रोधात् प्रतिपद्यते जन्तुः ॥
सौजन्यं यदि किं निजैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः ॥
तत्क्षणेनापि दष्टस्य आयुर्मर्माणि रक्षति ॥
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥
यात्यधोऽधो व्रजत्युच्चैर्नरः स्वैरेव कर्मभिः ॥
लोकः वहति किं राजन्न मूर्ध्ना दग्धुमिन्धनम् ॥

(ख) पराधीन पुरुषों को स्वप्न
में भी सुख कहाँ ॥
भगवन् मैं प्रणाम करती हूँ,
गार्गि आयुष्मती हो ॥
सब पशुओं में कुत्तों का
अपने स्वामी में अधिक प्रेम
होता है ॥
यह वृक्ष मारनेवाला है
(मारयत्) ॥

धनवान् पुरुष को ही कई
लोग बुद्धिमान् समझते हैं ॥
यह मार्ग ऊँचा नीचा है,
यहाँ पर आपका रथ नहीं
चलेगा ॥
जितने पुरुष यहाँ बैठे हैं
उनमें सब गुणवान् नहीं हो
सकते ॥
पुरुष केवल बलसे बलवान्

नहीं होते किन्तु बुद्धि से भी ॥
इस संसार में बड़ाई वा छुटाई अपने कर्मों से ही होती है ॥
उस सभा में जो बैठे हुए हैं वह सब मूर्ख हैं ॥
हरिका बड़ा भाई केवल एक है, परन्तु छोटे बहुत (भूयस्) हैं ॥
सूर्य की गरमी से पर्वतों के पत्थर तप जाते हैं ॥
राम बड़े भाई को अधिक प्रिय (प्रेयस्) है ॥
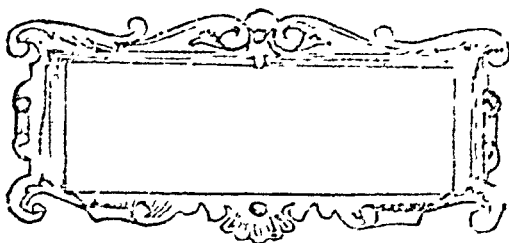
नवमः पाठः ।

संख्यावाचक शब्द (Numerals)

संख्या वाचक शब्दों के दो भेद हैं,

संख्या वाचक (cardinals) और पूरण (Ordinals)

Cardinals

१ एक	६ षष्	२० विंशति	७० सप्तति
२ द्वि	७ सप्तन्	३० त्रिंशत्	८० अशीति
३ त्रि	८ अष्टन्	४० चत्वारिंशत्	९० नवति
४ चतुर्	९ नवन्	५० पञ्चाशत्	१०० शत
५ पञ्चन्	१० दशन्	६० षष्टि	१००० सहस्र

४४—दशन् से शत पर्य्यन्त यदि दो दशकों के मध्य की संख्या बनानी हो तो उन दोनों में न्यून दशक के पूर्व एक-आदि संख्या जोड़ी जाती है ॥

यथा—षट्त्रिंशत्, चतुःसप्तति, नवनवति ॥

नव दश (९+१०), नवविंशति (९+२०) आदि की जगह एकोनविंशति (२०—१) एकोनत्रिंशत् (३०—१) आदि भी प्रयुक्त होते हैं ॥ यथा—नवचत्वारिंशत्=एकोनपञ्चाशत्, नवसप्तति=एकोनाशीति ॥

* एक one केवल (एक वचन में)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	शेष पुंलिङ्ग की तरह

* एक का उच्चारण सर्व की तरह होता है ॥

चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्
सम्बोधन	एक	एके

यदि एक का अर्थ (कुछ) हो तो इसका उच्चारण बहुवचन में भी हो सकता है ॥

द्वि=द्व (two) केवल (द्विवचन में)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	शेष पुंलिङ्ग की तरह ।
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	

* त्रि (three)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः ६०	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

* त्रि के अनन्तर जितने संख्यावाचक शब्द हैं उनका उच्चारण केवल बहुवचन में होगा ॥

६०—त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥ स्त्रीलिङ्ग में त्रि को तिसृ और चतुर् को चतसृ हो जाता है ॥

चतुर्थी	त्रिभ्य	तिसृभ्य
पञ्चमी	त्रिभ्य.	तिसृभ्य
षष्ठी	त्रयाणाम ६१	तिसृणाम
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु

चतुर (four)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वार *	चतस्र †	चत्वारि*
द्वितीया	चतुर	चतस्र	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भि	चतसृभि	चतुर्भि
चतुर्थी	चतुर्भ्य	चतसृभ्य	चतुर्भ्य
पञ्चमी	चतुर्भ्य	चतसृभ्य	चतुर्भ्य
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम	चतुर्णाम
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन् (five)

पञ्चन् से नवदशन् पर्य्यन्त शब्दों का तीनों लिङ्गों में समान उच्चारण होता है ॥

	पञ्चन् = ५	षष् = ६,	अष्टन् = ८
प्रथ०	पञ्च ६२	षट्-ड् ‡	अष्टौ-अष्ट ६३,६४

६१—त्रेस्त्रय ॥ त्रि को त्रय हो जाता है, यदि परे नाम् हो ॥

* चतुरनुडुहोरामुदात्त । सर्वनाम स्थान में चतुर् के र् के पूर्व आ जोडा जाता है † त्रिचतुरो स्त्रियांतिसृचतसृ ‡ झलांजशोऽन्ते, वावसाने

६२—षड्भ्यो लुक् ॥ पञ्चन् से नवदशन् पर्य्यन्त शब्दों के परे प्रथमा और द्वितीया विभक्ति का लोप हो जाता है ॥

६३—अष्टन आ विभक्तौ ॥ अष्टन् को विकल्प से अष्टा हो जाता है, यदि परे कोई विभक्ति हो ॥

६४—अष्टाभ्य औश् ॥ अष्टा से परे प्रथमा और द्वितीया की बहुवचन विभक्ति को औ हो जाता है ॥ अष्टन्+अस्=अष्टा+औ=अष्टौ ॥

द्वि०	पञ्च	षट्–ड्	अष्टौ–अष्ट
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	अष्टाभिः–अष्टभिः
चतु०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	अष्टाभ्यः–अष्टभ्यः
पञ्च०	पञ्चभ्यः	,,	,, – ,,
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	अष्टानाम्
सप्त०	पञ्चसु	षट्सु	अष्टासु–अष्टसु

सप्तन्, नवन्, और दशन् से नवदशन् पर्य्यन्त शब्दों का उच्चारण पञ्चन् की तरह होगा॥

४५—ति-अन्त (विंशति, षष्टि, सप्तति अशीति और नवति) शब्दों का उच्चारण मति की तरह सदा स्त्रीलिङ्ग और एक वचन में होगा॥

इसी तरह त्—अन्त (त्रिंशत्, चत्वारिंशत् और पञ्चाशत्) शब्दों का उच्चारण भी सरित् की तरह सदा स्त्रीलिङ्ग और एक वचन में होगा॥

४६—विंशत्यादि संख्यावाचक शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग और एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं॥ यथा—विंशतिर्ब्राह्मणाः, विंशतिः कमलानि, विंशतिः स्त्रियः॥

पूरण संख्यावाचक (ordinals)

एक	के क्रम से	प्रथम	first
द्वि		द्वितीय	second
त्रि		तृतीय	third
चतुर्		चतुर्थ	fourth
षष्		षष्ठ	sixth पूरण होंगे

४७—पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन् नवन् और दशन् के न् के स्थान में म होजाता है ॥

यथा—पञ्चम , सप्तम , अष्टम , नवम और दशम ॥

एकादशन् से नवदशन् पर्यन्त शब्दों के अन्तिम न् का लोप हो जाता है ॥

यथा—एकादश , द्वादश , इत्यादि

४८—विंशति से आगे सब पूरण संख्यावाचक शब्दों के अन्त में तम जोड़ने से बन जाते हैं ॥ यथा—विंशतितम , द्वात्रिंशत्तम ॥

द्वितीय और तृतीय से अन्य पूरण संख्यावाचक शब्दों का उच्चारण तीनों लिङ्गों में नामों की तरह होगा ॥

४९—प्रथम, द्वितीय और तृतीय के स्त्रीलिङ्ग रूप क्रम से प्रथमा द्वितीया और तृतीया होंगे ॥ शेष सब पूरणों के अन्त में ई जोड़ कर स्त्रीलिङ्ग रूप बन जाते हैं ॥

यथा—चतुर्थी पञ्चमी नवमी ॥
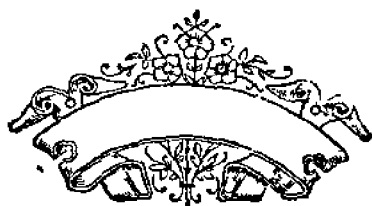
दशमः पाठः ।

स्त्री-प्रत्ययाः (Feminine-affixes)

आ (टाप्, डाप्, वा चाप्), ई (ङीप् ङीष् , वा ङीन्), ऊ (ऊङ्), और ति (क्ति) स्त्रीप्रत्यय हैं, अर्थात् इनके लगने से शब्द स्त्रीलिङ्ग बन जाता है।

आ

५०—अजाद्यतष्टाप् ॥ अकारान्त और अजादि शब्दों का स्त्रीलिङ्ग, आ (टाप्) लगने से बनता है।

यथा (१) कान्ता, कुर्वाणा, कृपणा, चतुरा, चपला, तृतीया, दक्षिणा, प्रतिकूला, भुञ्जाना, मनोहरा;

(२) अजा, एडका, (a female sheep), अश्वा, चटका (a sparrow), मूषिका, बाला, वत्सा, क्रुञ्चा (a heron), ज्येष्ठा, मध्यमा, कनिष्ठा, कोकिला, मक्षिका, बलाका, शूद्रा, वैश्या ॥

※ ई

ई प्रत्यय लगता है—

(क) अकारान्त जाति वाचक (class-names) के परे। यथा—सिंही, व्याघ्री, मृगी, भल्लूकी, हंसी, कुरङ्गी, काकी, चर्का, ब्राह्मणी, नापिती, निषादी, यक्षी।

५१—ऋन्नेभ्यो ङीप ॥ (ख) ऋकारान्तों के परे। यथा-कर्त्री, दात्री, गन्त्री, धात्री, हन्त्री, जनयित्री।

(ग) संख्या वाचकों के विना न्+अन्त शब्दों के परे।

यथा कामिनी, तपस्विनी, मायाविनी, यशस्विनी, मनोहारिणी, राज्ञी।

५२—उगितश्च ॥ (घ) जिन प्रत्ययों के अन्तिम उ का लोप हुआ हो (यथा—मत्, वत्, क्तवत्, वस्, ईयस्—अन्त) उनके के परे। यथा—श्रीमती, विद्यावती, लज्जावती, बुद्धिमती, कृतवती, विद्वस्-विदुषी, प्रेयसी, श्रेयसी।

(ङ) जिन प्रत्ययों के अन्तिम ऋ का लोप हुआ हो—यथा शत्रन्त कृदन्तों के परे। परन्तु त् के पूर्व 'न्' आगम भ्वादि, दिवादि, चुरादि, णिजन्त, सन्नन्त, और नामधातु में अवश्य, तुदादि, क्र्यादि और आकारान्त अदादि में विकल्प से होता है, शेष (अदादि जुहोत्यादि तनादि और स्वादि) में कदापि नहीं होता। यथा-भवत्—भवन्ती, गच्छत्—गच्छन्ती, पश्यन्ती, वदन्ती, दीव्यन्ती, नश्यन्ती, नृत्यन्ती, मुह्यन्ती, चोरयन्ती, चिन्तयन्ती, भक्षयन्ती, कथयन्ती, चिकीर्षत् चिकीर्षन्ती मुमूर्षन्ती, पुत्रीयन्ती, तपस्यन्ती, तुदती-न्ती, इच्छती—न्ती, पृच्छती न्ती, क्रीणती—न्ती गृह्णती—न्ती, याती,—न्ती, स्नाती—न्ती, भाती—न्ती, अदती, रुदती, जुह्वती, ददती, सुन्वती, कुर्वती।

५३—(च) स्यदन्त कृदन्तों के परे। यहां न् का आगम विकल्प से होता है। यथा भविष्यती न्ती, करिष्यती—न्ती, दास्यती-न्ती।

५४—इन्द्र आदि कतिपय शब्दों के परे "आनी" (आन्+ ई) लगता है। यथा इन्द्राणी, भवानी, रुद्राणी, वरुणानी, मातुलानी (मातुली, वा), क्षत्रियाणी (क्षत्रिया, वा), उपाध्यायानी (उपाध्याया, वा)।

५५—वोतो गुणवचनात् ॥ उकारान्त गुणवाचक विशेषणों (adjectives of quality) के परे ई विकल्प से लगता है। यथा। गुर्वी—गुरु, बह्वी—बहु, लघ्वी—लघु।

५९—इकारान्त वा ईकारान्त विशेषणों के परे कोई स्त्री प्रत्यय नहीं लगता। यथा शुचिः, सुधी।

ये निपातन सिद्ध हैं—

मनुष्य	मानुषी	श्वन्	शुनी
मत्स्य	मत्सी	राजन्	राज्ञी
	युवति	पति	पत्नी
युवन्	युवती	श्वशुर	श्वश्रू
	यूनी		

एकादशः पाठः ।

कारक-प्रकरणम् (Government)

वाक्य में क्रिया के साथ नाम के सम्बन्ध को कारक कहते हैं, जहां पर किसी नाम का क्रिया के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता उसे कारक नहीं कहते, इस लिए षष्ठी का कारक नहीं माना जाता, क्योंकि इससे क्रिया के साथ किसी सम्बन्ध का ज्ञान नहीं होता, परन्तु एक नाम का दूसरे नाम से सम्बन्ध का बोध होता है । संस्कृत में छे (६) कारक होते हैं —

कर्ता—(Subject), कर्म (Object),
करण (Instrumental), सम्प्रदान (Dative),
अपादान (Ablative) और अधिकरण Locative ॥

कर्ता (Subject)

५७—स्वतन्त्र कर्ता ॥ जो स्वतन्त्र ही क्रिया बोधित व्यापार करता है वह कर्ता होता है, कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है ॥ यथा—बालका क्रीडन्ति, नरा गच्छति ।

५८—प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा ॥ इसके अतिरिक्त प्रथमा का प्रयोग और तरह भी होता है । यथा—किसी शब्द के अविकृत रूप (crude form), लिङ्ग (gender), परिमाण (measure), और वचन (number) के बोध के लिए प्रथमा (nominative) विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा— देव, ज्ञानम्, तट, तटी, तटम्, द्रोणी, व्रीहि, एक, द्वौ, बहव ।

कर्म (Object)

५९—कर्तुरीप्सिततमं कर्म ॥ कर्मणि द्वितीया ॥ क्रिया के

व्यापार का फल (effect) जिस में रहता है वह कर्म होता है, कर्म में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा-भक्तो हरिं पश्यति ।

६०—सर्कमक धातुओं के साथ कर्म अवश्य आता है॥ यथा—पुष्पाण्यवाचिनोति, गोपी दधि विक्रीणाति ।

६१—गत्यर्थ धातुओं के योग में स्थान वोधक शब्दों में में द्वितीया वा चतुर्थी का प्रयोग होता है ॥ यथा—नगरं नगराय वा गच्छति ।

६२—उभसर्वतसोः कार्य्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीया ॥ अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि ॥ उभयतः (दोनों ओर), उपर्युपरि (ऊपर), अधोधः (नीचे), धिक् (धिक्कार), अभितः-परितः-सर्वतः (चारों ओर), समया-निकषा (समीप), हा (शोक), प्रति (ओर) अन्तरा (मध्य में) अन्तरेण (विना, उद्दिश्य) इन शब्दों के योग में द्वितीया प्रयुक्त होती है । यथा—उभयतो नदीं वृक्षा वर्तन्ते, उपर्युपरि लोकं हरिः, अधोऽधः लोकं पातालः, धिकतान् दुष्टान् ये परनिन्दारताः, अभितः-परितः-सर्वतः वह्निं प्रदक्षिणीकृतवान्, निकषा-समया सौधभित्तिं निहितं मया वस्त्रम, हा नास्तिकं यः ईश्वरसत्तां न मनुते, गतोऽसौ विद्वान् प्रति, कोन्यस्त्वामन्तरेण शक्तः प्रतिकर्तुम् ।

द्विकर्मक धातु ।

६३—अकथितञ्च ॥ संस्कृत में कुछ ऐसे भी धातु हैं जिन के साथ दो कर्मों का प्रयोग हो सकता है, उन में से एक कर्म मुख्य वा प्रधान (direct) और दूसरा गौण वा अप्रधान (indirect) कहलाता है, वक्ता की इच्छा से गौण (indirect)

कर्म किसी ऐसे कारक में भी बदला जा सकता है जिस का अर्थ वहां सङ्गत हो सके। 'द्विकर्मक' धातु ये हैं—

दुह्याच्-पच्-दण्ड् रुधि-प्रच्छि चि-ब्रू शासु-जि मन्थ-मुष्।
नी-हृ कृष-वह इत्येते धातवः स्युर्द्विकर्मकाः॥

यह और इन्हीं अर्थों के अन्य धातु द्विकर्मक होंगे॥

यथा बलिं (बलेः) याचते वसुधाम्, गां (गोः) दोग्धि पयः, तण्डुलान् (तण्डुलैः) ओदनं पचति, नृपः चौरं (चौराय) शतं दण्डयति, व्रजम् (व्रजे) अवरुणद्धि गाम्, माणवकं (माणवकात्) पन्थानं पृच्छति, वृक्षम् (वृक्षात्) अवचिनोति फलानि, माणवकं (माणवकाय) धर्मं ब्रूते—शास्ति, शतं जयति देवदत्तम् (देवदत्तात्) अमृतम् समुद्रं (समुद्रात्) अमथ्नन्, देवदत्तं (देवदत्तात्) शतं मुष्णाति, ग्रामम् (ग्रामाय) अजां नयति हरति कर्षति वहति॥

करण (Instrument)

६४—साधकतमं करणम्॥ जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है उसमें करण होता है॥ यथा—गदयाधुनैव दुर्योधनस्योरू सञ्चूर्णयामि। रामो बाणेन बालिनं हतवान्।

६५—कर्तृकरणयोस्तृतीया। कर्मवाच्य क्रिया के साथ कर्ता में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है॥
यथा—मया कृतमेतत्।

६६—येनाङ्गविकारः॥ शरीर के किसी अङ्ग में यदि विकार पाया जाय तो अङ्ग वाचक शब्द में तृतीया होती है॥
यथा—अक्ष्णा काणः, कर्णाभ्यां बधिरः, शिरसा खल्वाटः, पृष्ठेन कुब्जः।

६७—इत्थंभूतलक्षणे॥ किसी लक्षण के द्वारा यदि किसी व्यक्ति की विशेष दशा अवस्था (state) का ज्ञान हो तो

उस लक्षणवाचक शब्द में तृतीया होगी ॥ यथा—जटाभिस्तौ तापसः ।

६८—किं, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम् और इन्हीं अर्थों के अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त (used) वा आकाङ्क्षित (needed) वस्तु में तृतीया और कर्तृवाचक शब्द में षष्ठी होती है ॥ यथा—तस्य धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते, कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्, तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्, स्वामिपादानां मया किं प्रयोजनम्,

६९—अलम् (away with, no more) और कृतम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है । यथा—अलं रुदितेन, कृतमेभिः प्रलापैः ॥

७०—सहयुक्ते प्रधाने ॥ साकम्, सार्धम्, समम् और सह के साथ तृतीया विभक्ति होती है ॥ यथा—मया साकं-सार्धं-समं-सह गृहमागच्छ ।

७१—हीन-ऊन-न्यूनार्थक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है ॥ यथा—धनेन हीनाः पशुभिः समानाः ॥

सम्प्रदान (Dative)

७२—चतुर्थी सम्प्रदाने ॥ जिस को कुछ दिया जाये उसे सम्प्रदान कहते हैं; सम्प्रदान में चतुर्थी होती है ॥ यथा—याचकायान्नमयच्छत् ।

७३ क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् ॥ जिस के लिये वा जिस के निमित्त कुछ किया जाता है उस में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा—स कार्यसिद्ध्यै यतते । स यज्ञाय संभारान् क्रीणाति ।

७४—रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥ रुच् (to be pleased) वा इसी अर्थ के अन्य धातुओं के योग जो प्रसन्न होता है

तद्वाचक शब्द में चतुर्थी होती है ॥ यथा—मह्यमध्ययनं न तथा रोचते यथा क्रीड़ा; यज्ञदत्ताय स्वदतेऽपूपः ।

७५—धारेरुत्तमर्णः ॥ धृ (to owe) धातु के योग में उत्तमर्ण (creditor) में चतुर्थी होती है ॥ यथा—त्वं मे (मह्यम्) शतं धारयासि ।

७६—स्पृहेरीप्सितः ॥ स्पृह् (to desire) के योग में जिस वस्तु की इच्छा होती है उस में चतुर्थी होती है ॥ यथा—स पुष्पेभ्य स्पृहयति ।

७७—क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यंप्रति कोपः ॥ (१) क्रुध् ईर्ष्य्, द्रुह्, असूय् वा इन्हीं अर्थ के अन्य धातुओं के योग में जो क्रोध आदि का विषय (object) हो उस में चतुर्थी होती है । यथा—स हरये क्रुध्यति, रावणो रामायाद्रुह्यत् । (२)क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ॥ परन्तु यदि क्रुध्,द्रुह्, के पूर्व कोई उपसर्ग जुड़ा हो तो द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—किं मां संक्रुध्यसि, मास्मान् नित्यमभिद्रुह्य ।

७८—नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च ॥ नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है ॥ यथा—नमः गुरवे, स्वस्ति प्रजाभ्य ; अग्नये स्वाहा

७९—अलम् और इसी अर्थ के अन्य प्रभु; समर्थः, शक्तः आदि शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—अलं शूर संग्रामाय; शक्तोऽहमस्मै कार्याय ।

८०—कथ्, ख्या, शंस्, चक्ष्, नि+विद् आदि जिन का अर्थ कहना (to tell) हो, या प्र+हि, वि+सृज् आदि धातु जिनका अर्थ भेजना हो उनके योग में, जिसे कहा जाये वा

---

* क्रोधोऽमर्षः, द्रोहोऽपकारः, ईर्ष्याऽक्षमा,असूया गुणेषु दोषाविष्करणम्

जिसकी ओर भेजा जाये उस में चतुर्थी होती है ॥ यथा— आर्ये कथयामि ते (तुभ्यम्) भूतार्थम्, आख्याहि मे (मह्यम्) कतमस्तेषु रामभद्रसुतः, शंस मे (मह्यम्) तस्याः प्रवृत्तिम्, निवेदयेमान्युत्तराणि श्रीमते महाराजाय, रक्षस्तस्मै महीपालं प्रजिघाय, भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः ॥

अपादान (Ablative)

८१—ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥ जिस स्थान, पुरुष वा वस्तु से वियोग (separation) हो उसे अपादान कहते हैं, अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी ॥ यथा—अश्वात् पतति, गृहादागच्छति ।

८२—भीत्यर्थानां भयहेतुः, वारणार्थानामीप्सितः ॥ भय (fear) वा निवारण (preventing) अर्थ के धातुओं के योग में जिस से भय, लज्जा वा निवारण करना हो उस में पञ्चमी होती है ॥ यथा—स मृत्योरपि न बिभेति, स रामादपि जिह्रेति, यवेभ्यो गां निवारयति ।

८३—* जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ जन् (to be produced) और इसी अर्थ के अन्य धातुओं के योग में, जिस से उत्पत्ति हो उस में पञ्चमी विभक्ति होगी ॥ यथा—गोमयाद्वृश्चिकाः जायन्ते; कामात्क्रोधोऽभिजायते; हिमवतो गङ्गा प्रभवति ।

८४—अन्यारादितरर्ते दिक् शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥ अन्य, इतर, इसी अर्थ के अन्य शब्द वा आरात्, ऋते वा, दिशावाचक शब्दों के योग में पञ्चमी होती है ॥ यथा— मित्रादन्य इतरो वा न कोपि मां त्रातुं क्षमः; आरादेव वीथी-

---

* उत्पत्त्यर्थ धातुओं के योग में जिस से उत्पत्ति होती है उस में प्रायः सप्तमी भी होती है ॥ यथा—शुकनासस्यापि रेणुकायां तनयो जातः ॥

मुखात् मे गृहम् श्रमादृते विद्या न भवति, (ऋते के योग में द्वितीया विभक्ति भी आती है ॥ यथा—ज्ञानमृते न सुखम्), प्राक् पुरुषपुरादमृतसर प्रत्यक् तु गान्धारदेश ॥

८५—प्रभृति आरभ्य बहि, अनन्तरम् ऊर्ध्वम्, परम् आदि शब्दों के योग में पञ्चमी होती है ॥ यथा—तत प्रभृति आरभ्य मया त्यक्त सुरापानम् ग्रामाद्बहिरेक सुरम्य देवायतनम् विवाहादनन्तर स जगाम काशीम् भाग्यायत्तमस्मात् परम् ॥

८६—कारण या हेतुबोधक शब्दों के साथ पञ्चमी होती है ॥ यथा—गामानुपाण्य वधात् मया महत् पाप कृतम्, पर्वतो वह्निमान्, धूमवत्त्वात् ॥

८७—पृथक्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ॥ पृथक् विना नाना शब्दों के योग में द्वितीया तृतीया और पञ्चमी होती है ॥ यथा—नाना (without) नारीं निष्फला लोकयात्रा पृथक्-विनश्वर भक्त्या न मुक्ति ।

८८—प्रतिनिधि प्रतिदान च यस्मात् ॥ यदि कोई वस्तु दूसरी वस्तु से बदली (exchange) जाय तो जिस से बदली जाती है उस में पञ्चमी होगी ॥ यथा—तिलेभ्य प्रतियच्छति माषान् ॥

अधिकरण (Locative)

८९—आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे ॥ कर्त्ता जिस में या जिस पर व्यापार करता है उसे आधार वा अधिकरण कहते हैं अधिकरण में सप्तमी होती है ॥
यथा—स्थाल्यामोदन पचति, आसने उपविशति ॥

९०—(ख) यतश्च निर्धारणम् ॥ समुदाय में से किसी

एक व्यक्ति वा वस्तु के चुनाव को निर्धारण कहते हैं; निर्धारण में समुदायवाचक शब्द में षष्ठी वा सप्तमी होती है ॥ यथा—नृणां-नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः; गच्छतां-गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः ॥

सम्बन्ध (Genitive)

९१—षष्ठी शेषे ॥ जब किसी वस्तु वा व्यक्ति का दूसरी वस्तु वा व्यक्ति से कोई सम्बन्ध हो तो उस सम्बन्ध को प्रकाश करनेके लिये षष्ठी का प्रयोग होता है। यथा-जनकस्य दुहिता दशरथस्य पुत्रं परिणिनायः, राज्ञः पुरुषाः स्तेनमदण्डयन् ।

९२—कृत्यानां कर्तरि वा ॥ विध्यर्थकृदन्त (तव्य, य अनीय-अन्त शब्दों) के साथ कर्म में षष्ठी वा तृतीया होती है ॥ यथा—मया-मम वा सेव्यो हरिः ।

९३—तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ॥ तुल्यार्थ शब्दों के योग में उस शब्द में तृतीया वा षष्ठी होती है जिससे तुलना करनी हो ॥ यथा—मात्रा-मातुर्वा सदृशेयं कन्या ॥

EXERCISE VIII.

(क) मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनम्प्रति ॥

क इदानीं राजानमन्तरेण तमेनस्मात् साहसान्निवारयितुं क्षमः ॥

धिक् तं श्रियो मदेन गर्वितम् ॥

स चात्र विश्रामहेतोः कतिपयान् दिवसानतिष्ठत् ॥

अलं बहुप्रलापेन ॥

कृतमतिविवादेन ! अनित्येऽत्र संसारे ईदृश्येव दशा नराणाम् ॥

किं बहुना, यत् कारिष्ये तत् श्रूयताम् ॥

चपलोऽयं वटुः कदाचिदस्मत्प्रार्थनामन्तःपुरेऽपि कथयेत् ॥

स्पृहयति खलु दुर्विनीतोऽन्येषां दोषप्रकाशनाय ॥

मूर्ख, नैव तव दोषः, साधो शिक्षा गुणाय सम्पद्यते नासाधोः ॥

एवं पृष्टेन तेनात्मजन्मन आरभ्य पितृमृत्युपर्यन्तं सर्वमेव वृत्तं कथितम् ॥

यदि मद्वचनात् देवदत्तस्त्वद्दैतत् पारितोषिकं तस्मै देयम् ॥

पण्डितम्मन्या राजान आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति

सचिवोपदेशाय कुप्यन्ति हितवादिने ॥

स्वस्ति ते, साधयामो वयम् ॥

नास्ति जीवनादन्यदभिमततरमिह जगति जन्तूनाम् ॥

विरमातिप्रसङ्गात् ॥

कर्ममार्गात् भक्तिमार्गः श्रेयान्, श्रेष्ठस्तु सर्वेषु ज्ञानमार्गः ॥

न किञ्चिदप्यसाध्यं महीपतीनाम्, तेषामकार्यमपि कर्तव्यम्, अद्रष्टव्यमपि द्रष्टव्यम्, अश्रोतव्यमपि श्रोतव्यम् ॥

एष मे जनकस्तिष्ठति स परं स्निग्धो मयि ॥

किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः ॥

विष्णुना सदृशो वीर्ये, क्षमया पृथिवीसमः ॥

वर्धनाद्रक्षणं श्रेयस्तदभावे सदप्यसत् ॥

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।

बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥

नहि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः ॥

सङ्गात् सञ्जायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त (—) स्थानों को पूर्ण करो और जिन शब्दों के अन्त में कोई विभक्ति नहीं, वहां पर विभक्ति लगाओ :—

(अस्मद्) द्रुह्यंस्त्वं कथं (लोकवाद) न बिभेषि ॥

त्वाम् (—) न कोऽप्येतत् साधयितुं क्षमः ॥

सीता रामेण (–) वनं ययौ ॥

ऋते (श्रम) कार्यसिद्धिर्दुष्करा ॥

यथा (विद्या) सुखं लभ्यते न तथा (धन) ॥

अन्यः (ईश्वर) न कोपि माम् (इदम्) कष्टात् उद्धर्तुं क्षमः ॥

वैशाखात् (—) चैत्रं यावत् वर्षः संपद्यते ॥

प्रतिजानामि यत् अतः (—) न कदाप्येवं विधास्ये इति ॥

भीमः एकाकी (–) दोर्भ्यामेव प्रभूतानां शत्रूणाम् निपातनाय ॥

प्रयच्छेमं संदेशं मे (भार्या) ॥

यद् (भवत्) रोचते तदेव संपादयिष्ये ॥

(नूपुर) रजतम्मया क्रीतम् कुण्डलेभ्यश्च सुवर्णम् ॥

तस्मै ईश्वराय (–) येनेदं सकलं जगत्सृष्टम् ॥

कुतः (अस्मद्) विघ्नः (रक्षितृ) त्वयि विद्यमाने ॥

(–) नदीम् वृक्षाः वर्तन्ते ॥

धिक् (तद्) ये सतोऽपि (कुपथ) नयन्ति ॥

इन्द्रप्रस्थम् (इदम्) प्रदेशात् (चतुर् योजन) ॥

(दशरथ) सुतः रामः (भारद्वाज) आश्रमं प्राप्य (एक दिवस) तत्र न्यवसत् ।

सर्वदा (स्वदेश) एव निवासः (जन) अनुभवं न वर्धयति ॥

(तद् राजन्) न तथानुरक्ताः प्रजा यथा (नत् पुत्र) ॥

(स्वभाव) सरलः लोकै- वञ्च्यते ॥

द्वादशः पाठः ।

अव्यय (INDECLINABLES)

जो शब्द सब लिङ्ग, विभक्ति, और वचन में समान हो रहते हैं, वे अव्यय हैं * ॥

अव्यय दो प्रकार के हैं —

(१) उपसर्ग (Prepositions) और (२) निपात (Particles, Adverbs and conjunctions)

९३—उपसर्ग वे अव्यय हैं जो शब्दों के पूर्व संयुक्त हो कर प्रयुक्त होते हैं और इन के संयोग से धातु के साधारण अर्थ में प्रायः परिवर्तन हो जाता है † ॥ यथा गच्छति-जाता है, परन्तु अधिगच्छति जानता है और संगच्छते मिलता है ॥

उपसर्ग ये हैं—प्र परा, अप, सम्, अनु अव निस्, निर्, दुस् दुर्, वि आङ्, नि, अधि, अपि अति सु, उत, अभि, प्रति, परि उप ॥

निपात ।

उपसर्गों से भिन्न सब अव्यय निपात कहलाते हैं। निपातों की संख्या बहुत अधिक है। अतः उन में से कतिपय अति प्रसिद्ध यहां दिये जाते हैं ॥

---

* सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

† उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहाराहारसंहार विहार परिहारवत् ॥

अकस्मात्
अग्रतः
अग्रे
अति
अतिमात्र
अतीव
अत्यर्थम्
अत्र
अथ
अथवा
अद्य
अधस्
अधस्तात्
अधुना
अन्तर्
अन्तरेण
अन्यथा
अन्येद्युः
अपरेद्युः
अपि
अलम्
अवश्यम्
अहह
अहो
आरभ्य
आशु

इतः
इति
इत्थम्
इदानीम्
इव
इह
ईषत्
उच्चैः
उत
उपरि
उपरिष्टात्
ऋते
एकदा
एव
एवम्
कथम्
किञ्चित्
किम्
किमुत
कुतः
कुत्र
कृते
केवलम्
क्व
खलु
च

चिरम्
चिरात्
चिराय
चिरेण
चेत्
जातु
झटिति
तत्
ततः
तत्र
तथा
तथापि
तथाहि
तदा
तदानीम्
तावत्
तु
दिवा
दूरम्
दूरात्
दूरे
द्राक्
द्रुतम्
धिक्
न
नहि

नो
नक्तम्
ननु
नमस्
नाना
नाम
नित्यम्
नीचैः
नु
नूनम्
परतः
परस्तात्
परम्
परश्वः
परेद्युः
पश्चात्
पुनः
पुरस्
पुरतः
पुरस्तात्
पुरा
पूर्वम्
पूर्वेद्युः
पृथक्
प्रत्युत
प्रभृति

प्रातः
प्रायः
प्रायशः
प्रायेण
बहिः
बहुशः
भृशम्
मनाक्
मा
मास्म
मिथस्
मिथ्या
मुधा
मुहुः
मृषा
यत्
यतः
यत्र
यथा
यदा
यदि
यद्यपि
यावत्
युगपत्
येन
रे

परम्	सपदि	साक्षात्
वा	समक्षम्	सांप्रतम्
विना	समम्	सायम्
वृथा	समन्ततः	सार्धम्
वै	समन्तात्	सुष्ठु
शनैः	समीपे	स्थाने
शश्वत्	सम्यक्	स्वयम्
शीघ्रम्	सर्वतः	हि
श्वस्	सर्वथा	हे
सकृत्	संवत्	ह्यस्
सततम्	सह	
सदा	सहसा	
सद्यस्	साकम्	
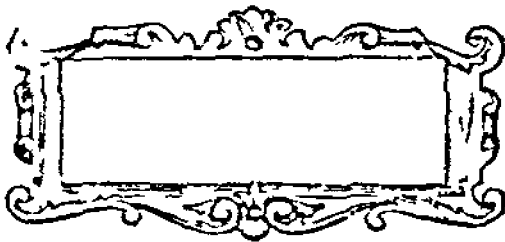
त्रयोदशः पाठः ।

विशेषण ।

९४—दो पुरुष वा पदार्थों में यदि एक के गुण दूसरे की अपेक्षा न्यून वा अधिक हों तो वहां तुलनावाचक विशेषण (comparative) का प्रयोग होगा ॥

९५—दो से अधिक पुरुष वा पदार्थों में यदि एक के गुण सब की अपेक्षा उत्तम हों तो वहां अतिशयवाचक (superlative) का प्रयोग होता है ॥

९६—प्रायः विशेषण के अन्त में 'तर' लग कर तुलनावाचक बनता है और तम लगाने से अतिशयवाचक बनता है ॥ यथा—लघुतरः, लघुतमः॥ तस्मात् अयं वृक्षः लघुतरः, तेषु वृक्षेषु लघुतमः अयं वृक्षः ॥

९७—केवल गुणवाचक विशेषणों (adjectives of quality) के अन्त में तुलना (comparative) में ईयस् और अतिशय (superlative) में इष्ठ लगाये जाते हैं ॥

९८—'ईयस्' और 'इष्ठ' के पहिले शब्द के अन्त के स्वर का और यदि शब्द के अन्त में व्यञ्जन हो तो उस व्यञ्जन और उस से पहिले स्वर दोनों का लोप होजाता है ॥ यथा-लघु+ईयस्=लघीयस् *, लघु+इष्ठ=लघिष्ठ, महत्+ईयस्=महीयस्, महत् + इष्ठ=महिष्ठ, बलिन् + ईयस्=बलीयस्, बलिन्+इष्ठ=बलिष्ठ ॥

---

* जिन शब्दों के अन्त में ईयस् है उन के उच्चारण के लिये देखो (पृष्ट ६२), 'इष्ठ,अन्त वाले शब्दों का उच्चारण तीनो लिंगों में साधारण अकारान्त वा आकारान्त (स्त्रीलिं०) शब्दों की तरह होगा ॥

नीचे लिखे शब्द निपातनसिद्ध (irregular) हैं :—

शब्द	अर्थ	comp	supe.
युवन्	युवक	यवीयस्	यविष्ठ
		कनीयस्	कनिष्ठ
अल्प	छोटा	कनीयस्	कनिष्ठ
		अल्पीयस्	अल्पिष्ठ
प्रशस्य	स्तुतियोग्य	ज्यायस्	ज्येष्ठ
		श्रेयस्	श्रेष्ठ
वृद्ध	पुराना	ज्यायस्	ज्येष्ठ
		वर्षीयस्	वर्षिष्ठ
अन्तिक	समीप	नेदीयस्	नेदिष्ठ
बहु	बहुत	भूयस्	भूयिष्ठ
स्थूल	मोटा	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
दूर	दूर	दवीयस्	दविष्ठ
ह्रस्व	छोटा	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ
क्षिप्र	शीघ्र	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ
क्षुद्र	छोटा	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ
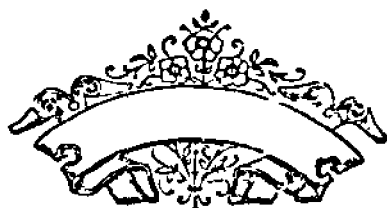
चतुर्दशः पाठः ।

समासप्रकरणम् (compounds)

बहुत सी भाषाओं में जब परस्पर सम्बन्ध वाले शब्दों का प्रयोग करना हो, तो इच्छानुसार उन को आपस में मिला कर एक शब्द की तरह भी व्यवहार में लाया जाता है ॥

यथा—'गङ्गा का तीर', 'संगीत में प्रवीण', 'राम और कृष्ण', 'श्वेत मुख वाला' इत्यादि शब्द समूहों के स्थान में 'गङ्गातीर' 'संगीतप्रवीण' 'रामकृष्ण' 'श्वेतमुख' इत्यादि प्रयुक्त हो सकते हैं। एवं इङ्गलिश में भी Class-fellow, hand-made, Bed-chember इत्यादि इसी प्रकार के मिले हुये शब्द हैं। ऐसे संघटित शब्दों को 'समस्त' *अथवा 'समास' (compounds) कहते हैं ॥

---

* संस्कृत में जिस तरह दो पदों का समास होता है, इसी तरह दो समस्त पदों का भी परस्पर समास होता है, और फिर उसका तीसरे पद वा समस्त पद से समास हो जाता है; इस प्रकार संस्कृत भाषा में प्रायः ऐसे समास बहुत मिलते हैं जिन में बहुत से भिन्न समास मिला कर एक समास बनाया गया हो। यथा—"अवशेन्द्रियचित्तः" में प्रथम 'इन्द्रियाणि च चित्तं चेति' इन्द्रियचित्तानि (द्वन्द्व); फिर अवशानि इन्द्रियचित्तानि यस्य सः' (बहुव्रीहि) समास होगया है, इस प्रकार के समस्त पदों में जो अन्त में समास हुआ हो उसी नाम से वह समझा जाता है अथवा जो समास पूर्व हुआ हो वह भी उसके साथ दिखाया जाता है ॥ यथा—द्वन्द्वमध्यबहुव्रीहि, जिसमें पहिले द्वन्द्व और समास के अन्त में बहुव्रीहि हुआ हो। इसी तरह तत्पुरुषमध्यद्वन्द्व, अव्ययीभाव-मध्यतत्पुरुष, इत्यादि ॥

शब्दों में जो सम्बन्ध होते हैं वह कई प्रकार के होते हैं, अत सम्बन्ध-भेद के अनुसार समासों के पृथक् २ विभाग हैं जिन में ये मुख्य हैं—द्वन्द्वसमास (Copulative compounds), तत्पुरुषसमास (Determinative compounds), कर्मधारयसमास (Appositional compounds), द्विगु समास (Numeral compounds), बहुव्रीहि-समास (Relative or Attributive componnds), अव्ययीभाव समास (Indeclinable or Adverbial compounds)

९९—जब शब्दों को मिलाया जाए तो प्रत्येक शब्द के अन्त में जो विभक्ति असमस्त दशा में हो उसका समास में लोप हो जाता है। फिर समस्त पद के अन्त में उचित विभक्ति लगाई जाती है॥ यथा—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ, पीतानि अम्बराणि यस्य स पीताम्बर ॥

१००—समास के मध्य में यदि किसी शब्द के अन्त में न् हो तो उस न् का लोप होजाता है॥ यथा—राजन् पुत्र = राजपुत्र ॥

१ द्वन्द्व-समास (Copulative)

१०१—चार्थे द्वन्द्व ॥ द्वन्द्व समास वह है जो ऐसे दो अथवा दो से अधिक शब्दों में हो जिन का सम्बन्ध 'च' (and) से प्रकट होता है॥ यथा—हरिश्च हरश्च हरिहरौ, रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्ना, देवाश्च गन्धर्वाश्च मानुषाश्च उरगाश्च राक्षसाश्च = देवगन्धर्व-मानुषोरगराक्षसा ॥

१०२—(क) जब दो एकवचन के शब्द ऊपर लिखित रीति से मिलाये जाएं तो समस्तपद द्विवचनान्त होता है॥

१०३—(ख) यदि शब्द दो से अधिक हों, अथवा भिन्न वचन के हों तो बहुवचनान्त होता है॥

१०४—(ग) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ जो अन्त के शब्द का लिङ्ग हो वही समस्तपद का भी लिङ्ग होता है ॥ यथा—लवश्च कुशश्च = लवकुशौ; पार्वती च परमेश्वरश्च = पार्वतीपरमेश्वरौ; हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च = हेमन्तशिशिरवसन्ताः ।

१०५—जिस द्वन्द्व समास से किसी समुदायविशेष अर्थात् समाहार (a complex idea or an aggregate) का बोध हो, उस को समाहारद्वन्द्व समास कहते हैं; और वह सर्वदा नपुंसक लिङ्ग और एकवचन में प्रयुक्त होता है, समाहारद्वन्द्व ऐसे शब्दों में सदा होता है जिन के नीचे लिखे अर्थ हों—

(१) द्वन्द्वश्चजातितुर्यसेनाङ्गानाम् ॥ जीवों के अङ्ग, सेना के विभाग,

(२) जातिरप्राणिनाम् ॥ निर्जीव द्रव्य ।

(३) क्षुद्रजन्तवः ॥ क्षुद्रजन्तु (कीटादि) ।

(४) येषाञ्चविरोधः शाश्वतिकः ॥ वह पशु जिन में सहज वैर हो, इत्यादि ॥ यथा—पाणी च पादौ च एषां समाहारः = पाणिपादम्, दन्ताश्च ओष्ठश्च एषां समाहारः = दन्तोष्ठम्, रथिकाश्च अश्वारोहाश्च एषां समाहारः रथिकाश्वारोहम्, यूकाश्च लिक्षाश्च एषां समाहारः यूकालिक्षम्, अहिश्च नकुलश्च अनयोः समाहारः = अहिनकुलम्, काकाश्च उलूकाश्च एषां समाहारः = काकोलूकम् ॥

तत्पुरुष (Determinative.)

१०६—तत्पुरुषसमास ऐसे दो पदों में होता है जिन में से पहिला पद दूसरे पद के अर्थ की व्यवस्था अथवा निर्धारण करता है ॥ यथा—राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः, इस में दूसरे पद 'पुरुष' से पुरुषमात्र का बोध होता है, परन्तु पूर्वपद 'राज्ञः'

के साथ प्रयोग से राजा के पुरुष का ही बोध होता है और किसी का नहीं ॥

१०७—तत्पुरुष समास के ऐसे सम्बन्ध को प्रकट करने के लिये पूर्व पद द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्ति में हो सकता है, अत इन विभक्तियों के अनुसार उस समास का नाम भी द्वितीया-तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष इत्यादि होता है ॥

द्वितीया तत्पुरुष ।

१०८—द्वितीया श्रितातीत पतित गतात्यस्त प्राप्तापन्नैः ॥ श्रित, अतीत पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त. आपन्न, गमी, बुभुक्षु इत्यादि शब्दों के साथ द्वितीयान्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—कृष्णं श्रित = कृष्णाश्रित , शोकम् अतीत = शोकातीत , दुःखम् आपन्न = दुःखापन्न., ग्रामं गमी = ग्राम-गमी, अन्नं बुभुक्षु = अन्नबुभुक्षु ॥

तृतीया-तत्पुरुष ।

१०९—पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ॥ पूर्व, सदृश, सम, ऊन, ऊनार्थक—शब्द, कलह, निपुण, मिश्र श्लक्ष्ण, इत्यादि शब्दों के साथ तृतीयान्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—मासेन पूर्व = मासपूर्व , पित्रा सम = पितृसम ,माषेण ऊनम् = माषोनम्, माषेण विकलम् = माषविकलम्, वाचा कलह. = वाक्कलह , आचारनिपुण , आचारश्लक्ष्ण ,गुडमिश्र ॥

११०—कर्तृकरणे कृता बहुलम् ॥ कृदन्त पदों (verbal derivatives) के साथ ऐसे तृतीयान्त पूर्व पदों का समास होता है जिन में कर्ता वा करण का बोध हो ॥ यथा—रामेण दत्त = रामदत्त , हरिणा त्रात = हरित्रात , असिना छिन्न = असिच्छिन्नः, देवेन दत्त = देवदत्त ॥

चतुर्थी-तत्पुरुष ।

१११—चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥ अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि शब्दों के साथ चतुर्थ्यन्त पूर्व पद का समास होता है यथा—द्विजाय अयं=द्विजार्थः * [सूपः], द्विजाय इदम्=द्विजार्थम् (फलम्), देवेभ्यो बलिः= देवबलिः, भूतेभ्यो हितं=भूतहितं, गुरवे रक्षितम्=गुरुरक्षितम्॥

११२—वह पद जो किसी साधनवस्तु अर्थात् प्रकृति का वाचक हो ऐसे चतुर्थ्यन्त पूर्व पद के साथ समस्त होता है जो उसी साधनवस्तु से बनता हो ॥ यथा—कुण्डलाय हिरण्यम् = कुण्डलहिरण्यम्, यूपाय दारु=यूपदारु॥

पञ्चमी-तत्पुरुष ।

११३—पञ्चमी भयेन ॥ भय, भीत, भीति, भी आदि शब्दों के साथ पञ्चम्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा— चोरात् भयम् = चोरभयम्, व्याघ्रात् भीतः=व्याघ्रभीतः, व्याघ्रभीतिः ॥

११४—अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥ कुछ स्थानों में अपेत, अपोढ़, मुक्त, पतित, अपत्रस्त शब्दों के साथ पञ्चम्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—सुखात् अपेतः सुखापेतः, स्वर्गात् पतितः=स्वर्गपतितः, तरङ्गेभ्यः अपत्रस्तः= तरङ्गापत्रस्तः ।

---

* वह समास जिनके विग्रहवाक्य (expound or analysis) में ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जो समास में विद्यमान नहीं होते, अथवा जिन समासों का विग्रहवाक्य ठीक बनता ही नहीं, नित्य समास कहलाते हैं। 'द्विजाय अयं' द्विजार्थः समास का विग्रहवाक्य है, इस में अर्थ शब्द विद्यमान नहीं परन्तु समास द्विजार्थः में है, अतः द्विजार्थः एक नित्य समास है ॥

षष्ठी तत्पुरुष ॥

११५—साधारणतया बहुत से शब्दों के साथ षष्ठ्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः, नद्याः जलम्= नदीजलम्, शिवस्य मन्दिरम् =शिवमन्दिरम्, गुरोः उपदेशः =गुरूपदेशः ॥

११६—न निर्धारणे ॥ जब षष्ठी का अर्थ निर्धारण (specification) हो तो समास नहीं हो सकता ॥ यथा—नृणां द्विजः श्रेष्ठः, सतां षष्ठः, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः ॥

सप्तमी-तत्पुरुष

११७—सप्तमी शौण्डैः सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥ शौण्ड धूर्त प्रवीण पटु पण्डित कुशल, निपुण चपल,सिद्ध शुष्क पक्व, आदि शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पूर्व पद का समास होता है ॥ यथा—अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः, वाचि पटुः = वाक्पटुः सभापण्डितः आतपशुष्कः स्थाल्यां पक्वः = स्थालीपक्वः ॥

११८—जब 'अधि' सप्तम्यन्त पूर्व पद के साथ समस्त हो तो अधि के आगे ईन प्रत्यय लगता है ॥ यथा—ईश्वरे अधि= ईश्वराधीन, दैवे अधि = दैवाधीन राज्ञि अधि = राजाधीन ॥

३ कर्मधारयसमास (Appositional compound)

११९—पर्वतः मेघ इव श्यामः' (पर्वत मेघ की तरह काला है) इस वाक्य में पर्वत की उपमा (comparison) मेघ से की गई है, इस से प्रकट है कि पर्वत भी श्याम है और मेघ भी श्याम है और उनका जो साधारण गुण श्याम वर्ण है यही उपमा का हेतु है, अतः ऐसे गुण को साधारण धर्म (common quality) कहते हैं, और जिसकी उपमा की

जाए उसको उपमेय (the object of comparison) कहते हैं, और जिसके द्वारा किसी की उपमा की जाए, उसे उपमान (the stardard of comparison) कहते हैं ॥ यथा—'पर्वत' यहां उपमेय है, और 'मेघ' उपमान है। एवं 'पुरुषः व्याघ्र इव शूरः' इस वाक्य में 'पुरुषः' उपमेय है 'व्याघ्र.' उपमान है, और 'शूरः' उपमेय और उपमान दोनों के साधारण धर्म को प्रकट करता है।

१२०—उपमानानि सामान्य वचनैः ॥ वह पद जो उपमा में साधारण धर्म को प्रकट करते हैं, उपमानवाचक पूर्व पदों के साथ समस्त होते हैं। ऐसे समास को उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं ॥ यथा—घनइव श्यामः = घनश्यामः, हिममिव शिशिरम् = हिमशिशिरम् ॥

१२१—उपमितं व्याघ्रादिभि सामान्याप्रयोगे ॥ उपमानवाचक पदों के साथ उपमेयवाचक पूर्व पदों का समास होता है, जिसको उपमानोत्तरपदकर्मधारय कहते हैं ॥ यथा—पुरुषो व्याघ्र इव = पुरुषव्याघ्रः, मुखं कमलमिव = मुखकमलम्, करः पल्लव इव = करपल्लवः ॥

१२२—विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥ बहुत से विशेष्यों का विशेषण पूर्वपदों के साथ समास होता है, जिसको विशेषण पूर्वपदकर्मधारय कहते है ॥ यथा—नीलमुत्पलम् = नीलोत्पलम्, कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः, गभीरो नादः = गभीरनादः ॥

द्विगुसमास के अन्त में नपुंसकलिङ्ग और एकवचन प्रयुक्त होता है ॥ यथा चतुर्णां युगानां समाहार = चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्, त्रयाणां पथां समाहार = त्रिपथम्, पञ्चानां पात्राणां समाहार = पञ्चपात्रम्, पञ्चपात्रम्, पञ्चगवम् ॥

१२४—अकारान्त द्विगु कभी कभी ईकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) होजाता है ॥ यथा—त्रयाणां लोकानां समाहार = त्रिलोकी, सप्तानां शतानां समाहार =सप्तशती, त्रिशती, शताब्दी, चतुष्पदी ॥

५—बहुव्रीहिसमास (Attributive compound)

१२५—बहुव्रीहि समास उन दो या अधिक पदों में होता है जो मिलकर किसी अन्य पद का विशेषण हो जाते हैं, और जिनके विग्रहवाक्य में यत् सर्वनाम की प्रथमा से भिन्न कोई न कोई विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है॥ यथा—पीतं अम्बर यस्य स =पीताम्बर (हरि), यहां 'पीत' और 'अम्बर' दोनों पद मिल कर, एक अन्य पद 'हरि' का विशेषण हो गए हैं। कृतं कर्म येन स कृतकर्मा; दत्त धन यस्मै स दत्तधन, वीरा पुरुषा यस्मिन् स वीरपुरुष (ग्राम), चक्र पाणौ यस्य सः चक्रपाणि, चन्द्रस्य इव कान्ति यस्य स चन्द्रकान्ति ॥

१२६—तेनसहेतितुल्ययोगे, वोपसर्जनस्य ॥ 'सह' अव्यय का तृतीयान्त शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास होता है, और 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है ॥ यथा—पुत्रेण सह= सहपुत्र वा सपुत्र ॥

६—अव्ययीभाव-समास (Adverbial compounds)

१२७—अव्ययों और अन्य शब्दों का अव्ययीभाव समास होता है, और वह क्रियाविशेषण (Adverb) की तरह नपुंसकलिङ्ग और द्वितीया के एकवचन में ही प्रयुक्त होता है ॥ यथा—हरौ = अधिहरि, विष्णो पश्चात् = अनुविष्णु ।

१२८—अव्ययीभावसमास में अन्त का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। 'ए' वा 'ऐ' को 'इ' और 'ओ' वा औ को 'उ' होता है॥ यथा—गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम्, गोः पश्चात् . अनुगु, नावम् अतिक्रान्तं = अतिनु (जलम्)।

१२९—अनश्च॥ अन्त के न् का लोप हो जाता है, और यदि वह 'न्' नपुंसकलिङ्ग वाचक शब्द का हो तो लोप विकल्प से होता है॥ यथा—राज्ञः समीपम् = उपराजम्, आत्मनि=अध्यात्मम्, उपचर्मम् वा उपचर्म॥

१३०—बहुत से व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त में 'अ' लगाया जाता है। यथा—शरदः समीपम् = उपशरदम्, दिशोर्मध्ये = अपदिशम्॥

१३१—प्रतिपरिसमनुभ्योऽक्ष्णः॥ अव्ययीभाव समास में पर, सम्, प्रति, अनु के परे अक्षि को अक्ष हो जाता है॥ यथा—अक्ष्णः परं = परोक्षम् (निपातसिद्ध), समक्षम्, प्रत्यक्षम्, अन्वक्षम्॥

उपपद-समास॥

१३२—जब किसी सुबन्त पद (नाम) के पूर्व होने के कारण से ही कोई कृदन्त शब्द बनता है तो उस पद से मिले हुए कृदन्त को उपपद समास कहते हैं, क्योंकि जिस सुबन्त पद से परे होने के कारण धातु में कृत् प्रत्यय होता है, उस को उपपद कहा जाता है॥ यथा—कुम्भम् करोति इति कुम्भकारः, प्रभाकरः, सूत्रकारः, मंत्रकारः, निशाचरः, हितकरः, जलचरः, धनदः, पादपः, द्विजः॥

एकशेष-समास॥

१३३—(क) जब दो वा अधिक पद एक ही विभक्ति के और समान रूप के (अथवा भिन्न रूप के परन्तु समान अर्थ

के) समस्त हों तो उन में से एक ही शेष रह जाता है, अतः इस को एकशेषसमास कहते हैं।

१३३-पुमान् स्त्रिया ॥ जब पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के पद समस्त हों तो पुंलिङ्ग शेष रहता है। यथा—हंसी च हंसश्च = हंसौ, शिवाच शिवश्च = शिवौ ॥

१३४-नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चान्यतरस्याम् ॥ यदि नपुंसकलिङ्ग का कोई पद साथ हो तो वही शेष रहता है॥

भिन्न रूप शब्दों के और उदाहरण यह हैं—

१३५-पिता मात्रा ॥ यथा-माताच पिताच = पितरौ (parents)

१३६-भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥ भ्राता च स्वसा च =भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च = पुत्रौ ॥

१३७-श्वशुरः श्वश्र्वा ॥ श्वश्रूश्च श्वशुरश्च = श्वशुरौ ॥

EXERCEIS IX.

(क) यद्येवं नकुलबिल्द्वारात् सर्पकोटरं यावन्मांसशकलानि प्रक्षिप ॥

विजयेतां रामलक्ष्मणौ कुम्भकर्णमेघनादौ ॥

जन. यावद्वित्तोपार्जनशक्तो भवति तावन्निजपरिवारो रक्तः॥

अये, वनेदेवतेयं फलकुसुमपल्लवार्घ्येण मामुपतिष्ठते ॥

सप्तीतालक्ष्मणाभ्यां रामः कतिपयान्यहानि पञ्चवट्यामुषित्वा तत प्रतस्थे ॥

आश्विनस्याद्ये नवरात्रे दुर्गायामहोत्सव क्रियते ॥

जगतः पितरौ वंदे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

असावैन्द्रजालिकः उपराजमेत्य तस्य समक्षमेव अद्भुतं स्वकौशलजातं प्रदर्शितवान् ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥

रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानि च ।
आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम् ॥

(ख) इन में जो पद "　　" चिह्न में छप हैं उन का समास बनाओः—

आसीत् कश्चिद्राजा शूद्रकोनाम "यस्य शासनं प्रभूतानां नरपतीनां शिरोभिस्समभ्यर्चित" मासीत् ॥

स "शुभ्रस्य शयनस्य तले निषण्णं" पितरमपश्यत् ॥

"भरतस्याग्रजः, कौशल्याया आनन्दस्य वर्द्धयिता, दशरथस्य पुत्रो" रामः "सीतालक्ष्मणाभ्यां सह" वनं जगाम ॥

"नद्याः समीपे" यत्र बहवः वृक्षाः वर्तन्ते तत्र मां प्रतिपालय ॥

'वाचा, मनसा, कर्मणा' च मया न कदाचित्तेऽहितमाचरितम् ॥

"येषां कुलं समानं येषाञ्च विद्या समाना" तेषामेव विवाहः कार्य्यः ॥

जनता तादृशे राजनि न कदाचिदपि स्निह्यति "यस्याचारोऽशुद्धः" ॥

" त्रिष्वेव लोकेषु " अस्य यशः प्रसृतम् किम्पुन"रस्याः भुवस्तले" ॥

"अग्निना कृतो व्रणः" पुनरपि विरोपयितुं शक्यः परं "वाचाग्निनेव कृतः" स पूर्वां प्रकृतिमापादयितुं दुष्करः ॥

"ब्राह्मणेभ्यः इद" मन्नं तन्मा स्पृश ॥

"प्राणा यस्य विनिर्गता" न पुनरस्मै केनचित् "महतापि वैद्येन" पुनः जीवनं प्रादयितुं शक्यः ॥

"पञ्च रात्री' रत्नेषिन्वाऽपि "यस्य मनस्येनस्य त्यागोच्छंसा मज्ञाता" सकिं बुद्धिमान् ॥

उत्तरार्द्धम्

पञ्चदशः पाठः ।

धातु-प्रकरणम्

भू, स्था और गम् आदि धातु दश भागों में बांटे गये हैं। प्रत्येक भाग को गण (conjugation) कहते हैं, उनके नाम यह हैं*—

१ भ्वादिगण, २ अदादिगण, ३ जुहोत्यादिगण, ४ दिवादि गण, ५ स्वादिगण, ६ तुदादिगण, ७ रुधादिगण, ८ तनादिगण ९ क्र्यादिगण, १० चुरादिगण ॥

धातुओं के परे दस विभक्ति होती है, वे ये हैं—

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट् और लुङ्। इन में से लट्, लङ्, लुट्, लृट्, लिट् और लुङ् यह ६ काल (Tenses) कहे जाते हैं, और लोट्, विधिलिङ्, आशीर्लिङ्, और लृङ् अर्थ (moods) कहलाते हैं।

---

* जिस गण के पहिले जो धातु है उस धातु के नाम से उस गण का नाम रक्खा गया है। यथा—भ्वादिगण में पहिला धातु भू है इस लिये उस गण का नाम भ्वादि है। इसी तरह अदादिगण वह है जिस के पहिले अद् धातु है और दिवादिगण वह है जिस के पहिले दिव् धातु है, इत्यादि ॥

प्रत्येक विभक्ति के दो भाग होते हैं, परस्मैपद और आत्मनेपद । बहुत से धातु ऐसे हैं जिनके आगे केवल परस्मैपद प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें परस्मैपदी धातु कहते हैं । बहुत से ऐसे हैं जिनके आगे केवल आत्मनेपद प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें आत्मनेपदी धातु कहते हैं । और कई ऐसे भी हैं जिनके आगे दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें उभयपदी धातु कहते हैं । प्रत्येक भाग में तीन पुरुष होते हैं । यथा–उत्तम पुरुष (1st person), मध्यम पुरुष (2nd person) और प्रथम पुरुष (3rd person) ।

उत्तम पुरुष सदा अपने लिये प्रयुक्त होता है । यथा–अहम् गच्छामि, आवाम् गच्छावः, वयम् गच्छामः ।

जो पुरुष सामने हो उसको सम्बोधन करके जो कुछ कहा जाता है, वहां मध्यम पुरुष आता है । यथा—त्वं पश्यसि, युवाम् पश्यथः, यूयम् पश्यथ ।

जहां पर उत्तम वा मध्यम पुरुष नहीं लगाये जासक्ते, वहां प्रथम पुरुष रक्खा जाता है । यथा–स भक्षयति, रामः पिबतु ॥

प्रत्येक पुरुष के तीन वचन (number) हैं—

एक वचन (singular), द्विवचन (dual) और बहुवचन (plural)।

इन विभक्तियों में से (क) लट्, लङ्, लोट्, और विधिलिङ् को सार्वधातुक (conjugational tenses) कहते हैं, क्योंकि इन विभक्तियों में अदादि और जुहोत्यादिगण के धातुओं से अन्य धातु और विभक्ति के मध्य में एक विकरण (conjugational sign) आ जाता है ॥

(ख) लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट्, और लुङ् को आर्धधातुक (non-conjugational tenses) कहते हैं ॥

सार्वधातुक

tenses	लट् (वर्तमान) present		काल
	लङ् (अनद्यतन भूत) Imperfect		
moods	लोट् (आज्ञा) Imperative		अर्थ
	लिङ् (विधि) potential		

* आर्धधातुक।

tenses	लुट् (अनद्यतन भविष्यत्) first future		काल
	लृट् (भविष्यत्) second future		
	लिट् (परोक्ष भूत) perfect		
	लुङ् (भूत) aorist		
moods	लिङ् (आशी.) benedictive		अर्थ
	लृङ् (संकेत) conditional		

१३८—आर्धधातुकस्येड्वलादेः ॥ धातु के अन्त में 'इ' (इट्) लगाया जाता है, यदि परे कोई वल+आदि आर्धधातुक विभक्ति हो ॥

(क) जिन के अन्त में 'इ' लगता है उन धातुओं को 'सेट्' (स+इट्) कहते हैं।

(ख) जिन के अन्त में 'इ' नहीं लगता उन को ('अनिट्')

(ग) जिन के अन्त में 'इ' विकल्प से लगता है, उन को 'वेट्' (वा+इट्) ॥

सेट्

भू (भ्वा० प०)	सेव् (भ्वा० आ०)	नृत् (दि० प०)
पत् (भ्वा० प०)	बुध् (भ्वा० उ०)	दिव् (दि० प०)
गम् (भ्वा० प०)	याच् (भ्वा० उ०)	त्रस् (दि० प०)

---

* इस पुस्तक में आर्धधातुओं में से केवल लृट् (भविष्यत्) (second or simple future) का ही उच्चारण दिया जाएगा।

रच् (भ्वा० प०)	वृध् (भ्वा० आ०)	इष् (तु० प०)
वद् (भ्वा० प०)	अस् (अदा० प०)	ग्रह् (क्र्या० उ०)
शिक्ष् (भ्वा० आ०)	विद् (अदा० प०)	चुर् (चु० उ०)
ईक्ष् (भ्वा० आ०)	रुद् (अदा० प०)	भूष् (चु० उ०)
वन्द् (भ्वा० आ०)	जागृ (अदा० प०)	भक्ष् (चु० उ०)
शंक् (भ्वा० आ०)	शी (अदा० आ०)	तड् (चु० उ०)
कम्प् (भ्वा० आ०)	ब्रू (अदा० उ०)	दण्ड् (चु० उ०)
भाष् (भ्वा० आ०)	भ्रम् (दि० प०)	स्पृह् (चु० उ०)
सह् (भ्वा० आ०)	त्रस् (दि० प०)	

उपरिलिखित ये सभी धातु प्रायः सेट् हैं ।

अनिट्

गण-विकरण ।

गण	विकरण	गण	विकरण
भ्वादि	अ	जुहोत्यादि	—
दिवादि	य	स्वादि	नु
तुदादि	अ	रुधादि	न
चुरादि	अय	तनादि	उ
अदादि	—	क्र्यादि	ना

परस्मैपद ।

लट् (Present tense)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उ० पु०	मि	वः	म
म० पु०	सि	थः	थ
प्र० पु०	ति	त	अन्ति

लोट् (Imperative mood)

उ० पु०	आनि	आव	आम
म० पु०	हि	तम्	त
प्र० पु०	तु	ताम्	अन्तु

लङ् (Imperfect)

उ० पु०	अम्	व	म
म० पु०	स्	तम्	त
प्र० पु०	त्	ताम्	अन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उ० पु०	याम्	याव	याम
म० पु०	यास्	यातम्	यात
प्र० पु०	यात्	याताम्	युस्

लृट् (Simple future)

उ० पु०	स्यामि	स्याव	स्यामः

म० पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ
प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति

भ्वादि गण (Ist Conjugation)

१३९—कर्तरिशप् ॥ कर्त्तृवाच्य (active voice) में भ्वादिगण के धातु और सार्वधातुक विभक्ति के मध्य में शप् (अ) विकरण (conjugational sign) रखा जाता है।

भू (होना, to be)

लट् (Present tense)

१४०—वर्त्तमाने लट् ॥ वर्त्तमान काल में जो काम होता है वा हो रहा है उस के लिये धातु के परे लट् की विभक्तियां लगाई जाती हैं ॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	भवामि १, २	भवावः	भवामः
मध्यम पु०	भवसि	भवथः	भवथ
प्रथम पु०	भवति	भवतः	भवन्ति३

लोट् (Imperative mood)

१४१—लोट् च ॥ आज्ञा, निमन्त्रण, प्रार्थना, उपदेश आदि अर्थों में धातु के परे लोट् की विभक्तियें लगाई जाती हैं।

१—सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥ इक्+अन्त धातु के अन्तिम इक् को गुण हो जाता है यदि परे सार्वधातुक वा आर्धधातुक विभक्ति हो ॥

२—अतोदीर्घो यञि ॥ विकरण का ह्रस्व अ दीर्घ होजाता है, यदि परे यञ्+आदि सार्वधातुक विभक्ति हो। भू+मि=भू+अ+मि=भव्+अ+मि (एचो ऽयवायावः)=भवामि।

३—अतोगुणे ॥ विकरण के अ से परे यदि विभक्ति के आदि में अ हो तो दोनों के स्थान में एक अ होजाता है। भू+अन्ति=भव्+अ+अन्ति=भवन्ति ॥

उत्तम पु०	भवानि	भवाव	भवाम
मध्यम पु०	भव४	भवतम्	भवत
प्रथम पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु *

लङ् (Imperfect tense)

१४२—अनद्यतने लङ् ॥ अनद्यतनभूत अर्थ में धातु के परे लङ् की विभक्तियें लगाई जाती हैं ॥

उत्तम पु०	५अभवम्*	अभवाव†	अभवाम
मध्यम पु०	अभव	अभवतम्	अभवत
प्रथम पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्

विधिलिङ् (Potential mood)

१४३—विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ आज्ञा निमन्त्रण, प्रेरण, प्रार्थना अर्थ में धातु के परे लिङ की विभक्तियें लगाई जाती है ।

भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि गणों के धातुओं के परे विधि लिङ् की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं —

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	ईयम्	ईव	ईम
मध्यम पु०	ईस्	ईतम्	ईत
प्रथम पु०	ईत्	ईताम्	ईयु
उत्तम पु०	भवेयम्‡	भवेव	भवेम

४—अतो हे ॥ ह्रस्व अ से परे हि का लोप होजाता है ।

५—लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥ लुङ्, लङ् या लृङ् की विभक्तियों के परे होने पर धातु के आदि में 'अ' लगाया जाता है ।

*अतोगुणे । †अतो दीर्घो यञि । ‡आद्गुणः ।

मध्यम पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
प्रथम पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः

लृट् (Simple future)

१४४—लृट् शेषेच ॥ साधारण भविष्यत् अर्थ में लृट् का प्रयोग होता है ॥

उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

पत् (गिरना, to fall)

लट् (Present)

उत्तम पु०	पतामि	पतावः	पतामः
मध्यम पु०	पतसि	पतथः	पतथ
प्रथम पु०	पतति	पततः	पतन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	पतानि	पताव	पताम
मध्यम पु०	पत	पततम्	पतत
प्रथम पु०	पततु	पतताम्	पतन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अपतम्	अपताव	अपताम
मध्यम पु०	अपतः	अपततम्	अपतत
प्रथम पु०	अपतत्	अपतताम्	अपतन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	पतेयम्	पतेव	पतेम
मध्यम पु०	पतेः	पतेतम्	पतेत
प्रथम पु०	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	पतिष्यामि	पतिष्याव	पतिष्याम
मध्यम पु०	पतिष्यसि	पतिष्यथ	पतिष्यथ
प्रथम पु०	पतिष्यति	पतिष्यत	पतिष्यन्ति

इसी प्रकार नीचे लिखे भ्वादिगण के परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

दा (यच्छ्) देना, to give
पा (पिव्) पीना, to drink
गम् (गच्छ्) जाना, to go
पठ् पढना, to read
रक्ष् रक्षा करना to protect
वद् बोलना, to speak
नम् झुकना, to bend
स्था (तिष्ठ्) खडा होना, to stand

पच् पकाना, to cook
* जि (जय्) जीतना, to conquer.
* स्मृ (स्मर्) स्मरण करना, to remember
* सृ (सर्) सरकना, to move.
वस् रहना, to dwell
दृश् (पश्य्) देखना, to see

आत्मनेपद ।

लट् (Present tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	इ	वहे	महे
मध्यम पु०	से	इथे	ध्वे
प्रथम पु०	ते	इते	अन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ऐ	आवहै	आमहै
मध्यम पु०	स्व	इथाम्	ध्वम्
प्रथम पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्

* सार्वधातुकार्धधातुकयो ।

लङ् (Imperfect tense)

उत्तम पु०	इ	वहि	महि
मध्यम पु०	थाम्	इथाम्	ध्वम्
प्रथम पु०	त	इताम्	अन्त

विधि लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ईय	ईवहि	ईमहि
मध्यम पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
प्रथम पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे
मध्यम पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
प्रथम पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते

भ्वादिगण

शिक्ष् (सीखना, to learn)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	शिक्षे *	शिक्षावहे	शिक्षामहे
मध्यम पु०	शिक्षसे	शिक्षेथे	शिक्षध्वे
प्रथम पु०	शिक्षते	शिक्षेथे	शिक्षन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	शिक्षै	शिक्षावहै	शिक्षामहै
मध्यम पु०	शिक्षस्व	शिक्षेथाम्	शिक्षध्वम्
प्रथम पु०	शिक्षताम्	शिक्षेताम्	शिक्षन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अशिक्षे †	अशिक्षावहि	अशिक्षामहि‡

---

* शिक्ष् + इ = शिक्ष् + अ + इ (कर्तरि शप्) = शिक्षे (आद्गुणः)।

† लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः। ‡ अतो दीर्घो यञि।

मध्यम पु०	अशिक्षथा	अशिक्षेथाम्	अशिक्षध्वम्
प्रथम पु०	अशिक्षत	अशिक्षेताम्	अशिक्षन्त §

विधि लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	शिक्षेय ¹¹	शिक्षेवहि	शिक्षेमहि
मध्यम पु०	शिक्षेथा	शिक्षेयाथाम्	शिक्षेध्वम्
प्रथम पु०	शिक्षेत	शिक्षेयाताम्	शिक्षेरन्

लृट् (Simple future)

उ० पु०	शिक्षिष्ये	शिक्षिष्यावहे	शिक्षिष्यामहे
म० पु०	शिक्षिष्यसे	शिक्षिष्येथे	शिक्षिष्यध्वे
प्र० पु०	शिक्षिष्यते	शिक्षिष्येते	शिक्षिष्यन्ते

ईक्ष् (देखना to see)

लट् (Present)

उत्तम पु०	ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे
मध्यम पु०	ईक्षसे	ईक्षेथे	ईक्षध्वे
प्रथम पु०	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ईक्षै	ईक्षावहै	ईक्षामहै
मध्यम पु०	ईक्षस्व	ईक्षेथाम्	ईक्षध्वम्
प्रथम पु०	ईक्षताम्	ईक्षेताम्	ईक्षन्ताम्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ऐक्षे ६	ऐक्षावहि	ऐक्षामहि

---

§ अतो गुणे ¹¹ शिक्ष् + ईय=शिक्ष्+अ+ईय=शिक्षेय ।

६—आडजादीनाम्, आटश्च ॥ स्वरादि धातुओं के पहिले आ जोड़ा जाता है यदि लङ् लुङ् या लृङ् विभक्ति हो और आ और धातु के आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है॥ ईक्ष् + इ=आ+ईक्ष+अ + इ=ऐक्षे।

मध्यम पु०	ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्षध्वम्
प्रथम पु०	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त

विधि-लिङ् (Potential mood.)

उत्तम पु०	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि
मध्यम पु०	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
प्रथम पु०	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्

लृट् (Simple future)

उ० पु०	ईक्षिष्ये	ईक्षिष्यावहे	ईक्षिष्यामहे
म० पु०	ईक्षिष्यसे	ईक्षिष्येथे	ईक्षिष्यध्वे
प्र० पु०	ईक्षिष्यते	ईक्षिष्येते	ईक्षिष्यन्ते

इसी प्रकार नीचे लिखे भ्वादि गण के आत्मनेपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

वद् (वन्द्) नमस्कार करना, to salute.

शंक् शंका करना, to suspect.

कम्प् कांपना, to tremble.

सह् सहारना, to bear.

शुभ् (शोभ्) शोभा पाना, अच्छा लगना, to be splendid, to become

रुच् (रोच्) पसन्द आना, to be liked.

भाष् बोलना, to speak

सेव् सेवा करना, to serve.

रभ् आरम्भ करना, to begin.

लभ् पाना, to obtain.

वृध् बढ़ना, to increase.

उभय पद—भ्वादिगण

परस्मैपद

बुध् जानना (to know)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	बोधामि ७	बोधाव	बोधाम
मध्यम पु०	बोधसि	बोधथ	बोधथ
प्रथम पु०	बोधति	बोधत	बोधन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	बोधानि	बोधाव	बोधाम
मध्यम पु०	बोध	बोधतम्	बोधत
प्रथम पु०	बोधतु	बोधताम्	बोधन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अबोधम्	अबोधाव	अबोधाम
मध्यम पु०	अबोध	अबोधतम्	अबोधत
प्रथम पु०	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्

विधि लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	बोधेयम्	बोधेव	बोधेम
मध्यम पु०	बोधे	बोधेतम्	बोधेत
प्रथम पु०	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयु

लृट् (Simple future)

उ० पु०	बोधिष्यामि	बोधिष्याव	बोधिष्याम
म० पु०	बोधिष्यसि	बोधिष्यथ	बोधिष्यथ
प्र० पु०	बोधिष्यति	बोधिष्यत	बोधिष्यन्ति

७—पुगन्त लघूपधस्य च ॥ जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व स्वर हो उनके उपधा स्वर को गुण हो जाता है ॥

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	बोधे	बोधावहे	बोधामहे
मध्यम पु०	बोधसे	बोधेथे	बोधध्वे
प्रथम पु०	बोधते	बोधेते	बोधन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	बोधै	बोधावहै	बोधामहै
मध्यम पु०	बोधस्व	बोधेथाम्	बोधध्वम्
प्रथम पु०	बोधताम्	बोधेताम्	बोधन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उ० पु०	अबोधे	अबोधावहि	अबोधामहि
म० पु०	अबोधथाः	अबोधेथाम्	अबोधध्वम्
प्र० पु०	अबोधत	अबोधेताम्	अबोधन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	बोधेय	बोधेवहि	बोधेमहि
मध्यम पु०	बोधेथाः	बोधेयाथाम्	बोधेध्वम्
प्रथम पु०	बोधेत	बोधेयाताम्	बोधेरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे
मध्यम पु०	बोधिष्यसे	बोधिष्येथे	बोधिष्यध्वे
प्रथम पु०	बोधिष्यते	बोधिष्येते	बोधिष्यन्ते

इसी प्रकार भ्वादि गण के नीचे लिखे उभयपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

याच् मांगना, to beg.	नी (नय्) ले जाना, to carry.
हृ (हर्) चुराना, to take away	

दिवादि गण* (Fourth conjugation)

१४५—दिवादिभ्य श्यन् ॥ दिवादि गण के धातु और सार्वधातुक विभक्ति के मध्य में श्यन् (य) विकरण (Conjugational sign) रखा जाता है ॥

परस्मैपद

नश् (नष्ट होना to perish)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	नश्यामि	नश्याव	नश्याम
मध्यम पु०	नश्यसि	नश्यथ	नश्यथ
प्रथम पु०	नश्यति	नश्यत	नश्यन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम
मध्यम पु०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
प्रथम पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
मध्यम पु०	अनश्य	अनश्यतम्	अनश्यत
प्रथम पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्

विधि—लिङ (Potential mood)

उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्यम
म० पु०	नश्ये	नश्येतम्	नश्येत
प्र० पु०	नश्येत्	नश्यताम	नश्येयु

* भ्वादि दिवादि तुदादि और चुरादि गणों के सार्वधातुक विभक्तियों में रूप बहुधा समान रीति से बनते हैं इसलिये इनको अन्य गणों से प्रथम रखा गया है।

लृट् (Simple future)

उ० पु०	नंक्ष्यामि ८—९	नंक्ष्यावः	नंक्ष्यामः
म० पु०	नंक्ष्यसि	नंक्ष्यथः	नंक्ष्यथ
प्र० पु०	नंक्ष्यति	नंक्ष्यतः	नंक्ष्यन्ति

वा

उ० पु०	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः
म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति

इसी प्रकार दिवादिगण के नीचे लिखे परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

क्रुध् क्रोध करना, to be angry.
शुष् सूखना, to dry.
श्रम् (श्राम्) श्रान्त होना, to be weary.
तुष् प्रसन्न होना, to be pleased.
अस् फेंकना, to throw.
नृत् नाचना, to dance.

आत्मनेपद—युध्, (लड़ना)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे
मध्यम पु०	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
प्रथम पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते

८—मस्जिनशोर्झलि ॥ मस्ज् और नश् धातु की उपधा में 'न्' जोड़ा जाता है, यदि परे झल् हो ॥

९—षढोः कः सि ॥ ष् वा ढ् को क् हो जाता है, यदि परे स् हो ॥ यथा—नश् + स्यामि=नंश्+स्यामि (८) =नंष्+स्यामि (व्रश्च भ्रस्ज-सृज०)=नंक्+स्यामि=नंक्+ष्यामि (आदेशप्रत्यययोः) =नंक्ष्यामि ॥

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै
मध्यम पु०	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
प्रथम पु०	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि
मध्यम पु०	अयुध्यथा	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
प्रथम पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि
मध्यम पु०	युध्येथा	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
प्रथम पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्

लृट् (Simple future)

उ० पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे
म० पु०	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
प्र० पु०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते

इसी प्रकार नीचे लिखे दिवादिगण के आत्मनेपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

जन् (जा) उत्पन्न होना, to be produced.	विद् विद्यमान होना, to be.

तुदादि गण (6th Conjugation)

१४६—तुदादिभ्यः शः ॥ तुदादि गण के धातु और सार्वधातुक विभक्ति के मध्य में श (अ) विकरण (conjugational sign) रखा जाता है ॥

परस्मैपद ।

इष् (इच्छ्) (इच्छा करना, to desire.)

लट् (Present)

उत्तम पु०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
मध्यम पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
प्रथम पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
मध्यम पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
प्रथम पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	ऐच्छम्*	ऐच्छाव	ऐच्छाम
मध्यम पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
प्रथम पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
मध्यम पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
प्रथम पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः

लृट् (Simple future)

उ० प्र०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः
म० पु०	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति

---

* आडजादीनाम्, आटश्च ॥

इसी प्रकार नीचे लिखे तुदादि गण के परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

क्षिप् * फेंकना, to throw.	सृज् उत्पन्न करना, to create.
प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना, to ask	स्पृश् स्पर्श करना, to touch.

आत्मनेपद ।

मृ (म्रिय्) (मरना, to die)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
मध्यम पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
प्रथम पु०	म्रियते	म्रियेथे	म्रियन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	म्रियै	म्रियावहै
मध्यम पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्
प्रथम पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अम्रिये	अम्रियावहि
मध्यम पु०	अम्रियथा	अम्रियेथाम्
प्रथम पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्

विधि-लिङ् (Potential m

उत्तम पु०	म्रियेय	म्रियेवहि
मध्यम पु०	म्रियेथा	म्रियेयाथाम्
प्रथम पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्

* तुदादि गण के धातुओं में कहीं पर ...

लृट् * (Simple future)

उ० पु०	मरिष्यामि १०	मरिष्यावः	मरिष्यामः
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति

उभयपद

मुच् (मुञ्च्) (छोड़ना, to abandon.)

लट् (Present) परस्मैपद

उत्तम पु०	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः
मध्यम पु०	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
प्रथम पु०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम
मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः

---

* लट् में 'मृ' परस्मैपदी होता है ॥

१०—ऋद्धनोः स्ये ॥ ऋकारान्त धातु और हन् लट् और लङ् में सेट् हो जाते हैं ॥

इसी प्रकार नीचे लिखे तुदादि गण के परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

क्षिप् * फेंकना, to throw.	सृज् उत्पन्न करना, to create.
प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना, to ask.	स्पृश् स्पर्श करना, to touch.

आत्मनेपद ।

मृ (म्रिय्) (मरना, to die)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
मध्यम पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
प्रथम पु०	म्रियते	म्रियेथे	म्रियन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
मध्यम पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
प्रथम पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्

लङ् (Imperfect.)

उत्तम पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
मध्यम पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
प्रथम पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
मध्यम पु०	म्रियेथा	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
प्रथम पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्

* तुदादि गण के धातुओं में कहीं पर भी गुण नहीं होता ॥

इसी प्रकार नीचे लिखे तुदादि गण के परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

क्षिप् * फेंकना, to throw	सृज् उत्पन्न करना, to create
प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना, to ask	स्पृश् स्पर्श करना, to touch

आत्मनेपद ।

मृ (म्रिय्) (मरना, to die)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
मध्यम पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
प्रथम पु०	म्रियते	म्रियेथे	म्रियन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
मध्यम पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
प्रथम पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
मध्यम पु०	अम्रियथा	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
प्रथम पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
मध्यम पु०	म्रियेथा	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
प्रथम पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्

* तुदादि गण के धातुओं में कहीं पर भी गुण नहीं होता ॥

इसी प्रकार नीचे लिखे तुदादि गण के परस्मैपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

क्षिप् * फेंकना, to throw.	सृज् उत्पन्न करना, to create.
प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना, to ask.	स्पृश् स्पर्श करना, to touch.

आत्मनेपद ।

मृ (म्रिय्) (मरना, to die)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
मध्यम पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
प्रथम पु०	म्रियते	म्रियेथे	म्रियन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
मध्यम पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
प्रथम पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
मध्यम पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
प्रथम पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
मध्यम पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
प्रथम पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्

* तुदादि गण के धातुओं में कहीं पर भी गुण नहीं होता ॥

लृट् * (Simple future)

उ० पु०	मरिष्यामि १०	मरिष्यावः	मरिष्यामः
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति

उभयपद

मुच् (मुञ्च्) (छोड़ना, to abandon.)

लट् (Present) परस्मैपद

उत्तम पु०	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः
मध्यम पु०	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
प्रथम पु०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम
मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः

---

* लृट् में 'मृ' परस्मैपदी होता है ॥

१०—ऋद्धनोः स्ये ॥ ऋकारान्त धातु और हन् लृट् और लृङ् में सेट् हो जाते हैं ॥

—लृट् (Simple future)

उत्तम पुरुष	मोक्ष्यामि	मोक्ष्याव	मोक्ष्याम
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथ	मोक्ष्यथ
प्रथम पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यत	मोक्ष्यन्ति

आत्मने पद

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
मध्यम पुरुष	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
प्रथम पुरुष	मुञ्चते	मुञ्चते	मुञ्चन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै
मध्यम पुरुष	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
प्रथम पुरुष	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहे	अमुञ्चामहे
मध्यम पु०	अमुञ्चथा	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
प्रथम पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि
मध्यम पु०	मुञ्चेथा	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
प्रथम पु०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे
मध्यम पु०	मोक्ष्यसे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे
प्रथम पु०	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते

इसी प्रकार "सिच् (सिंच्) छिड़कना to sprinkle" का उच्चारण भी होगा ॥

चुरादिगण (10th Conjugation)

१४७—चुरादिभ्यो णिच् ॥ चुरादिगण के धातु और सार्व-धातुक विभक्ति के मध्य में णिच् (अय) विकरण (conjugational sign) रखा जाता है ॥

चुरादिगण का प्रत्येक धातु उभयपदी है ॥

परस्मैपद

चुर् (चोर्) (चुराना, to steal)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	चोरयामि *	चोरयावः	चोरयामः
मध्यम पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
प्रथम पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम
मध्यम पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
प्रथम पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम
मध्यम पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
प्रथम पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्

* पुगन्तलघूपधस्य च ॥ (चुरादिगण में णिच् के आगे शप् जोड़ा जाता है ॥ णिच्+शप्=इ+अ=ए+अ=अय)

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम
मध्यम पु०	चोरये	चोरयेतम्	चोरयेत
प्रथम पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयु

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्याव	चोरयिष्यामः
मध्यम पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथ	चोरयिष्यथ
प्रथम पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यत	चोरयिष्यन्ति

आत्मनेपद

तड् (ताड् ११) (पीटना, to beat)

लट् (Present)

उत्तम पु०	ताडये	ताडयावहे	ताडयामहे
मध्यम पु०	ताडयसे	ताडयेथे	ताडयध्वे
प्रथम पु०	ताडयते	ताडयेते	ताडयन्ते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ताडयै	ताडयावहै	ताडयामहै
मध्यम पु०	ताडयस्व	ताडयेथाम्	ताडयध्वम्
प्रथम पु०	ताडयताम्	ताडयेताम्	ताडयन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अताडये	अताडयावहि	अताडयामहि
मध्यम पु०	अताडयथा:	अताडयेथाम्	अताडयध्वम्
प्रथम पु०	अताडयत	अताडयेताम्	अताडयन्त

११—जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व अ हो वहां ह्रस्व अ की वृद्धि हो जाती है ॥ तड् = ताड् ॥

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि
मध्यम पु०	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
प्रथम पु०	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	ताडयिष्यामि	ताडयिष्यावः	ताडयिष्यामः
मध्यम पु०	ताडयिष्यसि	ताडयिष्यथः	ताडयिष्यथ
प्रथम पु०	ताडयिष्यति	ताडयिष्यतः	ताडयिष्यन्ति

इसी प्रकार चुरादिगण के नीचे लिखे उभयपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

भूष् अलङ्कृत करना, to adorn.
भक्ष् खाना, to eat.
दण्ड् दण्ड देना, to punish.
स्पृह् इच्छा करना, to desire.

EXERCISE X

(क) अलंकाराः बालेभ्यः रोचन्ते॥
शिष्या आचार्य्यं वन्दन्ते आचार्यस्य(तस्य)प्रसादं च विन्दन्ते॥
ग्रीष्मे नद्यः शुष्यन्ति न च वर्धन्ते ॥
स्वल्पोऽप्यग्नेः स्फुलिङ्गः सकलमेव संसारं दहेत् ॥
ईश्वरो भक्तानां कामान् पूरयते ॥
दासा अनेकान् क्लेशान् सहन्ते॥
मिथ्या न भाषस्व, सत्यस्यार्थस्य च प्रकाशे न लज्जस्व ॥
रामो भृत्येष्वेवमस्निह्यत् यथा पिता तनयेषु (स्निह्यति) ॥

वर्जयेत्तादृशं भृत्यं न दुःखे योऽनुवर्त्तते ॥

अर्थं यच्छेद्दरिद्रेभ्यः शिष्टं तीर्थेषु निक्षिपेत् ॥

(ख) राम को सुबोध छात्र भाते हैं (रुच्) ॥
हरि दुष्ट भृत्यों के अपराध क्षमा नहीं करता ॥
दुष्ट राजा के दण्ड से कांपते हैं ॥
भिक्षुक धनिक से चावल मांगते हैं ॥

इस नगर में बहुत धनिक है,
यदि भिक्षुक धन चाहें,
तो उनको मिल जायगा ॥
यदि इस वर्ष भी दुर्भिक्ष रहा
तो बहुत लोग मरेंगे ॥
मूर्ख मित्र को अवश्य त्यागना
चाहिये ॥
यदि मेरा मनोरथ पूर्ण हो तो
मैं तुमको बहुत धन दूगा ॥
हरि अधिक परिश्रम से पढ़ता
रहा ताकि उसे पारितोषिक
मिले ॥

छात्रों को प्रातःकाल उठना
चाहिये ॥
यदि बालक अपशब्द बोले तो
अध्यापक उसको दण्ड दे ॥
तू ने कल का पाठ क्यों नहीं
स्मरण किया ॥
आओ, यहां बैठें और ईश्वर
के गुण गाएं ॥
पहिले पढ़ो और पीछे खेलो ॥
लक्ष्मण ने सीता को वाल्मीकि
के आश्रम में छोड़ दिया ॥
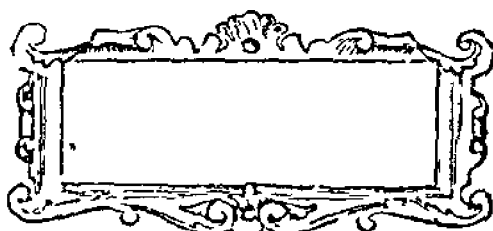
षोडशः पाठः ।

अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, और क्र्यादि गणों की सार्वधातुक विभक्तियें दो भागों में बांटी जाती हैं ॥ विकारक (strong) और अविकारक (weak) ॥

परस्मैपद के लट् के सब एकवचन,

लोट् का प्रथम पुरुष एकवचन, और उत्तमपुरुष का एकवचन, द्विवचन और बहुवचन,

लङ् के सब एकवचन—

विकारक (strong) हैं और इनके अन्य सब अविकारक (weak) हैं ॥

आत्मने पद के केवल लोट् का सम्पूर्ण उत्तम पुरुष (एकवचन द्विवचन और बहुवचन) विकारक (strong) हैं;

शेष सब ही विभक्तियां अविकारक (weak) हैं ॥

अदादि-गण (Second Conjugation)

१८७—अदादिगण में धातु के परे कोई विकरण (Conjugational sign) नहीं आता ॥

परस्मैपद

अद् (खाना, to eat)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः
म० पु०	अत्सि*	अत्थः	अत्थ
प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति

---

* खरि च ॥

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम
मध्यम पुरुष	अद्धि १२	अत्तम्	अत्त
प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म
मध्यम पुरुष	आदः १३	आत्तम्	आत्त
प्रथम पुरुष	आदत् १४	आत्ताम्	आदन्

विधि लिङ् (potential mood)

उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्याव	अत्स्याम
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति

अस् (होना) (to be)

लट् (present)

उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः १५	स्मः

१२—हुझल्भ्यो हेर्धिः ॥ हु धातु और झल्–अन्त धातुओं से परे हि का धि हो जाता है ॥

१३—अदः सर्वेषाम् ॥ अद् धातु के आगे अ जोड़ा जाता है यदि परे त् या स् विभक्ति हो ॥ अद्+त्=आ+अद्+त् (आडजादीनाम्)=आद्+अ+त्=आदत् ॥

१४—श्नसोरल्लोपः ॥ श्न (रुधादि विकरण) या अस् धातु के अ का लोप हो जाता है, यदि परे अपित्कारक सार्वधातुक विभक्ति हो ॥

१५—तासस्त्योर्लोपः ॥ अस् धातु के स् का लोप हो जाता है, यदि परे कोई सकारादि विभक्ति हो ॥

मध्यम पुरुष	असि १५	स्थः	स्थ
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	असानि	असाव	असाम
मध्यम पु०	एधि १६	स्तम्	स्त
प्रथम पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	आसम्	आस्व	आस्म
मध्यम पु०	आसीः १७	आस्तम्	आस्त
प्रथम पु०	आसीत्,	आस्ताम्	आसन्

विधि-लिङ् (potential mood)

उत्तम पु०	स्याम्*	स्याव	स्याम
मध्यम पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
प्रथम पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः

आर्ध धातुक विभक्तियों के पूर्व 'अस्' (to be) के स्थान में 'भू' होजाता है, अतः इस के रूप लृट में भविष्यामि भविष्यावः, आदि होंगे ॥

१६—घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ दा, धा, वा अस् के अन्तिम-वर्ण को ए हो जाता है, यदि परे हि हो, और दा वा धा के अभ्यास का लोप हो जाता है ॥ अस् + हि = अस् + धि = अए + धि = एधि (श्नसोरल्लोपः) ॥

१७—अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥ अस् धातु के आगे ई जोड़ा जाता है, यदि परे त् वा स् विभक्ति हो ॥

* श्नसोरल्लोपः ॥

हन् (मारना, to kill)
लट् (present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उ० पु०	हन्मि	हन्व	हन्म
म० पु०	हंसि	हथ १८	हथ
प्र० पु०	हन्ति	हत	घ्नन्ति १९,२०

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	हनानि	हनाव	हनाम
मध्यम पु०	जहि २१	हतम्	हत
प्रथम पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म
मध्यम पु०	अहन्*	अहतम्	अहत
प्रथम पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्

१८—अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति॥ अनुदात्तोपदेश (यम्, रम्, नम्, गम्, हन्, मन्) और वन्, तन् आदि धातुओं के अन्तिम न् का लोप होजाता है, यदि परे कोई झल् आदि अविकारक (weak) विभक्ति हो ॥

१९—गम हन जन खन घसांलोप क्ङित्यनङि॥ गम्, हन्, जन्, खन् और घस धातुओं के उपधा अ का लोप हो जाता है, यदि परे कोई अच्-आदि अविकारक (weak) विभक्ति हो ॥

२०—होहन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ हन् धातु के ह को घ हो जाता है, यदि परे न् वा कोई ञ इत्, वा ण्-इत् (जिस में ञ् वा ण का लोप हुआ हो) प्रत्यय हो ॥ हन्+अन्ति=ह्न्+अन्ति=घ्नन्ति ॥

२१—हन्तेर्जः ॥ हन् धातु के ह को ज हो जाता है, यदि परे हि हो ॥ हन्+हि=ह+हि=जहि ॥

*हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ॥

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
मध्यम पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
प्रथम पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	हनिष्यामि *	हनिष्यावः	हनिष्यामः
मध्यम पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
प्रथम पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति

विद् (जानना, to know)

†लट् (Present)

उत्तम पु०	वेद्मि-वेद	विद्वः-विद्व	विद्मः-विद्म
मध्यम पु०	वेत्सि-वेत्थ‡	वित्थः-विदथुः	वित्थ-विद
प्रथम पु०	वेत्ति-वेद	वित्तः-विदतुः	विदन्ति-विदुः

२२ लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	वेदानि	वेदाव	वेदाम
	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम
मध्यम पु०	विद्धि	वित्तम्	वित्त
	विदाङ्कुरु	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
प्रथम पु०	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
	विदाङ्करोतु	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु

---

* ऋद्धनोः स्ये ॥

† लट् में विद् के प्रत्येक वचन में दो दो रूप होते हैं ॥ ‡ इवरिच ॥

२२—लोट् में विद् के प्रत्येक पुरुष में दो दो रूप होते हैं, जिसमें एक तो साधारण रीति से बनाया जाता है और दूसरे में धातु के आगे आम् जोड़ कर फिर कृ धातु के लोट् के रूप लगाये जाते हैं ॥ विद्+आम्+करवाणि=विदाङ्करवाणि इत्यादि ॥

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
मध्यम पु०	अवेत् द् वे २३	अवित्तम्	अवित्त
प्रथम पु०	अवेत् द् †	अवित्ताम्	अविदुः २४

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	विद्याम्	विद्याव	विद्याम
मध्यम पु०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
प्रथम पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	वेत्स्यामि	वेत्स्यावः	वेत्स्यामः
मध्यम पु०	वेत्स्यसि	वेत्स्यथः	वेत्स्यथ
प्रथम पु०	वेत्स्यति	वेत्स्यतः	वेत्स्यन्ति

जागृ (जागना to be awake)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
उत्तम पु०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः
मध्यम पु०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
प्रथम पु०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति

२३—दश्च ॥ धातु के पदान्त द को रु हो जाता है यदि परे स् (लट् मध्य० एक०) हो ॥ अ+विद्+स=अवेद्+स्=अवेद् (हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् इत्यादि)=अवेर् = अवेः (खरवसानयोर्विसर्जनीयः) ॥

† अवेद्+त्=अवेद्=अवेत् (वावसाने) ॥

२४—सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥ (सिच) द्विवर्गीय हुव धातु (जुहोत्यादिगण के) और विद् से परे झि का उस् हो जाता है ॥

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	जागराणि	जागराव	जागराम
मध्यम पु०	जागृहि	जागृतम्	जागृत
प्रथम पु०	जागर्तु	जागृताम्	जाग्रतु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम
मध्यम पु०	अजागः *	अजागृतम्	अजागृत
प्रथम पु०	अजागः *	अजागृताम्	अजागरुः २५

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम
मध्यम पु०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
प्रथम पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः
मध्यम पु०	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
प्रथम पु०	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति

स्वप् (सोना, to sleep)

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	स्वपिमि २६	स्वपिवः	स्वपिमः
मध्यम पु०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
प्रथम पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति

* हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तंहल् ॥

२५—जुसि च ॥ अङ्ग के अन्तिम इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) को गुण हो जाता है, यदि परे उस् हो ॥

२६—रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ रुद्, स्वप् आदि धातुओं के अन्त में 'इ' जोड़ा जाता है यदि कोई वल् + आदि सार्वधातुक विभक्ति परे हो ॥

उभयपद
ब्रू (बोलना to speak)
परस्मैपद
लट् (Present)

उत्तम पु०	ब्रवीमि३०	ब्रूव	ब्रूम
मध्यम पु०	ब्रवीषि-आत्थ	ब्रूथ आहथु	ब्रूथ
प्रथम पु०	ब्रवीति-आह	ब्रूत आहतु	ब्रुवन्ति३१आहु.

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
मध्यम पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम
मध्यम पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
प्रथम पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
मध्यम पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
प्रथम पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	वक्ष्यामि ३२	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः
मध्यम पु०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
प्रथम पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	ब्रुवे*	ब्रूवहे	ब्रूमहे
मध्यम पु०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
प्रथम पु०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै
मध्यम पु०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
प्रथम पु०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
मध्यम पु०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
प्रथम पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि
मध्यम पु०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
प्रथम पु०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	वक्ष्ये ३२	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

---

*अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥

३२—ब्रुवो वचिः ॥ आर्धधातुक विभक्तियों में ब्रू के स्थान में वच् हो जाता है ॥

मध्यम पु०	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
प्रथम पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते

जुहोत्यादिगण (THIRD CONJUGATION)

जुहोत्यादिगण के धातु के परे विभक्ति लगाने से पूर्व धातु में इन नियमों से द्वित्व (reduplication) और अन्य परिवर्तन होजाते हैं ॥

१४२—एकाचोद्वे प्रथमस्य ॥ धातु के पहिले स्वर व तद्भाव में पहिले व्यजन और उसके साथ के स्वर को द्वित्व होजाता है॥

(क) ह्रस्व ॥ अभ्यास (the first repeated part) में दीर्घ स्वर ह्रस्व होजाता है ॥

(ख) अभ्यासेचर्च ॥ अभ्यास के झशोंको जश् और खयों को चर् होजाते हैं, अर्थात् वर्ग के चौथे वर्ण को तीसरा और दूसरे को पहिला होजाता है ॥ भी=भी+भी=भिभी=बिभी ॥ दा=दा+दा=ददा ॥ धा=धा+धा=धधा=दधा ॥

उभयपद

दा

परस्मैपद

लट् (Present)

	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
उत्तम पु०	ददामि	दद्वः ३३	दद्मः
मध्यम पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ

३३—श्नाभ्यस्तयोरातः ॥ श्ना (विकरण) और द्वित्व किये हुए धातु के अन्तिम आ का लोप हो जाता है, यदि परे कोई अविकारक विभक्ति हो ॥

प्रथम पु०	ददाति	दत्तः*	ददति ३४

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ददानि	ददाव	ददाम
मध्यम पु०	देहि †	दत्तम्	दत्त
प्रथम पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म
मध्यम पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
प्रथम पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः ३५ ‡

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
मध्यम पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
प्रथम पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
मध्यम पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
प्रथम पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	ददे	दद्वहे	दद्महे

* श्नाभ्यस्तयोरातः, खरिच ॥

३४—जुहोत्यादिगण में धातु के परे अन्ति और अन्तु के न् का लोप हो जाता है ॥ † घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ ‡ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥

३५—उस्यपदान्तात् ॥ अपदान्त अ वा आ से परे यदि उस् हो तो अ वा आ का लोप हो जाता है ॥

मध्यम पु०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
प्रथम पु०	दत्ते	ददाते	ददते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	ददै	ददावहै	ददामहै
मध्यम पु०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
प्रथम पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
मध्यम पु०	अदत्था	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
प्रथम पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
मध्यम पु०	ददाथा	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
प्रथम पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	दास्थ	दास्यावहे	दास्यामहे
मध्यम पु०	दास्यसे	दास्येथ	दास्यध्वे
प्रथम पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते

स्वादिगण (FIFTH CONJUGATION)

१८८—स्वादिभ्य श्नु ॥ स्वादिगण के धातुओं के परे श्नु (नु) विकरण आता है ॥

परस्मैपद ।

शक (समर्थ होना, to be able)

लट् (present)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	शक्नोमि	शक्नुव	शक्नुम
मध्यम पु०	शक्नोषि	शक्नुथ	शक्नुथ

प्रथम पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति*

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति

आप् (पाना, to obtain)

लट् (Present)

उत्तम पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
मध्यम पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
प्रथम पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति

---

* अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥

मध्यम पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
प्रथम पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति ३७

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम
मध्यम पु०	शृणु ३८	शृणुतम्	शृणुत
प्रथम पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अशृणवम्	अशृणुव-अशृण्व	अशृणुम-अशृण्म
मध्यम पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
प्रथम पु	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्

विधि-लिङ् (potential mood)

उत्तम पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम
मध्यम पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
प्रथम पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
मध्यम पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
प्रथम पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति

रुधादिगण (SEVENTH CONJUGATION)

१४७–रुधादिभ्यः श्नम् ॥ रुधादिगण के धातु में अन्तिम वर्ण से पूर्व श्नम् (न) विकरण जोड़ा जाता है। और न के अ

३७–हु श्नुवोः सार्वधातुके ॥ हु धातु और स्वरान्त धातु के परे नु (विकरण) के उ को व् हो जाता है, यदि परे कोई स्वरादि अविकारक विभक्ति हो॥

३८–उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ विकरण के उ के परे हि का लोप हो जाता है, यदि नु से पूर्व कोई व्यञ्जन न हो ॥

का लोप होकर न् रह जाता है यदि परे कोई अपित्कारक विभक्ति हो (श्नसोरल्लोपः)॥ युज्+ति=युनज्+ति=युनग्+ति=युनक्ति (खरि च)। युज+त =युनज्+त ॥

युज (जोडना, to join)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः
मध्यम पु०	युनक्षि *	युङ्क्थः †	युङ्क्थ
प्रथम पु०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	युनजानि	युनजाव	युनजाम
मध्यम पु०	युङ्ग्धि ‡	युङ्क्तम्	युङ्क्त
प्रथम पु०	युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म
मध्यम पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
प्रथम पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्

विधि लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम
मध्यम पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
प्रथम पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः

---

* चो कुः, आदेशप्रत्यययोः ॥ † युन+थ =युनज्+थ (श्नसोरल्लोप)=युनक्+थ =युङ्क्थ (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)॥

‡ चो कुः, झलां जश् झशि ॥

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	योक्ष्यामि	योक्ष्यावः	योक्ष्यामः
मध्यम पु०	योक्ष्यसि	योक्ष्यथः	योक्ष्यथ
प्रथम पु०	योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति

आत्मनेपद

लट् (present)

उत्तम पु०	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे
मध्यम पु०	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
प्रथम पु०	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	युनजै	युनजावहै	युनजामहै
मध्यम पु०	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
प्रथम पु०	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि
मध्यम पु०	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
प्रथम पु०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि
मध्यम पु०	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
प्रथम पु०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे
मध्यम पु०	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
प्रथम पु०	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते

इसी प्रकार भुज् (शासन करना to rule (परस्मैपद), खाना to eat आत्मनेपद्) और भिद् (तोड़ना, to break) का उच्चारण भी होगा।

तनादिगण (EIGHTH CONJUGATION)

१४८—तनादि कृञ्भ्य उः ॥ तनादिगण के धातुओं के परे उ विकरण जोड़ा जाता है ॥

कृ (करना, to do)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	करोमि	कुर्वः ३९, ४०	कुर्मः
मध्यम पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
प्रथम पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	करवाणि	करवाव	करवाम
मध्यम पु०	कुरु*	कुरुतम्	कुरुत
प्रथम पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
मध्यम पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
प्रथम पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्

विधि-लिङ् (potential mood)

उत्तम पु०	कुर्याम् †	कुर्याव	कुर्याम
मध्यम पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
प्रथम पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः

३९—अत उत्सार्वधातुके ॥ कृ को कुर् हो जाता है, यदि परे कोई अविकारक विभक्ति हो।

४०—नित्यं करोतेः, ये च ॥ कृ धातु के उ (विकरण) का यहाँ लोप हो जाता है, यदि परे विभक्ति का य्, म् या व् हो।

* उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ † ये च ॥

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः
मध्यम पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
प्रथम पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति

आत्मनेपद

लट् (present)

उत्तम पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
मध्यम पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
प्रथम पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	करवै	करवावहै	करवामहै
मध्यम पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
प्रथम पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
मध्यम पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
प्रथम पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत

विधि—लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
मध्यम पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
प्रथम पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
मध्यम पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
प्रथम पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते

क्र्यादिगण (NINETH CONJUGATION)

१४२—क्र्यादिभ्यः श्ना ॥ क्र्यादिगण के धातुओं के परे श्ना (ना) विकरण आता है ॥

उभयपद

* ज्ञा (जा) (जानना, to know)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	जानामि	जानीव ४१	जानीम
मध्यम पु०	जानासि	जानीथ	जानीथ
प्रथम पु०	जानाति	जानीत	जानन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	जानानि	जानाव	जानाम
मध्यम पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
प्रथम पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
मध्यम पु०	आजाना	आजानीतम्	अजानीत
प्रथम पु०	आजानात्	आजानीताम्	आजानन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
मध्यम पु०	जानीया	जानीयातम्	जानीयात
प्रथम पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयु

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्याव	ज्ञास्याम
मध्यम पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यथ
प्रथम पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यत	ज्ञास्यन्ति

* ज्ञा और ग्रह् का केवल परस्मैपद में उदाहरण यहां दिया गया है॥

४१—ई हल्यघो ॥ ना (विकरण) को 'नी' होजाता है, यदि कोई हलादि अपित् सार्वधातुक विभक्ति परे हो॥

ग्रह (गृह्) (पकड़ना, to hold)

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
मध्यम पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
प्रथम पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
मध्यम पु०	गृहाण ४२	गृह्णीतम्	गृह्णीत
प्रथम पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
मध्यम पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
प्रथम पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
मध्यम पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
प्रथम पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः

लृट् (Simple future)

उत्तम पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः
मध्यम पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
प्रथम पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति

---

* श्नाभ्यस्तयोरातः ॥

४२—हलः श्नः शानज्झौ ॥ क्र्यादिगण के हलन्तधातुओं से परे ना (विकरण) को 'आन' होजाता है; और हि लोट्-मध्य० एक० का लोप होजाता है ॥

EXERCISE XI

यन्निकृष्टं कृत्य त्वमकरोस्तदधुनापि ते मित्राणां चित्तानि दुनोति ॥
युवामपराधमकुरुत मतो दण्डमर्हथ ॥
सत्वरं धावमानस्य ते गलितमिदं कङ्कणं, गृहाणैतत् ॥
रजन्यास्तुरीये यामे वटवो जाग्रति ॥
नृप कतमं सचिवेष्वमात्यपदे नियुञ्ज्यादित्यत्र लोकेषु प्रभूतो विवादो वर्तते ॥
आर्यो ददातु मे राजकुमारस्यानयनाभ्यनुज्ञाम् ॥

यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येनामुत्र सुखं वसेत् ॥
तस्माद्धर्मं सहायार्थं नित्यं सञ्चिनुयाच्छनैः ॥
छिनत्ति संशयं शास्त्रे विदुषां सूक्तिभिः सदा ॥
नोद्युङ्क्ते कोऽपि धर्माय सर्वाभिप्रेतहेतवे ॥
प्रविश्य चित्तं भूतानां वेत्सि तेषां बलाबलम् ॥
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥
ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्त,
वयमपि तदभावात् गालिदानेऽसमर्थाः ।
जगति ददति सर्वे विद्यते यत्तदेव,
नहि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ॥

बङ्गाल में लोक प्राय: ओदन खाते हैं (भुज्) ॥
वनवास के अनन्तर राम ने सुख से राज्य भोगा (भुज्) ॥
पुरुष पापों से प्रतिदिन अनेक कीड़े मारता है (हिंस्) ॥
जो सायंकाल ही सो जाते हैं (स्वप्) और प्रातः नहीं जागते (जागृ) वह रोगी रहते हैं ॥
इन शब्दों को वियुक्त करो (वि+युज्) और इनको मिलाओ (सम्+धा) ॥
पुरुष यदि उद्यम करे (उद्+

युज्) तो सब कुछ कर सकता है ॥

जो भूषण मूल्य लिये थे (ग्रह्) उनको किस मूल्य पर दोगे॥

व्याघ्र जिन जन्तुओं को पकड़ते हैं (ग्रह्) उनको पहिले चीरते हैं (दृ) फिर खाते हैं (अश्) ॥

स्वामी जिन नौकरों का तिरस्कार करते हैं (तिरस्+कृ) क्या वे नहीं जानते (ज्ञा) कि नौकर भी उनका कार्य खुशी से नहीं करते (कृ) ॥

पढ़ने में चित्त लगायो (अव+धा) ॥

स्वच्छ वस्त्र धारण करो (परि+धा) ॥

कर्णों को बन्द करलो (अपि+धा) ॥
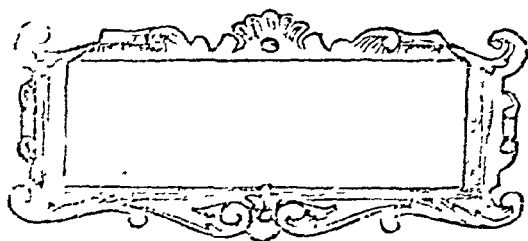
सप्तदशः पाठः ।

प्रेरणार्थक क्रिया (णिजन्त Causals)

१५०—जहा पर किसी मनुष्य या पदार्थ की प्रेरणा से कोई काम किसी से करवाया जाये वहा पर प्रेरणार्थक क्रिया या णिजन्त (Causal) का प्रयोग होता है ॥

प्रेरणार्थक धातु उभयपदी होते हैं ॥

१५१—प्रेरण (Causal) अर्थ में धातु से परे अय (णिच्) जोड़ा जाता है ॥

जिस रीति से चुरादिगण (10th Conjugation) के धातुओं के रूप बनाये जाते हैं, उसी तरह प्रेरणार्थक क्रिया के रूप भी बनाये जाते हैं ॥

भ्वादिगण	
भू (to be) भावयति-ते	पच् (to cook) पाचयति-ते
पत् (to fall) पातयति-ते	स्मृ (to remember) स्मारयति-ते
दा (to give)[43] दापयति-ते	वस् (to dwell) वासयति-ते
पा (to drink)[44] पाययति-ते	दृश् (to see) दर्शयति-ते
गम् (to go) गमयति-ते	ईक्ष् (to see) ईक्षयति-ते
पठ् (to read) पाठयति-ते	शङ्क् (to suspect) शङ्कयति-ते
स्था (to stand) स्थापयति-ते	कम्प् (to tremble) कम्पयति-ते

४३—अर्त्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ ॥ ऋ, ह्री, व्ली, री, क्नूय्, क्ष्माय्, और आकारान्त धातुओं के आगे प् जोड़ा जाता है, यदि परे अय् (णिच्) हो ॥

४४—शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् ॥ शो, छो, सा, ह्वे, व्ये, वे और पा (to drink) धातुओं के आगे य् जोड़ा जाता है, यदि परे अय (णिच्) हो ॥

जि (to conquer) ४५ जापयति–ते
रभ् (to begin) ४६ रम्भयति–ते
लभ् (to obtain) लम्भयति–ते
वृत् (to be) वर्तयति–ते
वृध् (to increase) वर्धयति–ते
बुध् (to know) बोधयति–ते
हृ (to take away) हारयति–ते
नी (to carry) नाययति–ते

दिवादिगण

नश् (to perish) नाशयति–ते
शुष् (to dry) शोषयति–ते
तुष् (to be pleased) तोषयति–ते
नृत् (to dance) नर्तयति–ते
युध् (to fight) योधयति–ते
जन् (to be produced) जनयति–ते

तुदादिगण

इष् (to desire) एषयति–ते
प्रच्छ् (to ask) प्रच्छयति–ते
सृज् (to create) सर्जयति–ते
स्पृश् (to touch) स्पर्शयति–ते
मृ (to die) मारयति–ते
मुच् (to abandon) मोचयति–ते

चुरादिगण

चुर् (to steal) चोरयति–ते
तड् (to beat) ताडयति–ते

अदादिगण

अद् (to eat) आदयति–ते
हन् (to kill) ४७ घातयति–ते
विद् (to know) वेदयति–ते
जागृ (to be awake) जागरयति–ते
स्वप् (to sleep) स्वापयति–ते
शी (to sleep) शाययति–ते
ब्रू (to speak) * वाचयति–ते

४५—क्रीङ्जीनांणौ ॥ क्री जि और इ(to study) के अन्तिम स्वर को आ होजाता है ॥ जि=जा + अय + ति=जापयति (अर्ति ह्री ब्ली री०) ॥

४६—रभेरशब्लिटोः,लभेश्च ॥ रभ् और लभ् की उपधा में न् जोड़ा जाता है, यदि परे अ (भ्वादि विक०) और लिट् से भिन्न कोई अजादि प्रत्यय हो ॥

४७—हनस्तोऽचिण्णलोः ॥ णिजन्त में हन् के को घ् हो जाता है ॥ हन् + अय + ति = हान् + अय + ति=हातयति=घातयति, (होहन्तेर्ञ्णिन्नेषु) ॥

* ब्रुवो वचिः ॥

जुहोत्यादिगण

दा (to give) दापयति-ते

स्वादिगण

शक् (to be able) शाकयति-ते

आप् (to get) आपयति-ते

श्रु (to hear) श्रावयति-ते

रुधादिगण

युज् (to join) योजयति-ते

भुज् (to eat, to rule) भोजयति-ते

भिद् (to break) भेदयति-ते

तनादिगण

कृ (to do) कारयति-ते

क्र्यादिगण

ज्ञा (to know) ज्ञापयति-ते

ग्रह् (to hold) ग्राहयति-ते

जो उसने सुना मुझे सब ही सुना दिया ॥

राम को घोड़े ने गिरा दिया उसे फिर ऊपर चढ़ादो ॥

यदि मैं इससे यह काम न करा दूं तो अपना नाम बदल दूंगा (परि+वृत्) ॥

गुरु शिष्य को प्रतिदिन प्रातः काल उठाता है और वेद पढ़ाता है ॥

पहिले सब पुरुषों को बिठादो [आस्], फिर व्याख्यान आरम्भ करादो ॥

बालक को गृह में भिजवादो कि माता उसे सुलादे ॥

———
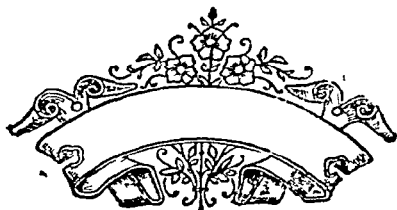
अष्टादशः पाठः ।

कृदन्त [VERBAL DERIVATIVES]

† शत्रन्त (Present active Participles)

१५३—धातुओं के शत्रन्त रूप बनाने के लिये तीन प्रत्यय हैं—१ अत् (शतृ), २ मान (शानच्) और ३ आन (कानच्) ॥ परस्मैपदी धातुओं के आगे अत् लगाया जाता है ॥

भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादिगण के आत्मनेपदी धातुओं के आगे मान और इनसे भिन्न गणों के धातुओं के आगे आन लगाया जाता है ॥

* जो परिवर्त्तन या विकार (change) धातु में सार्वधातुक विभक्तियों के पूर्व होते हैं, वे इन प्रत्ययों के पहिले भी होते हैं; प्रत्यय और धातुके मध्य में गण-विकरण (conjugational sign) जोड़ा जाता है ॥

धातु	P A P	धातु	P. A. P.
भू	भवत्	वस्	वसत्
पत्	पतत्	दृश्	पश्यत्
दा	यच्छत्	शिक्ष्	शिक्षमाण
पा	पिबत्	ईक्ष्	ईक्षमाण
गम्	गच्छत्	वन्द्	वन्दमान
पठ्	पठत्	वद्	वदत्

† जो अङ्ग (base) किसी धातु का लट् के प्रथम पुरुष बहुवचन में बनता है, उसी अङ्ग के परे यदि अत्, मान या आन जोड़ दें तो उस धातु का वह शत्रन्त रूप बन जाता है ॥

धातु	P. A. P.	धातु	P. A. P.
स्था	तिष्ठत्	पच्	पचत्
जि	जयत्	स्मृ	स्मरत्
वृध्	वर्धमान	बुध्	बोधत्-बोधमान
याच्	याचत्-याचमान	नी	नयत्-नयमान
हृ	हरत्-हरमाण	शङ्क्	शंकमान
कम्प्	कम्पमान	सह्	सहमान
शुभ्	शोभमान	सेव्	सेवमान
रभ्	रभमाण	लभ्	लभमान
नश्	नश्यत्	क्रुध्	क्रुध्यत्
तुष्	तुष्यत्	नृत्	नृत्यत्
स्पृह्	स्पृहयत्-स्पृहयमाण	अद्	अदत्
हन्	घ्नत्	विद्	विदत्
जागृ	जाग्रत्	स्वप्	स्वपत्
शी	शयान	ब्रू	ब्रुवत्-ब्रुवाण
दा	ददत्-ददान	युध्	युध्यमान
धा	दधत्-दधान		
जन्	जायमान	शक्	शक्नुवत्
विद्	विद्यमान	आप्	आप्नुवत्
इष्	इच्छत्	क्षिप्	क्षिपत्
श्रु	शृण्वत्	प्रच्छ्	पृच्छत्
सृज्	सृजत्	युज्	युञ्जत्-युञ्जान
स्पृश्	स्पृशत्	भुज्	भुञ्जत्-भुञ्जान
मृ	म्रियमाण	भिद्	भिन्दत्-भिन्दान
मुच्	मुञ्चत्-मुञ्चमान	सिच्	सिञ्चत्-सिञ्चमान

धातु	p A P	धातु	P A P
कृ	कुर्वत् कुर्वाण	चुर्	चोरयत् चोरयमाण
तड्	ताडयत् ताडयमान	भूष्	भूषयत् भूषयमाण
क्री	क्रीणत् क्रीणान	ज्ञा	जानत् जानान
ग्रह्	गृह्णत् गृह्णान		

क्तान्त (Past Passive Participles)

क्तान्तरूप धातु के परे त (क्त) जोड़ कर बनाया जाता है ॥

(क) क्त के पूर्व अनिट् धातुओं में गुण या वृद्धि नहीं होते ॥

(ख) सेट्, अनिट् और वेट् धातुओं के परे क्रम से इ आता है, नहीं आता और विकल्प से आता है ॥

पठ्	पठित	पठितवत्	पठित्वा
वद्	उदित	उदितवत्	उदित्वा
नम्	नत	नतवत्	नत्वा
स्था	स्थित	स्थितवत्	स्थित्वा
पच्	पक्व[50]	पक्ववत्	पक्त्वा
जि	जित	जितवत्	जित्वा
स्मृ	स्मृत	स्मृतवत्	स्मृत्वा
दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्ट्वा
ईक्ष्	ईक्षित	ईक्षितवत्	ईक्षित्वा
वन्द्	वन्दित	वन्दितवत्	वन्दित्वा
कम्प्	कम्पित	कम्पितवत्	कम्पित्वा
शुभ्	(शो) शोभित	(शो) शुभितवत्	(शो) शुभित्वा
लभ्	लब्ध	लब्धवत्	लब्ध्वा
वृध्	वृद्ध	वृद्धवत्	वृद्ध्वा
बुध्	बुद्ध	बुद्धवत्	बुद्ध्वा
नी	नीत	नीतवत्	नीत्वा
हृ	हृत	हृतवत्	हृत्वा
नश्	नष्ट	नष्टवत्	नष्ट्वा-नाशित्वा
क्रुध्	क्रुद्ध	क्रुद्धवत्	क्रुद्ध्वा
तुष्	तुष्ट	तुष्टवत्	तुष्ट्वा
अस्	अस्त	अस्तवत्	अस्त्वा-असित्वा
नृत्	नृत्त	नृत्तवत्	नर्तित्वा
युध्	युद्ध	युद्धवत्	युद्ध्वा
जन्	जात	जातवत्	जनित्वा

५०—पचोवः॥ पच् से परे त वा तवत् के त को व होजाता है॥

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
विद् to be	विन्न ५१	विन्नवत्	वित्त्वा
इष्	इष्ट	इष्टवत्	इष्ट्वा
प्रच्छ्	पृष्ट	पृष्टवत्	पृष्ट्वा
सृज्	सृष्ट	सृष्टवत्	सृष्ट्वा
स्पृश्	स्पृष्ट	स्पृष्टवत्	स्पृष्ट्वा
मृ	मृत	मृतवत्	मृत्वा
मुच्	मुक्त	मुक्तवत्	मुक्त्वा
सिच्	सिक्त	सिक्तवत्	सिक्त्वा
चुर्	चोरित	चोरितवत्	चोरयित्वा*
अद्	जग्ध५२	जग्धवत्	जग्ध्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा
विद् to know	विदित	विदितवत्	विदित्वा
जागृ	जागरित	जागरितवत्	जागरित्वा
स्वप्	सुप्त	सुप्तवत्	सुप्त्वा
शी	शयित	शयितवत्	शयित्वा
ब्रू	उक्त	उक्तवत्	उक्त्वा
दा	दत्त	दत्तवत्	दत्त्वा
धा	हित५३	हितवत्	हित्वा

५१—रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥ र् वा द् से परे क्त वा क्तवत् के त् और धातु के अन्तिम द् को न् होजाता है ॥

* चुरादिगण के धातु और क्त्वा प्रत्यय के मध्य में अय आ जाता है ॥

५२—अदोजग्धिर्ल्यप्ति किति ॥ अद् के स्थान में जग्ध् हो जाता है, यदि परे त, तवत्, क्ति वा य (क्त्वा) हो ॥

५३—दधातेर्हिः ॥ धा के स्थान में हि हो जाता है, यदि परे त, तवत् वा क्त्वा हो ॥

शक्	शक्त	शक्तवत्	शक्त्वा
आप्	आप्त	आप्तवत्.	आप्त्वा
श्रु	श्रुत	श्रुतवत्	श्रुत्वा
युज्	युक्त	युक्तवत्	युक्त्वा
भुज्	भुक्त	भुक्तवत्	भुक्त्वा
भिद्	भिन्न*	भिन्नवत्	भित्त्वा
कृ	कृत	कृतवत्	कृत्वा
क्री	क्रीत	क्रीतवत्	क्रीत्वा
ज्ञा	ज्ञात	ज्ञातवत्	ज्ञात्वा
ग्रह्	गृहीत†	गृहीतवत्	गृहीत्वा

१५८—धातु के पूर्व यदि कोई उपसर्ग हों और अन्त में ह्रस्व स्वर हो तो त्वा को त्य हो जाता है ॥

यथा—संश्रुत्य, विस्मृत्य, विजित्य ॥

(ख) धातु के पूर्व यदि कोई उपसर्ग हो और अन्त में दीर्घ स्वर वा कोई व्यञ्जन हो तो त्वा को य होजाता है ॥

यथा—संभूय, प्रणम्य, विगृह्य ॥

‡ तुमुन्नन्त (INFINITIVE OF PURPOSE)

भू	भवितुम्	सह्	सहितुम्-सोढुम्

* रदाभ्यां निष्ठातोनः पूर्वस्य च दः ॥ † ग्रहिज्याव्यधि० ॥

‡ धातु के आगे तुम् (तुमुन्) लगाकर उसका तुमुन्नन्त रूप बनाया जाता है ॥ जिस धातु का जो रूप लुट् (First future) के प्रथम पुरुष एकवचन में बनता है, यदि उसके ता की जगह तुम् करदें (वा अन्तिम आ की जगह उम् कर दें) तो वह उस धातु का तुमुन् [तुम्]—अन्त रूप बन जायगा

गम्—गन्ता [लु० प्र० ए०] गन्तुम्, भू—भविता [लु०प्र ए०] भवितुम्, दृश्—द्रष्टा [लु० प्र० ए०] द्रष्टुम् ॥

पत्	पतितुम्	दा	दातुम्
शुभ्	शोभितुम्	पा	पातुम्
गम्	गन्तुम्	पठ्	पठितुम्
रभ्	रब्धुम्	वद्	वदितुम्
लभ्	लब्धुम्	नम्	नन्तुम्
वृध्	वर्धितुम्	स्था	स्थातुम्
बुध्	बोद्धुम्	पच्	पक्तुम्
नी	नेतुम्	जि	जेतुम्
हृ	हर्तुम्	नृत्	नर्तितुम्
स्मृ	स्मर्तुम्	नश्	नष्टुम् नशितुम्
क्रुध्	क्रोद्धुम्	वस्	वस्तुम्
तुष्	तोष्टुम्	दृश्	द्रष्टुम्
ईक्ष्	ईक्षितुम्	वन्द्	वन्दितुम्
यत्	यतितुम्	युध्	योद्धुम्
शङ्क्	शङ्कितुम्	जन्	जनितुम्
कम्प्	कम्पितुम्	विद् to be	वेत्तुम्
इष्	एषितुम्-एष्टुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्
स्वप्	स्वप्तुम्	प्रच्छ्	प्रष्टुम्
शी	शयितुम्	सृज्	स्रष्टुम्
ब्रू	वक्तुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
मृ	मर्तुम्		
युध्	योद्धुम्	घ्रा	घ्रातुम्
सिच्	सेक्तुम्	शक्	शक्तुम्
चुर्	चोरयितुम्	आप्	आप्तुम्
भक्ष्	भक्षयितुम्	श्रु	श्रोतुम्

युज्	योक्तुम्	भुज्	भोक्तुम्
भद्	भत्तुम्	भिद्	भेत्तुम्
कृ	कर्तुम्	हन्	हन्तुम्
विद् to know	वेत्तुम्	क्री	क्रेतुम्
जागृ	जागरितुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
ग्रह्		ग्रहीतुम्	

विधि-कृदन्त (Potential passive participles)

१५५-(क) विधि कृदन्त रूप बनाने के लिये धातु के आगे तव्य, अनीय और य (यत्, ण्यत्) में से कोई प्रत्यय लगाया जा सका है॥

(ख) तव्य और अनीय के पहिले धातु के अन्तिम ह्रस्व, वा दीर्घ स्वर, वा उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण होजाता है॥ यथा चि—चेतव्यम्, जि—जेतव्यम्, नी—नयनीयम्, बुध्—बोद्धव्यम्॥

(ग) तव्य के पूर्व सेट् धातुओं के अन्त में इ जोड़ा जाता है॥ यथा—वेदितव्यम्॥

धातु	तव्य	अनीय
भू	भवितव्य	भवनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय
दा	दातव्य	दानीय
पा	पातव्य	पानीय
गम्	गन्तव्य	गमनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय
स्था	स्थातव्य	स्थानीय
पच्	पक्तव्य	पचनीय
जि	जेतव्य	जयनीय
स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय

सह्	सोढव्य	सहनीय
रभ्	रब्धव्य	रभणीय
लभ्	लब्धव्य	लभनीय
नी	नेतव्य	नयनीय
हृ	हर्तव्य	हरणीय
युध्	योद्धव्य	योधनीय
विद्	वेदितव्य	वेदनीय
प्रच्छ्	प्रष्टव्य	प्रच्छनीय
सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय
स्पृश्	स्प्रष्टव्य	स्पर्शनीय
मृ	मर्तव्य	मरणीय
चुर्	चोरयितव्य	चोरणीय
अद्	अत्तव्य	अदनीय
हन्	हन्तव्य	हननीय
स्वप्	स्वपितव्य	स्वपनीय
शी	शेतव्य	शयनीय
ब्रू	वक्तव्य	वचनीय
आप्	आप्तव्य	आपनीय
श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय
भिद्	भेत्तव्य	भेदनीय
कृ	कर्तव्य	करणीय
क्री	क्रेतव्य	क्रयणीय
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञानीय
ग्रह्	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय

१५६—अचोयत् ॥ अजन्त धातुओं से परे य (यत्) आता है ॥

१५७—ऋ हलोर्ण्यत् ॥ ऋकारान्त वा हलन्त धातुओं से परे य (ण्यत्) आता है; य (ण्यत्) के पूर्व धातु में अन्तिम स्वर वा उपधा—अ को वृद्धि होती है ॥

दा—देय ५९	(यत्)	धृ—धार्य	(ण्यत्)
पा—पेय	,,	स्मृ स्मार्य	,,
स्था—स्थेय	,,	पच्—पाक्य ६०	,,
नी—नेय	,,	भुज्—भोज्य	,,
कृ—कार्य्य	(ण्यत्)	युज्—योग्य	,,

EXERCISE XIII

(क) व्यर्थं मे जन्म न मया कृतं कर्त्तव्यं, न भुक्तं भोक्तव्यं, न दृष्टं द्रष्टव्यं, न श्रुतं श्रोतव्यम् ॥

गतं न शोचनीयम् ॥

पाठानधीयानाः पारितोषिकाणि लप्स्यन्ते ॥

शयाना अधीयाना अक्ष्णोरोगं भुञ्जानाश्च जठराग्नेर्मन्दतामधिगच्छन्ति ॥

स दुष्टाशयो बकः क्रमेण तान् पृष्ठमारोप्य जलाशयस्य नातिदूरे शिलां समासाद्य जलचराणां मिथ्या वार्त्तासंदेशैः मनांसि रञ्जयन्नाहारवृत्तिमकरोत् ॥

नगरं प्रगतस्य ते गतिं ज्ञास्यन्नहं गतः कलिङ्गान् प्रति ॥

भवत आगमनेनास्माकं सर्वमेव कृत्यं निष्पन्नम् ॥

अचिन्तनीयो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः ॥

गन्तव्यं पुनरागमनाय ॥

भोगानामुपभोगेन सन्तोषस्य न संभवो यथा संयमेन ॥

उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्य भूतिमिच्छता ॥
परिहार्योऽसतां सङ्ग सतां सङ्गो हि भेषजम् ॥
कर्त्तव्य सचयो नित्य कर्त्तव्यो नातिसञ्चय ॥
कूजन्त रामरामेति मधुर मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
यातयितुमेव नीच परकार्यं वेत्ति न प्रसाधयितुम् ।
पातयितुमेव शक्तिर्नाखोरुद्धर्तुमन्नपिटम् ॥

(ख)) जब उस ने हरि को जाने वाला समझा तो उसे कहा पहिले तुझे घर के कार्य समाप्त कर लेने चाहिये, पीछे जाना चाहिये ॥
जब उस ने जले हुये गृह को देखा तो चुप रह गया ॥
उस ने भोजन तो खा लिया है अब वस्त्र धारण करने चाहिये ॥
जो पुरुष चलते चलते कुछ न कुछ खाते रहते हैं उनकी अन्न पचने की शक्ति मन्द हो जाती है ॥
यह गीत गाने के योग्य है, आप यहां ही ठहरें और उसे मधुर स्वर से गायें॥
प्रात काल होते उस बालक ने घर जाकर, पिता के पास बैठ कर मधुर २ बातें कर, पुन लौट अपने अन्य कार्य्यों को आरम्भ किया॥

नवदशः पाठः ।

प्रयोगाः (VOICES)

क्रिया के तीन प्रयोग होते हैं। (१) कर्तृ वाच्य, (२) कर्म वाच्य (३) भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active voice)

धातुओं के जो रूप भ्वादि आदि दश गणों में पीछे आचुके हैं वे सवही कर्तृवाच्य क्रियायें हैं॥

वाक्य में कर्तृवाक्य (active voice) क्रिया का कर्त्ता (subject) प्रथमा (nominative) में और कर्म (object) द्वितीया (accusitave) में प्रयुक्त होता है॥

क्रिया के वे ही पुरुष (person) और वचन (number) होते हैं जो कर्त्ता के होते हैं॥

यथा—"रामः भोजनम् अत्ति" इस वाक्य में 'रामः' कर्त्ता का पुरुष प्रथम और वचन एक है, इसलिये क्रिया का भी पुरुष प्रथम और वचन एक है॥

उत्तम पु० अहं ग्रन्थं पठामि, आवां धनं प्राप्नुयाव, वयं वृक्षमच्छिन्द्म

मध्यम पु० आचारं प्रतिपद्यस्व, युवां चिरंजीवतम्, यूयं वने व्याघ्रात् अत्रस्यत

उत्त० पु० रामः गृहं गच्छति, बालकौ पाठशालां गच्छतः, कन्याः गीतं शिक्षन्ते

कर्मवाच्य (Passive voice)

कर्मवाच्य में क्रिया के रूप सार्वधातुक में इस प्रकार बनते हैं॥

१५८-भावकर्मणोः॥ कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के आगे केवल आत्मनेपद की विभक्तियें प्रयुक्त होती हैं (धातु यद्यपि परस्मैपदी वा उभयपदी हो)॥

१५९—सार्वधातुके यक् ॥ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक विभक्ति और धातु के मध्य में य आ जाता है (और धातु का उच्चारण दिवादिगण के आत्मनेपदी धातुओं के समान होता है) ॥ यथा *गम्+य+ते=गम्यते, अगम्यत, गम्यताम्, गम्येत, ॥

कुछ धातुओं में विशेष परिवर्तन होते हैं, यथा—

(१) ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम ऋ को रि होजाता है॥यथा—
क्रियते, अक्रियत, क्रियताम्, क्रियेत ॥

(२) ऋकारान्त धातुओं के आदि में यदि संयुक्त वर्ण हो तो ऋ को गुण होता है॥ यथा—स्मर्यते, अस्मर्यत स्मर्यताम्, स्मर्येत ॥

(३) (क) वच्, वप् वह्, वस्, वद्, स्वप्, धातुओं के व को उ,
(ख) यज और व्यध् के य को इ और
(ग) प्रच्छ् और ग्रह् के र को ऋ हो जाता है ॥
यथा—उह्यते, उच्यते, सुप्यते ॥

(४) धातु के अन्त में ह्रस्व इ या उ दीर्घ हो जाता है ॥ यथा—जीयते, श्रूयते ॥

(५) जिन धातुओं की उपधा में अनुनासिक हो उस का लोप हो जाता है ॥ यथा—बन्ध् बध्यते ॥

(६) आकारान्त धातुओं के अन्तिम आ को ई हो जाता है ॥ यथा—दीयते, अदीयत दीयताम्, दीयेत ॥

---

*गण विकरणों के पूर्व जो धातु में विकार होते हैं वे कर्मवाच्य वा भाव वाच्य में नहीं होते, अर्थात् गम् वा पा के स्थान में गच्छ् वा पिब् आदि नहीं होते ॥

(१) रिङ्शयग्लिङ्क्षु ॥ (३) वचिस्वपियजादीनां किति ॥
(२) गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥ (४) अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥
(६) घुमास्थागापाजहातिसां हलि ॥

(७) ब्रू के स्थान में वच् और अस् (to be) के स्थान में भू हो जाता है यथा—ब्रू—उच्यते, अस्—भूयते ॥

आर्धधातुक

आर्धधातुक विभक्तियों में धातु में कोई परिवर्तन नहीं होता, केवल धातु के आगे आत्मनेपद विभक्तियां आती हैं ॥ यथा—दास्ये, ॥

१६०—कर्मवाच्य क्रिया के साथ तृतीयान्त कर्ता (subject) और प्रथमान्त कर्म (object) आता है, और क्रिया के वेही पुरुष और वचन होते हैं जो प्रथमान्त कर्म के होते हैं ॥ (यदि किसी कर्तृवाच्य (active) वाक्य को कर्मवाच्य में बदलना हो तो प्रथमान्त कर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देना चाहिये ॥) यथा—पुरुषः स्तेनं प्रहरति (active) = पुरुषेण स्तेनः प्रह्रियते ॥

कृदन्त क्रिया

१६१–(क) क्तवत्वन्त (Past active participle) जब क्रिया की तरह प्रयुक्त हो तो कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है ॥ क्रिया के लिङ्ग, विभक्ति और वचन वहि होते हं जो कर्ता के हों ॥ यथा—छात्रः पाठं पठितवान्, सा स्त्रीगृहं गतवती ॥

(ख) क्तान्त (Past Passive Participle) जब क्रिया की तरह प्रयुक्त हो तो कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है । क्रिया के लिङ्ग विभक्ति और वचन वेही होते हैं जो प्रथमान्त कर्म के हों ॥

यथा–रामेण अन्नं भुक्तम्, रामेणओदनः भुक्तः, मया वचन मुक्तम् ॥

(ग) यदि क्तवत्वन्त (P.A.P.) कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य (Passive) में बदलना हो तो उसका क्तान्त (P.A. P.) में

---

(७) ब्रुवो वचिः, अस्तेर्भूः ॥

परिवर्तन होगा॥ यथा–अहमुत्सवं दृष्टवान्=मया उत्सव दृष्ट ॥ इसी प्रकार क्तान्त क्तवत्वन्त में बदलता है ॥ यथा—मया जल पीतम्=अह जल पीतवान् ॥

भाव वाच्य (Impersonal voice)

१६२—भाववाच्य किया सदा अकर्मक धातुओं से ही बनाई जाती है ॥ क्रिया में वेही परिवर्तन आदि होते हैं जो कर्म वाच्य में ॥

यथा–स्थीयते भूयते, शीयते त्तीयते ॥

भाववाच्य क्रिया सदा प्रथम पुरुष और एक वचन में ही प्रयुक्त होती है ॥ यथा अह तिष्ठामि=मया स्थीयते ॥ तौ तिष्ठत =ताभ्या स्थीयते ॥ यूय तिष्ठथ = युष्माभि स्थीयते ॥

EXERCISE XIV

(क) इनको कर्तृवाच्य म बदलो—

पदहि सर्वत्र गुणैर्निधीयते॥

कुमार तथा प्रयतेथा यथा नोपालभ्यसे मित्रै, नाक्षिप्यसे विपर्यैर्न विकृष्यसे

रागेण नापह्रियसे सुखेन ॥

कृत मया कर्म ॥

वत्स, सह्यितामस्त्राणि ॥

त्यक्त मया दुष्कृतम् ॥

यथामिष जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि ।
आकाशे पक्षिभिश्चैव तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥

स एव प्रच्युत स्थानात् शुनापि परिभूयते ॥

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै ॥

(ख) इन को कर्मवाच्य या भाववाच्य में बदलो ॥

यदि त्वामीदृशमैश्चार्यो राम भद्रो पश्येत् तदास्य हृदय स्नेहेनाभिष्यन्देत् ॥

स दरिद्रेभ्यो धन दत्तवान् ॥

स मा प्रश्नमेक पृष्टवान् ॥

अयि तत किं विलम्बसे।

त्वरित त प्रवेशय ॥

कथारम्भकाले राजपुत्रा उक्तवन्त इदानीं सुहृद्भेद श्रोतुमिच्छाम